

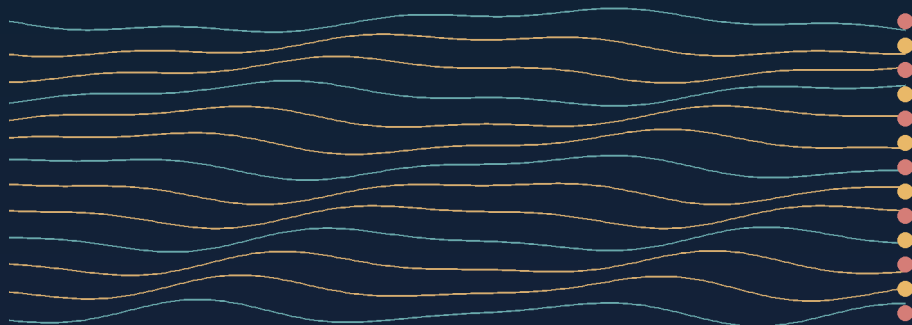
विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड २४

अकुलाइत सुर

किशोर गजल आ कविता-गीतक
समग्र साहित्यिक समीक्षा



मूल साहित्यकार : गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक आ समीक्षक : आशीष अनचिन्हार

VIDEHA | ISSN 2229-547X | 2026

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड २४

अकुलाइत सुर

किशोर गजल आ कविता-गीतक विस्तृत समालोचना

मूल साहित्यकार : गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक आ समीक्षक : आशीष अनचिन्हार

विदेह • २०२६

प्रकाशन-विवरण

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय — खण्ड २४

मूल साहित्यकार : गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक आ समीक्षक : आशीष अनचिन्हार

© गजेन्द्र ठाकुर / प्रीति ठाकुर, २०२६। सर्वाधिकार सुरक्षित।

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका; ISSN 2229-547X

मुद्रण-आकार : ६ × ९ इंच; भाषा : मैथिली।

www.videha.co.in · videha-ejournal.github.io/videha/

मूल पाठ : अकुलाइत सुर; पहिल खण्डमे १३३ किशोर गजल आ दोसर खण्डमे १३३ कविता-गीत।

सम्पादकीय प्रस्तावना

‘अकुलाइत सुर’क पहिल खण्ड बाल-कल्पना, विद्यालय, मीतता, परीक्षा, जालजगत आ आत्मनिर्णयक क्रमिक नागरिक-बोध रचैत अछि। दोसर खण्ड गीत, कथात्मक पद्य, हास्य, सामाजिक व्यंग्य, लोकस्मृति आ श्रम-संस्कृतिक अधिक विषम आ व्यापक क्षेत्र खोलैत अछि। दुनू खण्डक मूल पाठ भिन्न विधागत कसौटी चाहैत अछि; एकटा गजलक बहर-काफिया-रदीफक परीक्षण आ एकटा कथा-गीतक दृश्य-तालक परीक्षण एके नहि होइत।

पहिल खण्डक १३३ गजल ‘दीवान-ए-विदेह’क पहिल खण्डक गजल ४५९-५९१ सँ मूल शीर्षक, छन्द-घोषणा आ काव्य-पाँतिक स्तरपर समान अछि। ओही साझा रचनाक पूर्व साहित्यिक समीक्षा एहि पोथीमे सुरक्षित राखल गेल अछि। दोसर खण्डक प्रत्येक गीतक समीक्षा मूल संयुक्त पाण्डुलिपि पढ़ि अलग तैयार कएल गेल अछि।

ई अध्ययनमे प्रशंसा संग सीमा सेहो दर्ज अछि। एकर आलोचनात्मक कसौटी अछि—काव्य-दृश्यक टोसपन, अनुभव आ उपदेशक अनुपात, ध्वनि आ कथ्यक सम्बन्ध, भाषा-तलय, पुनरावृत्ति, बाल-किशोर दृष्टि, सामाजिक प्रासङ्गिकता, ऐतिहासिक आ वैज्ञानिक दावाक प्रमाण-सीमा। कविता अपन साहित्यिक सत्य रचि सकैत अछि; ताहिसँ एखनही ऐतिहासिक अथवा वैज्ञानिक तथ्य स्वतः सिद्ध नहि होइत।

अनुक्रमणिका

सम्पादकीय प्रस्तावना • पाठ-साम्य • किशोर गजल १-१३३ • कविता-गीत १-१३३
• समेकित साहित्यिक मूल्याङ्कन • ग्रन्थाधार

किशोर गजल : रचनावार अनुक्रम

001 बाबी.....	9	002 चान मामा.....	9
003 सात रंग.....	10	004 दादीक कथा.....	11
005 तरेगन गनी.....	11	006 बाटक खेल.....	12
007 चिडैक गीत.....	12	008 हँसीक आँगन.....	13
009 कागजक नाव.....	13	010 दादीक चान.....	14
011 पतंगक पाँखि.....	14	012 मेहक खेल.....	15
013 निन्नक कथा.....	15	014 अपन सपना.....	16
015 खेलक मैदान.....	17	016 पोथीक पाँखि.....	17
017 परीक्षाक बिहान.....	18	018 मीतक संग.....	18
019 पर्दासँ बाहर.....	19	020 अपन राह.....	19
021 तुलना नहि.....	20	022 जालजगतसँ बाहर.....	20
023 विषय अपन.....	21	024 लाइकसँ बाहर.....	21
025 बात फरिछाउ.....	22	026 फेर प्रयास.....	22
027 अपन रूप.....	23	028 अपन बात.....	23
029 अपन गति.....	24	030 ना कहू.....	24
031 निन्न बचाउ.....	25	032 समयक हिस्सा.....	25
033 बाट चुनैत.....	26	034 ना कहू.....	26
035 अपन गति.....	27	036 ना कहू.....	27
037 निन्नक समय.....	28	038 प्रश्न पूछू.....	28
039 मीत चुनू.....	29	040 हारक बाद.....	29
041 परीक्षाक बाद.....	30	042 अपन विषय.....	30
043 अपन निर्णय.....	31	044 अपन ताल.....	32
045 तुलना छोड़ू.....	32	046 भरोसा.....	33
047 भूलसँ सीखू.....	33	048 कने आराम.....	34
049 सोझाँ बाजू.....	34	050 अपन सुर.....	35

051 पर्दासँ परे.....	35	052 मीतसँ बात.....	36
053 ध्यानक डोर.....	36	054 मदद माँगू.....	37
055 भविष्यक बाट.....	37	056 निर्णय.....	38
057 एक परिणाम.....	38	058 स्क्रीनक बाहर.....	39
059 पहिल कमाइ.....	39	060 प्रश्नक साहस.....	40
061 टीमक खेल.....	40	062 पहिल कमाइ.....	41
063 प्रश्नक साहस.....	41	064 टीमक खेल.....	42
065 कौशल.....	42	066 खराब दिन.....	43
067 टोली.....	43	068 निर्णयक समय.....	44
069 पहिल खर्च.....	44	070 प्रश्न करू.....	45
071 समाचार.....	45	072 पहिल यात्रा.....	46
073 पहिल भाषण.....	46	074 पहिल असफलता.....	47
075 समूहक दबाव.....	47	076 डिजिटल विराम.....	48
077 समय बाँटू.....	48	078 पहिल जिम्मेदारी.....	49
079 साँच जाँचू.....	49	080 अपन आवाज.....	50
081 परीक्षा बाद.....	50	082 मीतक सीमा.....	51
083 अपन लय.....	51	084 मीतक पहिचान.....	52
085 डरक पार.....	52	086 आरम्भ.....	53
087 रुचिक बाट.....	53	088 साँचक जाँच.....	54
089 नब मीत.....	54	090 भूल स्वीकार.....	55
091 एखन करू.....	55	092 प्रश्न पुछू.....	56
093 काज बाँटू.....	56	094 अपन गति.....	57
095 नब हुनर.....	57	096 बात जाँचू.....	58
097 लिखि कऽ बुझू.....	58	098 एक काज.....	59
099 रिसक बेर.....	59	100 अपन माप.....	60
101 मीत चुनू.....	60	102 कने-कने सीखू.....	61
103 अपन स्वर.....	61	104 भूलसँ सीखू.....	62
105 बेर बाँटू.....	62	106 साँच लिखू.....	63
107 सुनि कऽ बाजू.....	64	108 कौड़ी बचाउ.....	65
109 गाछ रोपू.....	65	110 प्रश्न लिखू.....	66
111 मीतक मान.....	67	112 सपन सँ काज.....	67
113 बेर बाँटू.....	68	114 पहिने सुनू.....	69

115 हुनर निखारू.....	69	116 सीमा राखू.....	70
117 पढ़ि बुझू.....	71	118 बाट चुनू.....	71
119 निज बात.....	72	120 प्रश्नक साहस.....	73
121 दिनक क्रम.....	73	122 दबावमे निर्णय.....	74
123 मीतक गोपन बात.....	75	124 अपूर्णतासँ सीख.....	75
125 अपन सीमा.....	76	126 प्रमाण देखू.....	77
127 धीरे बढ़ू.....	77	128 थाकल मोन.....	78
129 संग काज.....	79	130 सहायता माँगू.....	79
131 अपन सीमा राखू.....	80	132 काजक क्रम.....	81
133 साँच जाँचू.....	81		

कविता-गीत : रचनावार अनुक्रम

001 ट्रेनक गाड़ी.....	83	002 के छथि.....	84
003 राजा श्री अनुरन्वज सिंह.....	85	004 सूतल.....	86
005 अखण्ड भारत.....	87	006 मोनक जड़िमे.....	88
007 पुनः स्मृति.....	89	008 कलम गाछी.....	90
009 हाथीक मुँहमे लागल पाइप.....	91	010 बानर राजा.....	92
011 चिड़ियाखाना.....	93	012 जमबोनी.....	94
013 बौआ ठेहुनिया मारि.....	95	014 ट्रिंग-ट्रिंग-ट्रिंग.....	96
015 भोरक बसात.....	97	016 छाहक करतब.....	98
017 सपन.....	99	018 कोइरीक कूकू.....	100
019 शितलपाटी.....	101	020 मकड़ीक जाल.....	102
021 वायुगोलक.....	103	022 हाथीक सूप सन कान.....	104
023 छुट्टी.....	105	024 बौआ गेल सुनि.....	106
025 मिथिला.....	107	026 बादुर सोंस.....	108
027 की? किए? कोना? के?.....	109	028 फेर आएल जाइ.....	110
029 अंध विश्वास.....	111	030 अभ्यास.....	112
031 आँखिक चश्मा.....	113	032 तीने टा अछि ऋतु.....	114
033 दरिद्र.....	115	034 रौह नहि नैन.....	116
035 जूताक आविष्कार.....	117	036 बूढ़ वर.....	118
037 रिपेयर.....	119	038 नोकर.....	120

039 क्लासमे अबाज.....	121	040 एस.एम.एस.....	122
041 टी.टी.....	123	042 खगता.....	124
043 कख सँ दर्शन.....	125	044 चोरकँ सिखाबह.....	126
045 नरक निवारण चतुर्दशी.....	127	046 नौकरी.....	128
047 मरकरी डिलाइट.....	129	048 दीयाबाती.....	130
049 फ्रैक्चर.....	131	050 बापकँ नोशि नहि भेटलन्हि.....	132
051 देहेज.....	133	052 बेचैन नहि निचैन रहू.....	134
053 थल-थल.....	135	054 क्रिकेट-फील्डिंग.....	136
055 मैट्रिक प्लक.....	137	056 काँकड़.....	138
057 कैप्टन.....	139	058 दूध.....	140
059 अटेंडेंस.....	141	060 शो-फटक्का.....	142
061 भारमे माटि.....	143	062 कंजूस.....	144
063 पाइ.....	145	064 असत्य.....	146
065 समुद्री.....	147	066 गाम.....	148
067 लोली.....	149	068 तकलाहा दिन.....	150
069 बिकौआ.....	151	070 गहरिक भात.....	152
071 एकटा आर कोपर.....	153	072 महीस पर वी.आइ.पी.....	154
073 गप्प-सरक्का.....	155	074 फलनाक बेटा.....	156
075 ट्रांसफर.....	157	076 मजूरी नहि माँगह.....	158
077 दोषी.....	159	078 लंदनक खिस्सा.....	160
079 प्रथम जनवरी.....	161	080 ऑफिसमे भरि राति बन्द.....	162
081 नानीक पत्र.....	163	082 केवाड बन्द.....	164
083 जेठांश.....	165	084 सादा आकि रंगीन.....	166
085 जोंकही पोखरिमे भरि राति.....	167	086 गैस सिलिण्डरक चोरि.....	168
087 फैक्स.....	169	088 दीया-बाती.....	170
089 इटालियन सैलून.....	171	090 शव नहि उठत.....	172
091 अतिचार.....	173	092 रबड़ खाऊ.....	174
093 बाजा अहाँ बजाऊ.....	175	094 पिण्डश्याम.....	176
095 पाँच पाइक लालछड़ी.....	177	096 चोरुक्का विवाह.....	178
097 भ्रातृद्वितीया.....	179	098 नव-घरारी.....	180
099 रिक्त.....	181	100 प्रवासी.....	182
101 वेद.....	183	102 चोरि.....	184

103 होली.....	185	104 बुद्ध.....	186
105 कोठिया पछ्वाइ टोल.....	187	106 बुच्ची-बाउ.....	188
107 आकक दूध.....	189	108 केसर श्वेत हरित त्रिवर्णिक.....	190
109 बेसी छुट्टी कम इसकूल.....	191	110 कोनो सजाए नै.....	192
111 बरखा भीजी.....	193	112 बरखा गीत.....	194
113 भरि दिन खेली-धूपी.....	195	114 लवनचूश चूसी भरि दिन.....	196
115 जे मोन भावै से करब.....	197	116 सभ दिन जनमदिन मनाबी.....	198
117 बानर.....	199	118 दोकानसँ चिप्स मँगनीमे आनी..	200
119 खूब खेलाउ कमप्यूटर खेल.....	201	120 नीक चित्र बनाउ छाप्पू.....	202
121 आउ खेलाउ कनियाँ पुतरा.....	203	122 बरफ खाउ जाइमे.....	204
123 रातिमे अबेर धरि जागू भोर उठू देरीसँ.....	205	124 सुरुज जेकाँ बरहम घूमै छथि.....	206
125 सरस्वती मेधा.....	207	126 बाजू मैथिली.....	208
127 हम्मर माए.....	209	128 अमृत पुत्री.....	210
129 हे नाह चल आगाँ.....	211	130 ध्येय पथिक साधक.....	212
131 मेघ बरसि गेल.....	213	132 स्वागतम.....	214
133 बड़द करैए दाउन ने यौ.....	215		

पहिल भाग — किशोर गजल

गजल १-१३३ : मूल साझा पाठक विस्तृत समीक्षा

गजल १ : बाबी

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरुज़ी। मात्रा-क्रम:

१७-२१ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: निकट-

सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -ानू • रदीफ: बाबी।

पाठ-साक्ष्य : “कनियाँ पुतरा छोड़ू आनू बाबी” ; “कननी दूर हेतै बच्चा सभमे” ; “पंख लगा टिकुली अकानू बाबी” ।

‘बाबी’मे नगरिया/बाह्य खिलौनाक नाम बनि स्थानीय परी, दैता, गाम, पानि, अकास आ टिकुलीक कल्पना एकहि संसारमे बसैत अछि। गुलाबी रंगक स्वीकृति आ ‘सात रंग’क माँग संगहि रहबाक कारण बालक एकरूप खिलौना-छविसँ बाहर संभावनासभ बनबैत अछि।

ई गजल ‘दीवान-ए-विदेह’क किशोर अंशक आरम्भ अछि, आ ‘अकुलाइत सुर’मे साझा रचना होयबाक लेखकक सूचना अछि। वास्तविक मिसरावार एकरूपता ‘अकुलाइत सुर’क मूल Word पाठसँ सत्यापित अछि।

गजल २ : चान मामा

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरुज़ी। मात्रा-क्रम:

१५-२१ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-

विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -आर • रदीफ: आउ ने।

पाठ-साक्ष्य : “चान मामा हमर दुआर आउ ने” ; “सात रंगक धनुष अकास चढ़ल” ; “धीरे-धीरे झंकार आउ ने” ।

‘चान मामा हमर दुआर आउ ने’क सम्बोधन बालकक घरकेँ अकाससँ जोड़ैत अछि। कागजक नाव, पोखरि, निन्न लैत चिड़ै आ सपनामे नाचैत परी—सांध्य-कल्पनाक क्रमानुसार सरकैत छविसभ अछि।

‘आउ ने’ रदीफ विनती आ लोरीक मिलल स्वर अछि। ‘सात रंगक धनुष’ अनिश्चित जादू नहि, बालमनक विशिष्ट रंगमंच बनबैत अछि। ‘अकुलाइत सुर’क किशोर गजलरूपसँ बादक तुलना आवश्यक; मुदा एहि दीवान-पाठमे रचना स्वयंपूर्ण दृश्य-चक्र बनबैत अछि।

गजल ३ : सात रंग

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १६-१९ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: निकट-सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -आर • रदीफ: देखू ने।

पाठ-साक्ष्य : “फूल-फूलमे बहार देखू ने” ; “भगजोगनी राति दीप जरबैए” ; “खुलल अकासक दुआर देखू ने”।

‘सात रंग’मे फूल, चान, तरेगन आ भगजोगनीक प्रकाश एकहि बहुरंगी दृश्य-संसार बनबैत अछि। ‘फूल-फूलमे बहार देखू ने’क निमन्त्रण प्रकृतिदृश्यक पाठककेँ दृश्यद्रष्टा बनबैत अछि।

‘देखू ने’ रदीफ बालककेँ कौतूहलमे सामिल करैत अछि। मुदा रंगक संख्या साते रहबाक व्याख्या कविता नहि करैत; ओ प्रतीकात्मक रंगधनुषक परिचित बोधपर निर्भर अछि। ४५९ ‘बार्बी’क सात-रंगक प्रसंगसँ एकटा साझा कल्पनाक्षेत्र भेटैत अछि, स्वयं अलग रचनाक दृश्य-व्यवस्थासहित।

गजल ४ : दादीक कथा

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रम: १६-२२ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -आर • रदीफ: सुनाउ ने ।

पाठ-साक्ष्य : “अँचर भरल दुलार सुनाउ ने” ; “नेना निन्नक बाट तकैत बैसल अछि” ; “फेर ओही संसार सुनाउ ने” ।

दादीक अँचरमे भरल दुलार आ मनुष्य जेकाँ बजैत चिड़ै लोककथा-परम्पराक मौखिक नाट्य रचैत अछि । नेनाक निन्नक प्रतीक्षा कथा सुनबाक सामूहिक अनुभूतिकेँ शरीरक समयसँ जोड़ैत अछि ।

‘सुनाउ ने’क बारम्बार विनती सुननिहार बालपात्रक सक्रिय भूमिका अछि । मुदा कहानीक भीतरक घटना पूरा नहि खुलैत; कविता कथाक कथावस्तुक बदला कथा सुनबाक सम्बन्धक विषय पर लिखल गेल अछि ।

गजल ५ : तरेगन गनी

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रम: २३-२४ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: द्विखण्डी निकट-समलय • यति: मध्य अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -आर • रदीफ: कहू ने ।

पाठ-साक्ष्य : “परी संग कनी खेल, कतेक तार कहू ने” ; “पवन संग उगल मेघ, गिरत मेह खिलल फूल” ; “सगर रात उगल चान, कतेक तार कहू ने” ।

‘तरेगन गनी’क आरम्भमे ताराक गिनती खेल मात्र नहि, अनन्त दुनियाकेँ बालकक संख्यासँ समझबाक आकांक्षा अछि । चिड़ै, पवन, मेघ आ फूलक बिम्ब लगातार उठैत अछि ।

शेरसभक अनेक छवि ४६४ ‘बाटक खेल’ आ ४६५ ‘चिड़ैक गीत’मे फेर आवैत अछि । विषयगत निकटताक संग ‘सगर रात उगल चान’क काल-रचना

उल्लेखनीय अछि, मुदा दृश्य-बदलावक गति बेशी रहबाक कारण एकटा केन्द्रित भाव कमजोर होइत अछि ।

गजल ६ : बाटक खेल

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरुञ्जी । मात्रा-क्रमः २३-२५ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः द्विखण्डी निकट-समलय • यतिः मध्य अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -आट • रदीफः चलै छी ।

पाठ-साक्ष्य : “परी संग कनी खेल, कनी बाट चलै छी” ; “गगन बीच उगल चान, कतेक तार रहत साथ” ; “हमर गाम हँसल फूल, कनी बाट चलै छी” ।

परीक संग खेलैत ‘कनी बाट चलै छी’ बाल-कल्पनाक रस्ताकँ परिकथासँ गामक परिचित स्थान धरि लऽ अबैत अछि । पवन, फूल, चान आ गामक हँसी एकहि उत्सवक बहुवचन छवि अछि ।

४६३क ‘परी संग कनी खेल’क निकट पुनरावृत्ति इहाँ आरम्भे उपस्थित अछि । ‘बाट चलै छी’ रदीफक अपन गति अवश्य अछि, मुदा मध्यवर्ती शेरसभक शब्दसंसार बहुत समान होयबाक कारण नव काव्य-केन्द्र पहचानब कठिन अछि ।

गजल ७ : चिड़ैक गीत

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरुञ्जी । मात्रा-क्रमः २३-२५ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः द्विखण्डी निकट-समलय • यतिः मध्य अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ीत • रदीफः गबै छी ।

पाठ-साक्ष्य : “चिड़ै संग उगल भोर, जतन गीत गबै छी” ; “नदी नीर चलत नाव, कनी खेल रहत साथ” ; “परी संग हमर मीत, जतन गीत गबै छी” ।

चिड़ैक गीतक संग भोर उगबाक रूपक श्रवण आ समयकँ मिलबैत अछि । स्कूल, नदी, नाव आ परीक संग मीतता एकहि बालकक बाह्य आ भीतरी जगत बनबैत अछि ।

४६३-४६४क पवन, फूल, परी आ गामक बिम्ब इहो पुनः उपयोग करैत अछि । रदीफ ‘जतन गीत गबै छी’ गीतक स्वरलयक घोषणा अछि, मुदा जतन ककर, कोन अभ्यासमे प्रकट भेल—ई ठोस पक्ष शेष रहैत अछि ।

गजल ८ : हँसीक आँगन

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रम: १७-२० मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: निकट-सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -आर • रदीफ: हँसू ने ।

पाठ-साक्ष्य : “फूल खिलल अछि बहार, हँसू ने” ; “हारि गेल खेलमे तँ नोर किएक” ; “सपना बनल उपहार, हँसू ने” ।

‘हँसीक आँगन’मे कागजक मुकुट पहिरब आ खेलमे हारलाक बाद नोर नहि बहाबयक दृश्य निज खेलक सत्ता आ भावनात्मक सन्तुलनक विचार जोड़ैत अछि ।

‘हँसू ने’क विनती हँसीक स्वाभाविकता आ अनुशासनक आग्रह बीच रहैत अछि । हारल बालकक दुःखक मान्यता देल बिना हँसीक आग्रह अत्यधिक निर्देशात्मक बनि सकैत अछि; खेलक अभिनयक दृश्य गजलक अधिक सबल अंश अछि ।

गजल ९ : कागजक नाव

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रम: १८-२३ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -आर • रदीफ: आउ खेली ।

पाठ-साक्ष्य : “मेह खोललक पानिक दुआर, आउ खेली” ; “इन्द्रधनुष सात रंगक सीढ़ी टाँगि देलक” ; “आब अन्तिम एक बार, आउ खेली” ।

मेह खोललक पानिक दुआर आ कागजक नावक यात्रा बालकक हस्तकौशलकें प्रकृतिक घटनासँ जोड़ैत अछि । मेंढकक ध्वनि आ इन्द्रधनुषक सात-रंगक सीढ़ी शब्दचित्रमे ध्वनि आ रंग दुनू दैत अछि ।

‘आउ खेली’क आवर्तन बालमनक खेल समाप्त नहि होयबाक इच्छा अछि।
४७० ‘मेहक खेल’क आरम्भमेसँ अत्यन्त निकट दृश्य भेटैत अछि; अन्तर डिटेल
आ सम्बोधनमे अछि, तँ रचना-दोहरेबाक सीमा जाँच आवश्यक।

गजल १० : दादीक चान

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम:

१८-२५ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-
विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -आर • रदीफ: दादी कहैए।

पाठ-साक्ष्य : “चानक ऊपर एक संसार, दादी कहैए” ; “सपना कोनो बजारमे
बिकैत नहि अछि” ; “मोनमे रहत संसार, दादी कहैए”।

‘दादीक चान’मे चानक ऊपर एकटा संसार कल्पित कएल गेल अछि; दादीक
कण्ठ एहि संसारक प्रामाणिक कथाकार अछि। ‘सपना कोनो बजारमे बिकैत नहि
अछि’क पाँति बाल-कल्पनाकेँ बाजारक वस्तुसँ अलग करैत अछि।

सामाजिक अर्थ एतय बिना लम्बा उपदेशक एक पाँतिमे खुलैत अछि। मुदा
कहानीक सारा अस्तित्व दादीक कथनक रूपमे रहैत अछि; भीतरक घटना
अस्पष्ट रहैत अछि, जे लोरीक सौन्दर्य आ कथात्मक सीमाक दुनू रूपेँ पढ़ल जा
सकैत।

गजल ११ : पतंगक पाँखि

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम:

१५-२१ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-
विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -आर • रदीफ: उड़ि चलू।

पाठ-साक्ष्य : “नील अकासक ओहि पार, उड़ि चलू” ; “चिड़ै सभ पाँखि पसारि
वाट देखबैत” ; “एखन एक बेर आर, उड़ि चलू”।

पतंग डोर ढील करबाक आग्रह करैत अछि; उडानक स्वतंत्रता आ धरतीक नियन्त्रणक सह-उपस्थिति इहँ बालकक स्वायत्तताक कोमल रूपक अछि। चिड़ैसभ पाँखि पसारि बाट देखबैत अछि।

‘उड़ि चलू’क रदीफ उर्ध्वगत आशा लऽ अबैत अछि, मुदा डोरक तनाव गजलक असल नाटकीय बिन्दु अछि। एहि सम्बन्धक विस्तार होइ तँ कविता स्वतन्त्र निर्णयक अधिक गहिर अर्थ ग्रहण करि सकैत छल।

गजल १२ : मेहक खेल

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूज़ी। मात्रा-क्रम: १८-२२ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: निकट-सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -आर • रदीफ: दौड़ ने।

पाठ-साक्ष्य : “मेह खेललक पानिक दुआर, दौड़ ने” ; “पातक टोपी माथ पर राखि हँसैत” ; “कहब—बस एक बेर आर, दौड़ ने”।

मेह, कागजक नाव आ पातक टोपी स्थानीय बालखेलक वस्तु-संसार अछि। बाहरी मेह बाधा नहि, दुआर खोलयवाला क्रिया बनैत अछि; उन्मुक्त बालक एकर आमन्त्रण स्वीकार करैत अछि।

४६७क आरम्भिक ‘मेह खेललक पानिक दुआर’ एतय शब्दशः दोहरायल अछि। ‘दौड़ ने’क गति आ पातक टोपी नव आँगन-दृश्य जोड़ैत अछि, मुदा मूल प्रस्तावना एके रहबाक आलोचनात्मक सीमा स्पष्ट अछि।

गजल १३ : निन्नक कथा

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूज़ी। मात्रा-क्रम: १८-२४ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -आर • रदीफ: कथा सुनू।

पाठ-साक्ष्य : “आँखि मूनू, खुलत संसार, कथा सुनू” ; “दादीक अँचर रातिक बादल जकाँ अछि” ; “मोनमे बाँचत संसार, कथा सुनू” ।

‘आँखि मूनू, खुलत संसार’क विरोधाभास श्रव्य कथा आ दृश्य कल्पनाक अनूठ सम्बन्ध अछि। दादीक अँचर रातिक बादल बनैत अछि, जाहिमे कण्ठक सुरक्षा आ निन्नक पारगमन एकसंग रहैत अछि।

‘दादीक कथा’ (४६२)क विनती आ एतुक निन्नक आग्रह निकट अछि, मुदा ४७१मे आँखि मुनबाक क्षण दृश्य-परिवर्तनक ठोस केन्द्र बनैत अछि। कथित परीकथाक भीतरक कथा नहि, सुनबाक परिवेश असल विषय अछि।

गजल १४ : अपन सपना

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १६-१९ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: निकट-सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -आह • रदीफ: आगाँ चलू।

पाठ-साक्ष्य : “अपन चुनल राह, आगाँ चलू” ; “पोथीक बाहर दुनिया पैघ अछि” ; “फेर चुनू नव राह, आगाँ चलू” ।

‘अपन सपना’मे ‘लोक बहुत कहत—ई बनू, ओ बनू’ समाजक निर्धारणपर युवा पाठकक स्वतन्त्र निर्णयकै रखैत अछि। पोथीक बाहर दुनियाकै पैघ कहब पढ़बाक निषेध नहि, अनुभवक विस्तारक आग्रह अछि।

‘आगाँ चलू’क रदीफ उपदेशात्मक लयक निकट अछि। मुदा व्यक्तिगत राह चुनबाक ठोस दबाव देल गेल अछि; ई ४५९-४७१क केवल बाल-कल्पना सँ स्पष्ट किशोर नागरिकतामे प्रवेश अछि।

गजल १५ : खेलक मैदान

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रम:

१६-२३ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-

विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: —आर • रदीफ: खेलू ने ।

पाठ-साक्ष्य : “हारि गेलहुँ तँ की हार, खेलू ने” ; “दौड़मे सभसँ पहिल होएब जरूरी नहि” ; “हँसि कऽ फेर एक बार, खेलू ने” ।

हारलाक बाद खेल छोड़बाक बदला मीतक जीतपर ताली देब सामूहिक प्रतिस्पर्धाक नव नैतिकता अछि । दौड़मे पहिल होएब जरूरी नहि—ई पाँति सफलता-संस्कृतिक दबाव पर चोट करैत अछि ।

‘खेलू ने’ रदीफ खेलक पुनरारम्भक वास्तविक निमन्त्रण अछि । मुदा हारक भावात्मक पीडा कतेक देर टिकैत अछि, एकर जटिलता अल्प अछि; संक्षिप्तता बालपाठक लेल लाभो अछि आ मनोवैज्ञानिक सीमाओ ।

गजल १६ : पोथीक पाँखि

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रम:

१६-२३ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-

विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: —आर • रदीफ: पढ़ू ने ।

पाठ-साक्ष्य : “पन्ना-पन्नामे संसार, पढ़ू ने” ; “अंक लेल मात्र पढ़ब पढ़ाइ नहि होइ” ; “तखने खुलत संसार, पढ़ू ने” ।

पोथीक पन्ना-पन्नामे दुनियाक विस्तार ‘पोथीक पाँखि’क मूल रूपक अछि । कथा अपन गामसँ बाहर लऽ जाइत अछि, आ अंक लेल मात्र पढ़नाइ शिक्षाक उद्देश्य नहि—ई दुनू मिसरा पढ़बाक स्वतंत्र अर्थ निर्धारित करैत अछि ।

‘पढ़ू ने’ रदीफ आमन्त्रण छी, अनुशासनक डाँट नहि । मुदा साहित्यक अन्यायपूर्ण पाठ्यक्रम वा पढ़बाक कठिनाइक उदाहरण नहि आएल; पोथीक सौन्दर्यपर सामान्य भरोस अनकहल रहैत अछि ।

गजल १७ : परीक्षाक बिहान

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रमः

१६-२६ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-

विन्यास • यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -र • रदीफः डरू नहि ।

पाठ-साक्ष्य : “पोथीक एतेक भार, डरू नहि” ; “प्रश्न कठिन हो तँ दोसर दिस बढू” ; “सीखि कऽ बढू हर बार, डरू नहि” ।

परीक्षाक बिहानमे पोथीक भार आ डरक अन्तर ‘दरू नहि’क रदीफँ सँ संबोधित होइत अछि । कठिन प्रश्न छोडि दोसर प्रश्न दिस बढबाक सलाह विशिष्ट परीक्षा-परिस्थितिसँ उत्पन्न अछि ।

ई व्यावहारिक सलाह कविता-उपदेशक सीमा पर अछि, मुदा ‘शान्त मोनसँ याद करू’ देहगत मानसिक दबाव बुझैत अछि । शेरसभमे परीक्षा-भोरक दृश्यात्मक वातावरण सीमित; विचार-विधि प्रधान अछि ।

गजल १८ : मीतक संग

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रमः

१६-२४ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-

विन्यास • यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ग • रदीफः संग चलू ।

पाठ-साक्ष्य : “मीत अछि तँ हँसीक संग चलू” ; “मत अलग हो तँ मीतक नेह नहि टूटए” ; “एहन साँचक ढंग संग चलू” ।

मीतक जीत-हारकँ अपन पराजय/विजय नहि मानब मित्रताक आत्मसम्मानक शर्त अछि । अलग मत होइतो नेह नहि टूटबाक प्रश्न किशोर सम्बन्धमे मतभेदक स्वीकृति अछि ।

‘संग चलू’क रदीफ सहयात्राकँ प्रतिस्पर्धामे बदलय सँ रोकैत अछि । मुदा एकहि कवितामे कतेक सलाहक संकुचन अछि; वास्तविक संवाद अथवा एकटा विवादक छोट दृश्य एहि अनुभवकँ अधिक सघन बना सकैत ।

गजल १९ : पर्दासँ बाहर

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रम: १७-२५ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -र • रदीफ: देखू ने ।

पाठ-साक्ष्य : “पर्दासँ बाहर संसार देखू ने” ; “मीतक फोटोपर हँसी आसान बहुत अछि” ; “धरती-अकासक संसार देखू ने” ।

पर्दाक भीतर लगातार अँगुरी चलब, आँखि थाकब आ मीतक फोटोपर सहज हँसी —डिजिटल व्यवहारक दू अलग प्रभाव अछि । ‘पर्दासँ बाहर संसार’क आह्वान केवल तकनीक-विरोध नहि, प्रत्यक्ष अनुभवक विकल्प प्रस्तुत करैत अछि ।

मुदा जालजगतमे बनैत सार्थक मीतता सम्भव अछि, ई जटिलता पाठमे नहि खेलल गेल; द्विभाजन शिक्षाप्रधान अछि । ४८०क ‘जालजगतसँ बाहर’क संग एहि रचनाक वास्तविक पाठ-साम्य महत्वपूर्ण अछि ।

गजल २० : अपन राह

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रम: १६-२१ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -ह • रदीफ: अपन चुनू ।

पाठ-साक्ष्य : “लोक कहत बहुत राह, अपन चुनू” ; “ज्ञान पोथीक भीतर बन्द नहि रहैए” ; “फेर नबका राह, अपन चुनू” ।

गुरु-मीतक बात ध्यानसँ सुनितो अपन राह चुनब स्वतन्त्रताक संग विवेकक सम्बन्ध रखैत अछि । ज्ञान पोथीक भीतर बन्द नहि—ई अनुभवकें शिक्षा-साधन स्वीकार करैत अछि ।

४७२क 'अपन सपना'क आत्मनिर्णयक विचार पुनः आवैत अछि, मुदा एतय गुरु-मीतक सल्लाहक सुनब सकारात्मक भूमिका ग्रहण करैत अछि। अतः दू गजलमे फरक स्वतंत्रताक एकांतिक बनाम संवादात्मक स्वर अछि।

गजल २१ : तुलना नहि

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरुज़ी। मात्रा-क्रमः १८-२६ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास • यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -र • रदीफः तुलना नहि।

पाठ-साक्ष्य : “दोसराक जीतसँ अपन हार—तुलना नहि” ; “जालजगतमे देखल जीवन पूरा जीवन नहि” ; “आत्ममोलक बाजार—तुलना नहि”।

‘दोसराक जीतसँ अपन हार—तुलना नहि’ किशोर आत्ममूल्यांकनकेँ सामाजिक प्रतियोगिताक मापकसँ अलग करैत अछि। अलग-अलग गति सँ चलैत बाटक बिम्ब दुनू जीवनपथक तुलनाक असमानता बतबैत अछि।

‘जालजगतमे देखल जीवन पूरा जीवन नहि’ तेसर अर्थपाट जोड़ैत अछिः पर्दापर प्रदर्शन आ वास्तविक अस्तित्वक भेद। मुदा रदीफ ‘तुलना नहि’ एकटा निषेधक पुनरुक्ति बनि कखनो संवादक गुंजाइश घटबैत अछि।

गजल २२ : जालजगतसँ बाहर

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरुज़ी। मात्रा-क्रमः १७-२३ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास • यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -र • रदीफः बाहर चलू।

पाठ-साक्ष्य : “जालजगतसँ संसार बाहर चलू” ; “मीतक चिन्ह केवल सन्देशमे नहि रहैए” ; “धरती-अकासक संसार, बाहर चलू”।

‘जालजगतसँ बाहर चलू’मे अँगुरी, चित्र आ थाकल आँखि आधुनिक दिनक सचित्र रूप अछि। मीतक चिन्ह केवल सन्देशमे नहि रहब प्रत्यक्ष साक्षात्कारक मानवीय आयाम खोलैत अछि।

४७७ 'पर्दासँ बाहर'क संग अत्यन्त निकट दोहराव—थाकल आँखि, प्रत्यक्ष धरती-अकास आ सन्देशक पार सम्बन्ध—एहि गजलक मौलिक अन्तरक सीमा अछि। अनेको माध्यमक पूर्ण निषेध नहि, समयक सन्तुलनक व्याख्या पाठसँ सम्भव अछि।

गजल २३ : विषय अपन

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १५-२४ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -ह • रदीफ: सोचि चुनू।

पाठ-साक्ष्य : “सभ देखाओत राह, सोचि चुनू” ; “ज्ञानक क्षेत्र एक-दूटा नाम धरि नहि” ; “फेर अपन राह, सोचि चुनू”।

‘विषय अपन’मे ‘अंक जरूरी अछि, मुदा रुचि सेहो जरूरी’ विद्यालयक मानदण्ड आ निज अभिरुचिक तनावक स्पष्ट बोध अछि। बाट बदलि सकब असफलता नहि—ई विकल्पक नैतिक स्वीकृति दैत अछि।

४७२ ‘अपन सपना’ आ ४७८ ‘अपन राह’क मूल आत्मनिर्णय-सूत्र एतय फेर आयल अछि; नव पक्ष अंक आ रुचिक सीधा तुलनाक अछि। शेरक स्वतंत्र काव्यचित्र अपेक्षाकृत कम, सलाह प्रधान।

गजल २४ : लाइकसँ बाहर

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १५-२५ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -ल • रदीफ: याद रखू।

पाठ-साक्ष्य : “लाइक नहि कहै पूरा मोल, याद रखू” ; “टिप्पणी एक दिन मनकै कने चोट दऽ सकैए” ; “जीवनक असली मोल, याद रखू”।

‘लाइक नहि कहै पूरा मोल’ डिजिटल स्वीकृतिकें आत्म-मूल्यक अन्तिम कसौटी बनावयक विरुद्ध अछि। बाह्य रूपसँ अपन रूप तय नहि करबाक आग्रह आ स्क्रीन बाहर मीत-गाछ-खेलक सूची प्रत्यक्ष जीवनकें जगह दैत अछि।

४७९ ‘तुलना नहि’ आ ४८० ‘जालजगतसँ बाहर’क निकट भाव पुनरावृत्त अछि। ‘याद रखू’ रदीफ स्मरणक उपदेशक लय दैत अछि, जे काव्यक नाटकीयता कम कऽ सकैत अछि।

गजल २५ : बात फरिछाउ

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरुज़ी। मात्रा-क्रम:

१७-२३ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -त • रदीफ: बात फरिछाउ।

पाठ-साक्ष्य : “मीत रूसल तँ बात, बात फरिछाउ” ; “क्षमा माँगब हार नहि, सम्बन्धक बल अछि” ; “मनमे नहि राखू बात, बात फरिछाउ”।

रूसल मीतक विवादमे दोसरा सँ सुनल बातपर तुरन्त निर्णय नहि करबाक आग्रह अफवाह आ प्रत्यक्ष संवादक भेद अछि। ‘बात फरिछाउ’ रदीफ झगडा बढ़य सँ रोकबाक साझा क्रिया बनैत अछि।

‘साँच मीत’ मतभेद सहेत—ई मूल तर्क पर्याप्त सबल अछि, मुदा विवादक छोट दृश्य अथवा दोसर पक्षक स्वर अनुपस्थित अछि। ४८६ ‘अपन बात’क संग करीबी काव्य-सम्बन्धक परीक्षण आवश्यक।

गजल २६ : फेर प्रयास

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरुज़ी। मात्रा-क्रम:

१५-२२ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -स • रदीफ: फेर करू।

पाठ-साक्ष्य : “हारि गेल प्रयास, फेर करू” ; “जतऽ चूकलहुँ ओतऽ कारण बुझि लिअ” ; “अपन नब इतिहास, फेर करू”।

हारक बाद 'गलती देखू, मुदा अपना पर रोष नहि' अपन त्रुटिक स्वीकार आ आत्मदण्डक अन्तर बनबैत अछि। वर्तमान असफलता भविष्यक पूर्ण परिचय नहि—ई समयक दोसर अर्थ प्रस्तुत करैत अछि।

'फेर करू' प्रेरक आवर्तन अछि, मुदा शेरसभ घटनासँ बेसी कथनात्मक सलाहपर केन्द्रित अछि। ४९८ 'हारक बाद'मे एहि विषयक अनुकूल पुनरुक्ति होएबाक सम्भावना पाठमे स्वतः देखाइत अछि।

गजल २७ : अपन रूप

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रमः

२०-२६ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-

विन्यास • यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -र • रदीफः मोन छोट नहि करू।

पाठ-साक्ष्य : “आरसिमे देखल आकार, मोन छोट नहि करू” ; “देह बदलत, उमेर बदलत, चेहरा बदलत” ; “बाहरक माप हजार, मोन छोट नहि करू”।

आरसिमे अपन आकार देखबाक अनुभवक संग समाजक सहज टिप्पणीक चोट राखल गेल अछि। बाहरी मापक हजार होइतो निज गुण आ हँसीक पहचान कएल जा सकैत अछि—ई गजल किशोर देहबोधक विषय उठबैत अछि।

'मोन छोट नहि करू'क निषेध रचनाकें स्पष्ट आत्मसम्मानक पाठ बनबैत अछि। 'तुलना नहि' (४७९) सँ सम्बन्ध प्रखर, मुदा ऐनामे देखबाक निजी क्षणक अतिरिक्त रूपक एतुक विशिष्ट योगदान अछि।

गजल २८ : अपन बात

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रमः

१६-२१ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-

विन्यास • यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -त • रदीफः खुलि कहू।

पाठ-साक्ष्य : “जे अखरैए ओ बात, खुलि कहू” ; “ना कहबो अपन सीमा बचबैत अछि” ; “मनमे नहि राखू बात, खुलि कहू”।

‘जे अखेरैए ओ बात, खुलि कहू’क प्रतिज्ञा सन्देशमे अर्थ बदलि जाएबाक जोखिमसँ समर्थित अछि। सीधा बात करब आ मतभेद सहेब मीतताक दू अलग अभ्यास मानल गेल अछि।

४८३क सँग एके समाधानात्मक क्षेत्र अछि। रदीफ ‘खुलि कहू’ विषयानुकूल अछि, मुदा काव्य-वक्ता स्वयं कोन संकोच पार कएलक ओकर नाटकीय क्षण नहि खुलैत अछि।

गजल २९ : अपन गति

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १८-२२ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: निकट-सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -ह • रदीफ: रहय अपन-अपन।

पाठ-साक्ष्य : “सभक चलबाक राह रहय अपन-अपन” ; “ज्ञानक दुनिया एक-दू विषय धरि नहि” ; “चुनल गेल राह रहय अपन-अपन”।

‘सभक चलबाक राह रहय अपन-अपन’मे जीवनक गति प्रतियोगिताक मानकसँ अलग कएल गेल अछि। गुरु-मीतक सल्लाहक सम्मान करितो निर्णय निज रखबाक आग्रह एकटा व्यावहारिक नैतिक सन्तुलन अछि।

४७८ ‘अपन राह’मे लगभग समान सूत्र पहिने अछि। एतय दौडक असमानता देखेबाक रूपक नया केन्द्र बनबैत अछि, मुदा शेरक स्वतन्त्र दृश्यात्मक विस्तार सीमित।

गजल ३० : ना कहू

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १८-२१ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: निकट-सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -त • रदीफ: स्पष्ट कहू।

पाठ-साक्ष्य : “मन नहि मानै ओ बात, स्पष्ट कहूँ” ; “ना कहबो अपन सीमा बचबैत अछि” ; “मनमे नहि राखू बात, स्पष्ट कहूँ” ।

‘ना कहूँ’ शीर्षक एतय मन नहि मानबाक स्पष्ट वाणी पर केन्द्रित अछि । संदेशक अर्थ बिगड़बाक आशङ्का आ साँच मीतक मतभेद सहन करबाक माप एकसाथ रखल गेल ।

४८६क ‘खुलि कहूँ’कें ‘स्पष्ट कहूँ’ बनाओल गेल अछि; कतिपय मिसराक विचार-क्रम बहुत निकट अछि । एहि समानता कें नब शीर्षकक कारण भिन्न समस्या मानल नहि जा सकैत ।

गजल ३१ : निन्न बचाउ

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रम: १६-२२ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-तलय अनुसार । काफिया: -र • रदीफ: निन्न बचाउ ।

पाठ-साक्ष्य : “स्क्रीनसँ बाहरो अछि संसार, निन्न बचाउ” ; “फोन कने दूर राखि आँखि मूनि लिअ” ; “सपनाक अपन संसार, निन्न बचाउ” ।

निन्न बचाबयक आग्रहमे स्क्रीन, पढ़ाइ आ भोरक साफ मनक सम्बन्ध व्यावहारिक किशोर दिनचर्याक विषय अछि । थाकल मस्तिष्कक सीखबाक सीमा मन-देहक समन्वय खोलैत अछि ।

कविता ‘निन्न बचाउ’क संदेशक पक्षमे स्पष्ट अछि, मुदा तकनीकक उपयोगक जटिलता कम देखबैत अछि । ४९५ ‘निन्नक समय’क संग एतुक विचार-आवर्तनक परीक्षण आवश्यक ।

गजल ३२ : समयक हिस्सा

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रम: १६-२४ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-तलय अनुसार । काफिया: -म • रदीफ: समय बाँटू ।

पाठ-साक्ष्य : “पढाइ लेल कने काम, समय बाँटू” ; “बैसल-बैसल देह सेहो बोझिल भऽ जाइत” ; “एक्के नहि काम, समय बाँटू” ।

‘समय बाँटू’ गजलक केन्द्र समयक चारि दावेदार—मीत, घर, पोथी आ सपना—कें समान जीवनगत वैधता देनाइ अछि। ‘लक्ष्य पैघ हो, मुदा साँस थकए नहि’ भावनात्मक स्थायित्व आ योजना बीच सम्बन्ध देखबैत अछि।

‘एक्के नहि काम’ नीति-सूत्रक रूपमे उपयुक्त अछि, मुदा वास्तविक दिनक घटनाक स्थान कम। किशोर स्वशासनक पाठक रूपेँ उपयोगिता ओकर काव्यगत बहुअर्थितासँ अधिक प्रखर अछि।

गजल ३३ : बाट चुनैत

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १५-२२ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -ह • रदीफ: घबराउ नहि।

पाठ-साक्ष्य : “एक्के नहि अछि राह, घबराउ नहि” ; “करियरक दुनिया दू-चार नाम धरि नहि” ; “फेर चुनू नव राह, घबराउ नहि” ।

मीतसभ अलग दिशा चुनि गेलापर अकेले अपन राह चुनबाक भय एहि गजलक विशिष्ट परिस्थिति अछि। बाट बदललासँ सपना छोट नहि होयत—ई रुचि-विकासक स्वीकृति अछि।

४८१ आ ४७८क निर्णय-विमर्श एतय पुनरुक्त अछि; नव योगदान मीतक समूहसँ अलग होएबाक सामाजिक दबाव अछि। ‘घबराउ नहि’क रदीफ आश्वासन बनैत अछि, मुदा भावक व्यक्तिगत कथा अनकहल।

गजल ३४ : ना कहू

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १४-२३ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -र • रदीफ: ना कहू।

पाठ-साक्ष्य : “मोनपर जँ बेसी भार, ना कहू” ; “संग रहब नेह, दबाव मानब नेह नहि” ; “जतऽ घटए सम्मान, ना कहू” ।

एहि ‘ना कहू’मे मजाकक नामपर बेर-बेर चोट आ सम्मान घटबाक सन्दर्भ स्पष्ट अछि। पूर्वक ‘ना कहू’ (४८८) सँ इहाँ निज सीमा आ सामाजिक दबावक अधिक निश्चित उदाहरण भेटैत अछि।

‘ना कहब दुश्मनी नहि’ विचारक महत्त्वपूर्ण सीमा-निर्धारण अछि। मुदा कविता छेड़छाड़, छल वा ककरो दबावक एकटा वास्तविक दृश्य विस्तार नहि दैत; मुख्यतः सिद्धान्तात्मक सलाह।

गजल ३५ : अपन गति

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरुज़ी। मात्रा-क्रमः १६-२४ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास • यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः ेर • रदीफः अपन गति।

पाठ-साक्ष्य : “दोसरासँ भेल जँ देर, अपन गति” ; “कखनो बाट धूमिल होए, मोन नहि हारू” ; “फेर चुनू एक बेर, अपन गति” ।

‘अंकक घेरा जीवनक पूरा सीमा नहि’ परिणामक संख्याकँ आत्म-मूल्यसँ अलग करैत अछि। धीरे चलब हार नहि—विषम गति के मान्यता मिलैत अछि।

४८७ ‘अपन गति’ एके शीर्षक अछि। मुदा एतय परिणामक अंकक प्रसङ्ग प्रमुख भेलासँ तुलना सामाजिक कक्षा-स्थिति दिस मुडैत अछि। एकहि शीर्षकक दू स्वतंत्र समीक्षा उचित, तथापि पुनरावृत्तिक स्पष्ट अभिलेख आवश्यक।

गजल ३६ : ना कहू

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरुज़ी। मात्रा-क्रमः १४-२५ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास • यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -न • रदीफः ना कहू।

पाठ-साक्ष्य : “जे घटाबए अपन मान, ना कहू” ; “दबावमे निर्णय अपन नहि छोड़ू कखनो” ; “नेह रखि सम्मान, ना कहू” ।

मजाकक नामपर ककरो चोट पहुँचाबयकेँ अस्वीकार करब सीमाक नैतिकता अछि । ‘साँच मीत ना सुनि सेहो संग रहैत अछि’ मित्रताक परीक्षा स्पष्ट परिभाषित करैत अछि ।

४९२ आ ४८८ सहित ‘ना कहू’क तेसर प्रविष्टि अछि । प्रतिरोधक विषयमे किछु सूक्ष्म परिवर्तनेँ अछैत, लगातार एके रदीफ आ निषेध-स्वर अलग रचनाक मौलिकता पर प्रश्न उठबैत अछि ।

गजल ३७ : निन्नक समय

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रम: १६-२५ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -ोर • रदीफ: एखन सुतू ।

पाठ-साक्ष्य : “बहुत भेल ई शोर, एखन सुतू” ; “मोनमे उठैत प्रश्न सभ काल्हियो रहत” ; “बन्द करू ई शोर, एखन सुतू” ।

बहुत शोरक बाद ‘एखन सुतू’ दिनक गति रोकयक साहस दैत अछि । काल्हि पढ़ब-खेलब-मीतसँ बातक सूची विश्रामकेँ आलस्य नहि, अगिला जीवन-चक्रक आवश्यक भाग मानैत अछि ।

४८९ ‘निन्न बचाउ’क विषय फेर आयल अछि; ४९५क विशिष्टता सोझाँ सम्बोधन ‘एखन सुतू’ आ शोरक तत्काल बन्द होएबाक स्थिति अछि । मुदा स्वच्छन्द लोरीक बदला ई व्यवहारिक आदेशक नजदीक ।

गजल ३८ : प्रश्न पूछू

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रम: १४-२३ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -त • रदीफ: प्रश्न पूछू ।

पाठ-साक्ष्य : “जे नहि बुझलहुँ ओ बात, प्रश्न पूछू” ; “गुरु सिखबैत छथि, मुदा सोचब अहाँक काज” ; “खुलि अपन बात, प्रश्न पूछू” ।

‘जे नहि बुझलहुँ ओ बात, प्रश्न पूछू’ डरक विरोधी ज्ञानमीमांसा अछि । ककरो वचनसँ चोट लागला पर प्रश्न करबाक आग्रह केवल पाठशाला नहि, पारस्परिक सम्मानक क्षेत्र धरि पहुँचैत अछि ।

भिन्न परिस्थिति सभ एके प्रश्न-रदीफक भीतर आबैत अछि । शिक्षा-व्यवहारक दृष्टिसँ उपयोगी, मुदा ठोस गुरु-शिष्य संवाद अथवा संवाद-विघटनक दृश्य काव्यात्मक सघनता बढ़ा सकैत छल ।

गजल ३९ : मीत चुनू

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रम: १५-२२ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-तलय अनुसार । काफिया: -ग • रदीफ: बुझि चुनू ।

पाठ-साक्ष्य : “के रहत दुखमे संग, बुझि चुनू” ; “मतभेद हो तऽ बातक डोर नहि टूटए” ; “साँच मीतक संग, बुझि चुनू” ।

साँच मीत दुखक बेर संग रहैत अछि; सपना छोट कहि हँसब वाला साथी एकर विपरीत अछि । गलत राह रोकबाक साहसकें मित्रताक पक्षमे रखब सम्बन्धक अंधसमर्थन सँ अलग अछि ।

‘बुझि चुनू’ स्वयं व्यक्तिक मित्र-चयनक नैतिक जिम्मेदारी दैत अछि । मुदा मीतक छवि केवल सही/गलत प्रतिक्रियाक सूचीसँ बनैत अछि, जटिल व्यक्तित्वसँ नहि ।

गजल ४० : हारक बाद

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रम: १६-२४ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-तलय अनुसार । काफिया: -र • रदीफ: फेर उठू ।

पाठ-साक्ष्य : “आइ भेटल जँ हार, फेर उठू” ; “बाट कठिन हो, गति कने धीमी भऽ जाए” ; “लेने नबका विचार, फेर उठू” ।

‘आइ भेटल जँ हार, फेर उठू’ असफलताक अवस्थाकेँ स्थायी परिचय नहि मानैत अछि। बन्द दुआर आ नब विचारक बिम्ब सामाजिक तथा मानसिक दूनू राह खुलबाक सम्भावना दैत अछि।

४८४क ‘फेर प्रयास’क संग मूल तर्क निकट अछि। ४९८मे बन्द दुआरक दृश्य अपेक्षाकृत ठोस अछि, मुदा शेर-समूहमे आत्मविमर्शक बदला प्रेरक कथन प्रधान।

गजल ४१ : परीक्षाक बाद

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रमः १६-२३ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास • यतिः अर्थ-तलय अनुसार। काफियाः -र • रदीफः छोड़ि दिअ।

पाठ-साक्ष्य : “परीक्षाक एतेक भार, छोड़ि दिअ” ; “जे पढ़लहुँ से अनुभव बनि संग रहत” ; “आइक एहन हार, छोड़ि दिअ” ।

परीक्षाक भार छोड़बाक आग्रह अकस्मात् शिक्षा छोड़बाक नहि, एकल परिणामकेँ जीवनक समाप्ति नहि मानबाक अछि। ‘एक दुआर नहि खुलल तँ दुनिया समाप्त नहि’क रूपक अवसरक बहुलता चिन्हित करैत अछि। ४७५ ‘परीक्षाक बिहान’क आरम्भिक दबावक समापन एतय देखाइत अछि। मुदा ‘हार’ कहल परिणामक वास्तविक परिस्थिति नहि देखाओल गेल; जीवन-विवेकक सामान्य सूत्र प्रभावक सीमा बनैत अछि।

गजल ४२ : अपन विषय

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रमः १७-२५ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास • यतिः अर्थ-तलय अनुसार। काफियाः -ह • रदीफः बुझि चुनू।

पाठ-साक्ष्य : “सभ देखाओत अलग राह, बुझि चुनू” ; “ज्ञानक दुनिया दू-चारि पेशा धरि नहि” ; “फेर खोजू अपन राह, बुझि चुनू” ।

‘अपन विषय’क शीर्षक चयनक विशिष्ट अकादमिक सन्दर्भ दैत अछि। गुरु-बापक बात ध्यानसँ सुनि अपना रुचिक राह चुनबाक अवसर व्यक्तिगत निर्णय आ पीढ़ीगत सल्लाहक सन्तुलन अछि।

४८१ ‘विषय अपन’ मे ‘सभ देखाओत राह’ आ ‘बाट बदलि सकैत छी’ समान विचार अछि। शीर्षकक शब्दक्रम बदललासँ काव्य-समस्या स्वतः नव नहि होइत; मुख्य निखार सलाहकँ एकटा व्यक्त अनुभवमे बदलबाक सम्भावनामे अछि।

गजल ४३ : अपन निर्णय

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रमः १६-२३ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास • यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -न • रदीफः अपन रहू।

पाठ-साक्ष्य : “मीतक बीचो मान अपन रहू” ; “ककरो हँसी लेल अपना कँ चोट नहि दिअ” ; “भीड़मे इंसान अपन रहू” ।

भीड़मे अपन मान रखबाक आग्रह ‘ना’ कहबाक सामाजिक जोखिमक प्रसंग उठबैत अछि। ‘संग चलू, मुदा बाटक बोध नहि बिसरू’ मित्रताक संग स्वतंत्र विवेकक सम्बन्ध दैत अछि।

४९२ आ ४९४क अस्वीकार-विमर्श एतय अपन निर्णयक नाम सँ लौटैत अछि। रचनाक शक्तिशाली केन्द्र सामूहिकता आ आत्मसम्मानक अन्तर अछि, मुदा घटना-विशेषक अभावमे कथनात्मकता बेसी।

गजल ४४ : अपन ताल

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रमः

१७-२४ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-

विन्यास • यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः ेर • रदीफः अपन ताल ।

पाठ-साक्ष्य : “दोसरासँ भेल जँ देर—अपन ताल” ; “बाट कखनो धूमिल होए,
मन नहि हारू” ; “फेर चुनू एक बेर—अपन ताल” ।

‘अपन ताल’मे दोसरा सँ देर भेला परो अपन गतिसँ आगाँ बढ़बाक आग्रह अछि । अंककें जीवनक सीमा बनाबयक विरोध शैक्षिक प्रतिस्पर्धाक सामाजिक पीड़ाकें सम्बोधित करैत अछि ।

४९३ ‘अपन गति’क ‘अंकक घेरा’ आ ‘धीरे चलब हार नहि’क सूत्र लगभग एके अर्थमे पुनः आबि रहल अछि । तालक संगीतात्मक संकेतक स्वतंत्र विकास होइत तँ शीर्षकक सचेत भिन्नता अधिक फलित होइत ।

गजल ४५ : तुलना छोड़

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रमः

१९-२६ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-

विन्यास • यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -र • रदीफः तुलना छोड़ ।

पाठ-साक्ष्य : “आरसिमे देखल आकार—तुलना छोड़” ; “जालजगतमे देखल
जीवन पूरा जीवन नहि” ; “आत्ममोलक बजार—तुलना छोड़” ।

आरसिमे देह देखबाक क्षण आ मीतक सफलतासँ अपन मोन नहि छोड़ करबाक आग्रह आत्ममूल्यांकनक दू क्षेत्र जोड़ैत अछि । अपन भूल स्वीकार करब सेहो एहि आत्ममूल्यक हिस्सा अछि ।

४७९ ‘तुलना नहि’ आ ४८५ ‘अपन रूप’ दुनूक सूत्र एतय मिलैत अछि । ई पुनर्संयोजन किशोर मनोविज्ञान लेल उपयोगी, मुदा नव छविक स्वतंत्र मौलिकता सीमित ।

गजल ४६ : भरोसा

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रम:

११-२२ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: निकट-

सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -त • रदीफ: भरोसा रखू ।

पाठ-साक्ष्य : “मीतसँ खुलि कहू बात—भरोसा रखू” ; “क्षमा माँगब हार नहि, सम्बन्धक बल अछि” ; “मनमे नहि राखू बात—भरोसा रखू” ।

मीतसँ खुलि बात करबाक आग्रह चोट पहुँचलाक बाद विश्वासकें पुन: गठित करबाक प्रयास अछि । मतभेद संबंध नहि तोड़ैत—ई चतुर्थ विचारक स्थिर बिन्दु अछि ।

४८३ आ ४८६क संवादी नैतिकता लगभग समान; ‘भरोसा रखू’ रदीफ दृष्टिकोण बदलैत अछि, कथ्यक सामाजिक प्रक्रिया नहि । एहि आवर्तनकें संग्रहगत तकनीक आ पुनरुक्तिक सीमा दुनू रूपमे दर्ज करब चाही ।

गजल ४७ : भूलसँ सीखू

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रम:

११-२६ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -र • रदीफ: भूलसँ सीखू ।

पाठ-साक्ष्य : “एक चूककें हार नहि मानू—भूलसँ सीखू” ; “कखनो एक दुआर बन्द भऽ सकैत अछि” ; “ई जीतक आधार—भूलसँ सीखू” ।

एक चूकक बाद आत्मदण्डक बदला जिम्मेदारी स्वीकार करब व्यक्तिगत विकासक महत्त्वपूर्ण भेद अछि । ‘भूलसँ सीखू’ रदीफ निरन्तर आत्मसंशोधनक अभ्यास बनैत अछि ।

४८४क ‘गलती देखू, मुदा अपना पर रोष नहि’ लगभग एतुक मुख्य तर्ककें पहिने कहि चुकल अछि । नया प्रसंगक कमी विषयकें अलग रचनामे रूपान्तरित करबाक शक्ति कम करैत अछि ।

गजल ४८ : कने आराम

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरुज़ी । मात्रा-क्रमः

१७-२६ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-

विन्यास • यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -म • रदीफः कने आराम ।

पाठ-साक्ष्य : “दिन भरि भेल बहुत काम—कने आराम” ; “मीत सभ आगे अछि,
से सोचि दौड़ नहि” ; “आइ देहकँ आराम—कने आराम” ।

‘कने आराम’ समयक विरामकँ काजक भाग बनबैत अछि । रातिभर जागब
मेहनतक एकमात्र रूप नहि—ई प्रत्यक्ष किशोर जीवनक व्यवहारिक सुधारक
आग्रह अछि ।

४९५क शोर बन्द करि सुतबाक प्रसंगसँ ई निकट अछि । आरामक सामूहिक
महत्त्व मान्य अछैत, शेरसभमे विश्रामक देहगत दृश्य थोडा अउरो रहिते काव्य-
संवेदना बढ़ैत ।

गजल ४९ : सोझाँ बाजू

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरुज़ी । मात्रा-क्रमः

१६-२२ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः निकट-

सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास • यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -त • रदीफः
सोझाँ बाजू ।

पाठ-साक्ष्य : “मीतसँ मनक बात—सोझाँ बाजू” ; “क्षमा माँगब हार नहि,

सम्बन्धक बल अछि” ; “मनमे नहि राखू बात—सोझाँ बाजू” ।

‘सोझाँ बाजू’क रदीफ अनौपचारिक सुनबाक बदला प्रत्यक्ष सम्बोधनक अभ्यास
अछि । मनक चोट आ मतभेदक स्वीकारक विचार मीतताकँ टिकाउबक शर्त बनैत
अछि ।

४८६ ‘अपन बात’ आ ५०४ ‘भरोसा’क कथ्य-सूत्र प्रायः एहि रूपमे अछि । प्रश्न
‘की बाजल जाए’क स्वतन्त्र परिस्थिति विकसित नहि; काव्य-रचना बहुत हद
धरि निर्देशसूची बनैत अछि ।

गजल ५० : अपन सुर

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रमः १६-२८ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास • यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ीत • रदीफः अपन सुरमे ।

पाठ-साक्ष्य : “गाबू अपन गीत अपन सुरमे” ; “दोसराक बाट नीक हो, तइयो अहाँक बाट आन” ; “बाजू अपन गीत अपन सुरमे” ।

‘गाबू अपन गीत अपन सुरमे’ युवा पाठकक निर्णयकें ध्वन्यात्मक स्वायत्तता दैत अछि । अंक कम भेलापर जीवन कम नहि—ई सांख्यिक परिणाम आ आत्ममूल्यक अन्तर स्पष्ट करैत अछि ।

संगीतक ‘सुर’ आत्मस्वीकृतिक रूपक अछि, मुदा धुन, वाद्य वा गायनक कोनो दृश्य नहि; प्राथमिक आलोचनात्मक उपलब्धि उत्साहवर्धक वाक्य-रचना, शिल्पगत सीमा अमूर्तता ।

गजल ५१ : पर्दासँ परे

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रमः १७-२५ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास • यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -र • रदीफः कने बाहर ।

पाठ-साक्ष्य : “पर्दासँ पैघ संसार—कने बाहर” ; “मीतक छवि नहि, मीतक मन सेहो बुझू” ; “धरती-अकास संसार—कने बाहर” ।

पर्दाक पारक धरती-अकास प्रत्यक्ष जगत अछि । जालजगतमे देखल सामग्री सभ साँच नहि—ई सूचना-जाँचक प्रश्नकें डिजिटल विश्रामक संग जोड़ैत अछि ।

४७७, ४८० आ ४८२क निकट विषय-विन्यास एतय फेर आयल अछि; नव पक्ष यन्त्रक उपयोगिता स्पष्ट स्वीकारबाक अछि । तकनीक-निषेधक बदला सन्तुलनक पाठ एतुक सापेक्ष उपलब्धि अछि ।

गजल ५२ : मीतसँ बात

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः

१८-२३ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-

विन्यास • यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -त • रदीफः फरिछ बाजू ।

पाठ-साक्ष्य : “मोनमे जे अछि बात—फरिछ बाजू” ; “क्षमा माँगब हार नहि,

मीतक बल अछि” ; “मनमे नहि राखू बात—फरिछ बाजू” ।

मोनक बात फरिछ बाजब आ चोटक स्पष्ट उच्चारण व्यक्तिगत भावकें गोपनीयता सँ संवाद दिस लऽ जाइत अछि । मतभेद अछैत मीतता बचि सकैत अछि ।

४८३ ‘बात फरिछाउ’ आ ५०७ ‘सोझाँ बाजू’क निकट पाठान्तर स्पष्ट अछि । फरिछ बाजबाक रदीफक बदला कथ्यक नव घटना वा संवेदनात्मक भेद सीमित ।

गजल ५३ : ध्यानक डोर

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः

१७-२५ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-

विन्यास • यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ोर • रदीफः कने धामू ।

पाठ-साक्ष्य : “पर्दापर एतेक शोर—कने धामू” ; “खेल, गाछ, मीत, पोथी—सभ

जीवनक भाग” ; “मनक भीतर शोर—कने धामू” ।

‘ध्यानक डोर’मे पर्दाक शोर आ पढ़बाक समय भटकैत मनक संघर्ष अछि । यन्त्र उपयोगी अछि, मुदा मालिक नहि बनय—एहि सूत्रमे उपयोगिता आ आत्मनियन्त्रणक महत्त्वपूर्ण भेद अछि ।

५०९क डिजिटल सन्तुलनसँ सम्बन्ध अछि, मुदा एतुक विशेषता ध्यानक क्षणिक भग्नताक प्रत्यक्ष मनोवैज्ञानिक अनुभव अछि । डोरक ठोस बिम्ब शीर्षकमे अछि, शेरमे विकास कम ।

गजल ५४ : मदद माँगू

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रम: १७-२३ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -त • रदीफ: मदद माँगू ।

पाठ-साक्ष्य : “जे भारी लगै बात—मदद माँगू” ; “गुरु-मीत-बापक संग रहब कमजोरी नहि” ; “फरिछु कऽ कहू बात—मदद माँगू” ।

‘मदद माँगू’क आग्रह निज मनक कठिनाइ कहबकें कमजोरी नहि, साहस मानैत अछि । ककरो वचनसँ गहिर चोटक प्रसंग मानवीय संकटकें पाठमे अनैत अछि । ४९६क ‘प्रश्न पूछू’ संग इहो डर छोड़ि बाजबाक नैतिकता साझा करैत अछि, मुदा सहायता माँगब संवादसँ भिन्न भावनात्मक निर्भरता स्वीकार करैत अछि । व्यक्तिगत अनुभूतिक उदाहरण अल्प रहबाक सीमा अछि ।

गजल ५५ : भविष्यक बाट

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रम: १७-२९ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -ह • रदीफ: खोजैत रहू ।

पाठ-साक्ष्य : “एके नहि अछि राह—खोजैत रहू” ; “ज्ञानक क्षेत्र दू-चारि पेशा धरि नहि” ; “फेर नबका राह—खोजैत रहू” ।

मीतसभ एक दिशा जायत तँ स्वयं ओतए जेबाक बाध्यता नहि; भविष्यक अनेक बाटक स्वीकार किशोर स्वायत्तताक प्रश्न अछि । बाट बदललासँ सपना मरैत नहि, ई कल्पनाशील उत्तर अछि ।

४९१क ‘बाट चुनैत’सँ कथ्य बहुत निकट; ‘खोजैत रहू’ समयावधि बढ़बैत अछि, मुदा नया परिस्थिति अलग सँ नदेखाइत । शीर्षकीय विविधता आ भावगत पुनरावर्तनक भेद राखब जरूरी ।

गजल ५६ : निर्णय

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरुज़ी । मात्रा-क्रमः

१५-२८ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-

विन्यास • यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -न • रदीफः अपन निर्णय ।

पाठ-साक्ष्य : “भीड़मे राखू मान—अपन निर्णय” ; “गुरु-बापक बात सुनू, प्रश्नो करैत रहू” ; “मनमे राखू उड़ान—अपन निर्णय” ।

‘भीड़मे राखू मान—अपन निर्णय’ युवा सम्बन्धमे सहमति आ दबावक नैतिकता दैत अछि । दबावमे हँसि कऽ ‘हाँ’ कहब ठीक नहि—एकर सामाजिक व्यावहारिक अर्थ स्पष्ट अछि ।

५०१क भीड़मे अपन मान राखबाक सूत्र एतय फेर आबैत अछि । बाजबाक साहसकें नीक रूपसँ स्थापित करैत अछि, मुदा ‘उड़ान’ रूपकक अतिरिक्त विकास होइत तँ गजल अधिक दृश्यात्मक बनि सकैत ।

गजल ५७ : एक परिणाम

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरुज़ी । मात्रा-क्रमः

१४-२३ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-

विन्यास • यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -र • रदीफः अन्त नहि ।

पाठ-साक्ष्य : “एक परिणामक हार—अन्त नहि” ; “धीरे चलबो चलब अछि, रुकल रहब नहि” ; “आइक छोट हार—अन्त नहि” ।

एक परिणामक हार अन्त नहि—समयक भीतर अवसरक पुनरावर्तन एतुक आधार अछि । बन्द दुआरक बिम्ब बाहरी असफलताकें जीवन-यात्राक अन्य बाटसँ तुलना करैत अछि ।

४९८-४९९क फेर प्रयास आ परीक्षा-पछातिक बोध लगभग एतुक मूल अवधारणा । ‘अन्त नहि’ स्थिर रदीफ फेर उठबाक आशा दैत अछि, मुदा अनुभूतिगत नवपन सीमित ।

गजल ५८ : स्क्रीनक बाहर

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रम:

१८-२६ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-
विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -ेर • रदीफ: स्क्रीनक बाहर ।

पाठ-साक्ष्य : “कम अछि एतऽ शोर—स्क्रीनक बाहर” ; “गाछक पात हवा
लगिते गीत जकाँ हिलैए” ; “पैघ अछि ई भोर—स्क्रीनक बाहर” ।

स्क्रीनक बाहर मीतक चेहरा चित्रसँ बेसी ‘मोन’ रखैत अछि—एहि शेरमे प्रत्यक्ष
मीतताक मानवीय गहराइ भेटैत अछि । यन्त्र उपयोगी होइतो सम्पूर्ण जिनगी
नहि, ई सावधान सन्तुलनक कथन अछि ।

५०९ क मूल विचार एतय फेर आवैत अछि, जखनकि मीतक चेहरा नामक ठोस
छवि एतुक विशिष्ट अंश अछि । ४७७ आ ४८०सँ आवृत्ति-सम्बन्ध सेहो जाँचल
जाए ।

गजल ५९ : पहिल कमाइ

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रम:

१८-२६ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-
विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -म • रदीफ: हिसाब राखू ।

पाठ-साक्ष्य : “कतेक भेल काम—हिसाब राखू” ; “कमाइ गर्व अछि, मुदा देहक
थकान सेहो साँच” ; “बुझू ओकर दाम—हिसाब राखू” ।

‘पहिल कमाइ’मे पाइ केवल वस्तु नहि, श्रमक समय सेहो अछि । बचतकै
भविष्यक छोट सहारा बनाबयक विचार पहिल आमदनीक नैतिकता गढ़ैत अछि ।
‘हिसाब राखू’ रदीफ मौद्रिक सावधानी बनि एखनक किशोर-विषयसूत्रसँ अलग
ठोस वस्तु आनैत अछि । मुदा रकम, मेहनत आ खर्चक नाटकिय घटना नहि
देखाओल गेल; वित्तीय शिक्षा मुख्य ।

गजल ६० : प्रश्नक साहस

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरुज़ी । मात्रा-क्रमः

१४-२७ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-

विन्यास • यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -र • रदीफः पूछि लिअ ।

पाठ-साक्ष्य : “नहि बुझल विचार—पूछि लिअ” ; “जालजगतक प्रत्येक दाबी सत्य नहि होइ” ; “खोलू नब दुआर—पूछि लिअ” ।

‘प्रश्नक साहस’मे गुरु उत्तर देथि वा खोजबाक बाट देखैथि, दुनू प्रक्रियाकें अध्ययन मानल गेल अछि । ‘ज्ञान डराए नहि’ वाक्य प्रश्नक अधिकारक पक्षमे अछि ।

४१६क प्रश्न-सम्बन्धी कविता सँ साझा तर्क अछैत, इहाँ गुरु-शिष्यक सापेक्ष स्पष्ट परिस्थिति भेटैत अछि । तथापि वास्तविक विवादक उदाहरण जोड़लासँ दृष्टिकोण अधिक नाटकीय होइत ।

गजल ६१ : टीमक खेल

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरुज़ी । मात्रा-क्रमः

१७-२६ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-

विन्यास • यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ग • रदीफः संग खेलू ।

पाठ-साक्ष्य : “जीत हो वा हार, राखू उमंग—संग खेलू” ; “प्रतिद्वन्द्वी शत्रु नहि, खेलक दोसर पक्ष” ; “जीवन भरि संग—संग खेलू” ।

‘टीमक खेल’ जीत-हारक मानककें सामूहिक व्यवहारक कसौटी सँ बदलैत अछि ।

गलती पर मीतकें हँसाएबाक बदला हाथ बढ़ाबब सहकाजक जीवित दृश्य अछि ।

४७३क खेल-संघर्षसँ संवाद अछि, मुदा एतय पदकसँ ऊपर साझा स्मृतिक महत्त्व सामूहिक रूपेँ खुलैत अछि । कविता उपदेशात्मक होयतो मीतकें उठेबाक दृश्य पाठकें स्थिरता दैत अछि ।

गजल ६२ : पहिल कमाइ

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रम:

१७-२६ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-

विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -म • रदीफ: सोचि खर्चू ।

पाठ-साक्ष्य : “हाथमे आयल दाम—सोचि खर्चू” ; “महँग चीज किनलासँ मान पैघ नहि होइ” ; “बुझि ओकर परिणाम—सोचि खर्चू” ।

हाथमे आयल कमाइक दाम कतेक खर्च करब, कतेक घर आ बचत लेल राखब— ई किशोर आर्थिक जिम्मेदारीक व्यावहारिक विभाजन अछि ।

५१७क एके शीर्षक ‘पहिल कमाइ’ अछि । ५१७मे श्रमक समय आ हिसाबक आयह, ५२०मे खर्चक प्राथमिकताक निर्णय प्रधान अछि; दुनूक परस्पर पूरकता अछैत पुनरावृत्ति सेहो अभिलेखित रहबाक चाही ।

गजल ६३ : प्रश्नक साहस

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रम:

१५-२२ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-

विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -त • रदीफ: पूछि लिअ ।

पाठ-साक्ष्य : “जे नहि बुझलहुँ बात—पूछि लिअ” ; “गुरु सिखबैत छथि; प्रश्न सीखक शत्रु नहि” ; “फरिछ कऽ अपन बात—पूछि लिअ” ।

‘प्रश्नक साहस’मे नब ज्ञानक बाट आ दबल आघात, दूनु प्रश्नक अधिकारसँ जुडैत अछि । तर्कसँ ‘मुलाकात’ शब्द प्रश्नक संधर्ष नहि, जाँचक सहचर बनबैत अछि ।

५१८मे गुरु सँ प्रश्न करबाक प्रसंग छल; ५२१मे व्यक्तिगत चोटक बारेमे बाजब सेहो आबैत अछि । अलग अर्थक्षेत्र अछैत ‘पूछि लिअ’क एकरूपता शेरक भाव-विविधताकँ कखनो सीमित करैत अछि ।

गजल ६४ : टीमक खेल

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरुज़ी । मात्रा-क्रमः १७-२८ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास • यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -ग • रदीफः संग खेलू ।

पाठ-साक्ष्य : “जीत-हारक संग—संग खेलू” ; “अपन कौशल नीक, मुदा टीम बिना अधूरा” ; “राखि खेलक रंग—संग खेलू” ।

जीत आ हार दुनूक समय ‘संग खेलू’ टीमकें परिणामसँ ऊपर रखबाक आग्रह अछि । उत्साह साझा करबाक धुन टीमक आन्तरिक सम्बन्धपर केन्द्रित अछि । ५११क एके शीर्षकक टीमक खेलक अवधारणा एतय फेर आवैत अछि, मुदा एतय विशिष्ट गलती पर हाथ बढेबाक दृश्य नहि । एहि कारण मूल कथ्यक तुलनामे भावात्मक पुनरावृत्ति बेसी ।

गजल ६५ : कौशल

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरुज़ी । मात्रा-क्रमः १७-२४ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास • यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -म • रदीफः कौशल सीखू ।

पाठ-साक्ष्य : “केवल अंक नहि काम—कौशल सीखू” ; “जे रुचि अहाँक भीतर बारम्बार जागैए” ; “बुझू अपन परिणाम—कौशल सीखू” ।

अंकक संग कौशल सीखबाक आग्रह विद्यालयक मापन आ जीवनक दक्षता बीच भेद दैत अछि । विश्राम लेबाक उल्लेख श्रमक निरन्तर विकासकें टिकाउ बनबैत अछि ।

रदीफ ‘कौशल सीखू’ प्रसङ्गानुकूल अछि, मुदा कोन हुनर सीखल गेल, कओन विफल अभ्यास ठीक भेल—ई नहि देखल गेल । दृश्यात्मक अनुपस्थितिसँ काव्यक जगह पाठ्य-सुझावक स्वर प्रबल अछि ।

गजल ६६ : खराब दिन

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रम:

१५-२६ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-

विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -र • रदीफ: बस एक दिन ।

पाठ-साक्ष्य : “आइ भेटल जँ हार—बस एक दिन” ; “धीरे चलू, साँस लिअ, फेर शुरुआत करू” ; “ई छोट हार—बस एक दिन” ।

‘आइ भेटल जँ हार—बस एक दिन’ असफलताकें दीर्घ जीवनक लघु क्षण बनबैत अछि । बन्द दुआर आ आगू खुलल दुआरक रूपक व्यक्तिगत क्षतिक अनिवार्य स्थायित्वकें चुनौती दैत अछि ।

५०५ आ ५१५क समान शिक्षा पुन: आवैत अछि । ‘बस एक दिन’क काल-सीमा नव अभिव्यक्ति अछि, मुदा मूल आत्म-सुधारक वाक्य-व्यवस्था बहुते दोहरायल ।

गजल ६७ : टोली

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रम:

१६-२५ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-

विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -ग • रदीफ: टोलीमे ।

पाठ-साक्ष्य : “जीत अकेले नहि—संग टोलीमे” ; “हारि गेलहुँ तऽ दोष एकटा मीतपर नहि” ; “तखन बढ़त सभक संग टोलीमे” ।

‘टोली’मे पास देबाक क्रिया सामूहिक खेलक मूर्त दृश्य अछि, जे ‘जीत अकेले नहि’क तर्ककें समर्थन दैत अछि । सहयोगक धुन पुरस्कारसँ बेसी सम्बन्धकें महत्त्व दैत अछि ।

५१९ आ ५२२क टीम-विमर्शक पुनरागमन अछि, मुदा ‘पास’क सूक्ष्म व्यावहारिक क्रिया एतय विशिष्ट योगदान दैत अछि । एहि छोट क्रियाकें विस्तृत नाट्य रूप देबाक गुंजाइश छल ।

गजल ६८ : निर्णयक समय

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरुज़ी। मात्रा-क्रमः

१८-२५ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-

विन्यास • यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -ह • रदीफः कने समय दिअ।

पाठ-साक्ष्य : “नहि चुनू तुरत राह—कने समय दिअ” ; “काजक दुनिया दू-चारि नाम धरि नहि” ; “खोजू नबका राह—कने समय दिअ”।

‘नहि चुनू तुरत राह’ निर्णयमे समय लेबाक अधिकारक स्पष्ट मान्यता अछि। सभक सल्लाह सुनलाक बाद अपन निगाह सँ विकल्प देखब सामूहिक ज्ञान आ स्वतन्त्र विवेकक संगम बनबैत अछि।

५१३क भविष्यक बाटक तुलना मे ‘समय दिअ’क धीरज मुख्य नव बिन्दु अछि। मुदा प्रत्येक शेर एकहि सलाहक अलग नाम मात्र नब बनैत अछि; निर्णायक परिस्थिति अदृश्य।

गजल ६९ : पहिल खर्च

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरुज़ी। मात्रा-क्रमः

१८-२७ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-

विन्यास • यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -र • रदीफः हिसाब राखू।

पाठ-साक्ष्य : “जाइत छी जखन बजार—हिसाब राखू” ; “मीतक देखादेखी किनेब जरूरी नहि सभटा” ; “सीखू नीक व्यवहार—हिसाब राखू”।

पहिल खर्चक प्रसंग बजारक व्यावहारिक वातावरणमे शुरू होइत अछि। घर-परिवारक जरूरत देखिकऽ खर्चक पहिने विचार करब पहिल कमाइक सामाजिक दायित्व खोलैत अछि।

५१७ आ ५२०क पाइक प्रश्न एतय खर्चक निर्णय रूपेँ बढैत अछि। ‘हिसाब राखू’ मात्र गणनाक निर्देश नहि, परिवारक हिस्सा बनबाक आर्थिक पक्ष सेहो अछि; मुदा मूल्यक ठोस दृश्य सीमित।

गजल ७० : प्रश्न करू

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रम: १४-२४ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -ह • रदीफ: प्रश्न करू ।

पाठ-साक्ष्य : “नहि बुझाइ जे राह—प्रश्न करू” ; “गुरु प्रश्नसँ रुष्ट नहि, जिज्ञासा ज्ञानक साँस” ; “खोजू अपन राह—प्रश्न करू” ।

‘प्रश्न करू’क केन्द्र सल्लाह सुनलाक बादो अस्पष्ट बाटपर सवाल उठेबाक साहस अछि । एकर दायरा विद्यालयक पाठसँ बाहर निजी निर्णय धरि जाइत अछि ।

५१८-५२१क प्रश्नकाव्यक आवर्तन आ समान समापन रचना-नवपनक चुनौती अछि । नहि बुझबाक अवस्था वास्तविक अछि, मुदा कओन विषय नहि बुझल गेल से अघोषित ।

गजल ७१ : समाचार

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रम: १८-२५ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -र • रदीफ: पहिने जाँचू ।

पाठ-साक्ष्य : “जे भेटल समाचार—पहिने जाँचू” ; “मीत पठेलक कहि कऽ बात सत्य नहि भऽ जाए” ; “स्रोतक समाचार—पहिने जाँचू” ।

समाचार भेटलाक बाद ‘पहिने जाँचू’ स्रोत-प्रमाणक अनुशासन अछि । प्रचार आ आधारक भेद आधुनिक सूचना-समाजक प्रमुख समस्या पर कविता केन्द्रित करैत अछि ।

ई नैतिक आग्रह जरूरी अछि, मुदा स्वयंसिद्ध आदर्शकें कथानकक ठोस मिथ्या समाचारसँ टकरायल नहि गेल । ५३७ आ ५४६क समीप सन्देशसँ पुनरावर्तन अभिलेख योग्य ।

गजल ७२ : पहिल यात्रा

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरुञ्जी । मात्रा-क्रमः

१७-२६ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-

विन्यास • यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -न • रदीफः ध्यान राखू ।

पाठ-साक्ष्य : “पहिने बुझू स्थान—ध्यान राखू” ; “बाट भुला जाए तऽ पूछब लाजक बात नहि” ; “दूनूक समान मान—ध्यान राखू” ।

‘पहिल यात्रा’मे स्थान बुझब, कागज-पहिचान सम्हारब आ सावधान रहब देस-परदेसक पहिल गमनक ठोस व्यवहार अछि । ‘दूनूक समान मान’ सम्भवतः सहयात्रीक गरिमासँ सम्बन्धित अछि, मुदा स्पष्ट सन्दर्भ नहि ।

यात्रा-विषय किशोर गजलमे नव पाठ अछि । रदीफ ‘ध्यान राखू’क कारण कविता व्यवहारी सूची बनि जाइत अछि; यात्रा-स्मृतिक रंग/भय कम विकसित ।

गजल ७३ : पहिल भाषण

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरुञ्जी । मात्रा-क्रमः

१५-२५ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-

विन्यास • यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -र • रदीफः मञ्चपर ।

पाठ-साक्ष्य : “काँपए तइयो विचार मञ्चपर” ; “भूलि गेलहुँ एक पाँती तऽ साँस लिअ कने” ; “खुलि जाए संसार मञ्चपर” ।

मञ्चपर काँपैत गातक संग विचार राखबाक साहस ‘पहिल भाषण’क नाटकीय क्षण अछि । विषयक आधार आ सहज व्यवहारक सलाह आन्तरिक डरकें भाषिक अभ्याससँ जोडैत अछि ।

मञ्चक शरीरगत काँपब ऐ समूहक अन्य नीतिप्रधान गजलसभसँ अधिक विशेष दृश्य अछि । अन्तक ‘खुलि जाए संसार’ उत्कर्ष बनैत अछि, मुदा उपस्थित श्रोता आ प्रतिक्रिया अनकहल ।

गजल ७४ : पहिल असफलता

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रम: १६-२४ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -र • रदीफ: फेर जाउ ।

पाठ-साक्ष्य : “पहिल बेर भेटल हार फेर जाउ” ; “जे प्रश्न कठिन छल, ओहि पर फेर अभ्यास करू” ; “छोडि आइक हार फेर जाउ” ।

पहिल असफलताक बाद फेर जाइबक आग्रह बंद दुआरसँ दोसर दुआर धरि सक्रिय यात्रा बनबैत अछि । हार एखनक घटना अछि, स्थायी भाग्य नहि ।

५२४/५१५/४९८क समतुल्य नैतिक बोध पुन: आवैत अछि । ‘फेर जाउ’ रदीफ मार्गगतिकें रूप दैत अछि, मुदा भाव-अनुभवक नव प्रसंग कम ।

गजल ७५ : समूहक दबाव

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रम: १९-२६ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -त • रदीफ: सोचि कहू ।

पाठ-साक्ष्य : “जे मनकें नहि भावै बात सोचि कहू” ; “‘ना’ कहबो सम्बन्धक विरोध नहि होइ सभ दिन” ; “मनमे नहि राखू बात सोचि कहू” ।

समूहक दबावमे जे बात मनकें चोट पहुँचाबय, तकर उत्तर सोचि कऽ देबकें साहस मानल गेल अछि । ‘पहिने मुलाकात’ व्यक्ति-व्यक्ति संवादकें समूहक हल्लासँ अलग करैत अछि ।

५१४क दबाव-विमर्शसँ पुनरावृत्ति अछि, मुदा एहि गजलमे विचार करबाक विराम प्रमुख अछि । ‘सोचि कहू’क रदीफ स्वयं मूल्य-निर्णयक समय बनबैत अछि ।

गजल ७६ : डिजिटल विराम

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरुज़ी। मात्रा-क्रमः

१७-२६ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-

विन्यास • यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -ेर • रदीफः फोन राखू।

पाठ-साक्ष्य : “बहुत भेल ई शोर फोन राखू” ; “गाछक पात हवा लगिते गीत जकाँ हिलैए” ; “राति बहुत भेल, ई शोर फोन राखू”।

फोन राखबाक आग्रह जालजगतक शोरसँ निकलि आन्तरिक ध्यान आ रातिक विश्रामक पक्षमे अछि। ‘कने छोड़ू ओ डोर’ डिजिटल आकर्षणकें बाँधल डोरक रूपक दैत अछि।

४८९, ४९५ आ ५११क विषय एतय एके स्थानमे घुरैत अछि। मुदा समय-अन्त ‘राति बहुत भेल’ तत्काल परिस्थिति सूचित करैत अछि, जे सामान्य डिजिटल-विरोधसँ अधिक सटीक अछि।

गजल ७७ : समय बाँटू

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरुज़ी। मात्रा-क्रमः

१७-२४ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-

विन्यास • यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -ाल • रदीफः समय बाँटू।

पाठ-साक्ष्य : “पढ़ाइ अछि सवाल—समय बाँटू” ; “निन्न घटे तऽ बिहानक मन थाकल रहत” ; “राखू सभक खयाल—समय बाँटू”।

‘समय बाँटू’मे पढ़ाइ, निज हाल आ सम्बन्ध सभकें एकदिनक समान भाग मानल गेल अछि। ‘तोड़ू कने ओ जाल’ ध्यानक बाधाकें स्पष्ट शब्दचित्र दैत अछि।

४९०क ‘समयक हिस्सा’ एकहि विचारक पूर्व रूप अछि; एतय जाल-रूपक डिजिटल विचलनक नव सन्दर्भ जोड़ैत अछि। मुदा आयु-विशेषक समय-बँटवाराक वास्तविक असमानता नहि देखाइत।

गजल ७८ : पहिल जिम्मेदारी

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रम:

१७-२६ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-

विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -म • रदीफ: जिम्मेदारी लिअ ।

पाठ-साक्ष्य : “छोट हो तइयो काम—जिम्मेदारी लिअ” ; “चूक भऽ जाए तऽ बहाना बनब समाधान नहि” ; “अपन चुनल काम—जिम्मेदारी लिअ” ।

छोट काजक सेहो दायित्व लेब, पाइ केर दाम बुझब आ चुनल काज पूरा करब किशोर आत्मनिर्भरताक पक्ष अछि ।

‘नहि खोजू आराम’ काव्यक अन्य विश्रामसमर्थक गजल (५०६, ५३४) सँ सम्भावित वैचारिक तनाव रखैत अछि । प्रासङ्गिक सीमा ई जे जिम्मेदारी आ आराम परस्पर विरोधी नहि, मुदा पाठ ओकर अनुपात स्पष्ट नहि करैत ।

गजल ७९ : साँच जाँचू

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रम:

१७-२७ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-

विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -र • रदीफ: साँच जाँचू ।

पाठ-साक्ष्य : “आयल जँ समाचार—साँच जाँचू” ; “मीत पठेलक अछि, ताहिसँ बात सत्य नहि होइ” ; “तखन मानू समाचार—साँच जाँचू” ।

‘साँच जाँचू’मे समाचारक स्रोत आ प्रचारक प्रभावक अलग पहचान केन्द्रीय अछि । जाँचलाक बादे सूचना मानब अनुमान आ प्रमाणक स्पष्ट अन्तर बनाए रखैत अछि ।

५२९क ‘समाचार’क गजलसँ सूचनागत क्रम बहुत निकट अछि । काव्यगत रूपान्तरणक विशिष्ट दृश्य/वक्ता नहि; सामाजिक शिक्षाक पुनर्पाठ प्रमुख ।

गजल ८० : अपन आवाज

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरुज़ी। मात्रा-क्रमः

१५-२६ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-

विन्यास • यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -त • रदीफः खुलि बाजू।

पाठ-साक्ष्य : “मोनमे अछि जँ बात—खुलि बाजू” ; “नम्रता चुप्पी नहि, अपन मत सेहो जरूरी” ; “नेहसँ दिन-रात—खुलि बाजू”।

‘अपन आवाज’ मे दबल आघात खुलि बाजबाक आग्रह बनि सामने अबैत अछि। राति लम्बा भेलापर अनुभूतिजन्य दुख गोपन नहि राखबाक सल्लाह मानसिक सहायताक क्षेत्र खोलैत अछि।

‘खुलि बाजू’ रदीफ बारम्बार साहसक निमन्त्रण अछि। ५१२क सहायता माँगबाक गजलसँ विषय सम्बन्ध अछि; एतय सहायता नहि, अभिव्यक्ति स्वयं लक्ष्य बनैत अछि।

गजल ८१ : परीक्षा बाद

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरुज़ी। मात्रा-क्रमः

२१-२६ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-

विन्यास • यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -र • रदीफः कने विश्राम करू।

पाठ-साक्ष्य : “मोनपर बेसी भार—कने विश्राम करू” ; “काल्हि फेर पोथी खोलब, नव ढंगसँ पढ़ब” ; “देहक सुनू पुकार—कने विश्राम करू”।

परीक्षाक बाद विश्रामक आग्रह परिणामक मानसिक भार आ देहक पुकारकँ एकसंग मान्यता दैत अछि। हारसँ सीखब आ दोसर दुआर खुलबाक कल्पना पुनर्निर्माणक क्रम बनबैत अछि।

४९९क परीक्षाक बादक भावक आवर्तन अछि; एतय देहक विश्रामक अधिक स्पष्ट आग्रह अछि। ‘कने विश्राम करू’ रदीफक कारण व्यावहारिक उद्देश्य प्रबल आ बिम्बक स्वतन्त्रता कम।

गजल ८२ : मीतक सीमा

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रम: १७-२७ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -न • रदीफ: सीमा राखू ।

पाठ-साक्ष्य : “अपन मनक मान—सीमा राखू” ; “ना कहब कटुता नहि, अपन निर्णयक अधिकार” ; “नेहक ई सम्मान—सीमा राखू” ।

‘मीतक सीमा’मे नेह आ आत्मपहिचान एक-दोसराक विरोधी नहि । ‘सीमा राखू’ कहैत सम्बन्धमे सम्मानक स्पष्ट शर्त राखल गेल अछि ।

४९२ आ ५१४क निज सीमा-आत्मसम्मानक विषय फेर लौटैत अछि । एतय मीतक सम्बन्ध अलग केन्द्र बनलासँ व्याख्या अधिक निर्दिष्ट, मुदा शेरसभ कथनसूचक अछि ।

गजल ८३ : अपन लय

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रम: १८-२७ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -ल • रदीफ: अपन लय राखू ।

पाठ-साक्ष्य : “भीड़क अलग चाल—अपन लय राखू” ; “एक दिन धीम रहब असफल होएब नहि होइ” ; “सोचि चुनू चाल—अपन लय राखू” ।

भीड़क चालक तुलनामे अपन लय राखब व्यक्तिगत समयक स्वाधीनता अछि । ताल/लयक संगीतात्मक रूपक दौड़क बाह्य गति सँ भीतरी संतुलन धरि अनैत अछि ।

५०२ ‘अपन ताल’ आ ४८७ ‘अपन गति’क एके तर्क फेर आयल अछि । लयक छविक वास्तविक संगीतात्मक विकास नहि होयब शिल्पगत सीमा ।

गजल ८४ : मीतक पहिचान

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रम:

१६-२४ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-

विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -त • रदीफ: मीत चिन्हू ।

पाठ-साक्ष्य : “जे सुनए मनक बात—मीत चिन्हू” ; “जे अहाँक सफलतापर

ईर्ष्या नहि करए” ; “ओकर साँच बात—मीत चिन्हू” ।

मीत पहचानबाक तीन व्यवहार—मनक बात सुनब, चोट सम्हारब, कठिन राति संग रहब—एकटा सम्बन्धक भरोसा सिद्ध करैत अछि ।

५५९ आ ४९७क मीत चयन-विमर्शक निकट अछि, मुदा संकटमे टिकबाक निर्दिष्ट समय ‘कठिन रात’क उल्लेख रचनाकें सघन बनबैत अछि ।

गजल ८५ : डरक पार

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रम:

१५-२६ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-

विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -र • रदीफ: आगाँ बढू ।

पाठ-साक्ष्य : “भेटल जँ हार—आगाँ बढू” ; “छोट-छोट पग जोड़ि पैघ दूरी पार होइ” ; “सम्हारि अपन भार—आगाँ बढू” ।

‘डरक पार’मे हारक बाद साफ विचार, नीक आधार आ भार सँभारि अगिला कदमक क्रम अछि । साहसकें आवेग नहि, क्रमिक विवेकक परिणाम मानल गेल अछि ।

४८४, ४९८ आ ५२४क पुनर्प्रयास-विमर्श दोहरायल अछि । अलग भयक परस्थितिक विशिष्ट दृश्य नहि, तँ रचना नैतिक संक्षेप रहैत अछि ।

गजल ८६ : आरम्भ

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रम:

२१-२४ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: निकट-

सममात्रिक मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -र • रदीफ: एखन आरम्भ करू ।

पाठ-साक्ष्य : “मोनपर नहि भार—एखन आरम्भ करू” ; “अटकू तऽ मीत वा गुरु सँ पूछि फेर चलू” ; “नहि मानू ई हार—एखन आरम्भ करू” ।

‘आरम्भ’ शीर्षक काज शुरू नहि करबाक जड़ताकें सम्बोधित करैत अछि । भार बाँटि लेब आ समयकें आधार बनाबब आरम्भक सामूहिकता आ धैर्य दुनू पहलू खोलैत अछि ।

सामान्य ‘फेर प्रयास’ गजलसभसँ ई भिन्न अछि कारण एतय विफलता पाछाँ नहि, शुरू करबाक पहिल प्रतिरोध विषय अछि । रदीफ ‘एखन आरम्भ करू’ तत्कालता बनबैत अछि ।

गजल ८७ : रुचिक बाट

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रम:

१७-२४ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-

विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -न • रदीफ: अपन रुचि चिन्हू ।

पाठ-साक्ष्य : “जे करिते बढ़ए ज्ञान—अपन रुचि चिन्हू” ; “रुचि संग अनुशासन जुड़त तखन कौशल फलत” ; “बढ़त तखन ज्ञान—अपन रुचि चिन्हू” ।

जे काज करिते ज्ञान बढ़य ओहि रुचिक पहिचान करबाक आग्रह बालकक विषय-चयनक भीतरी कसौटी प्रस्तुत करैत अछि ।

४८१ ‘विषय अपन’ आ ५०० ‘अपन विषय’क पुनरावर्तन उल्लेखनीय अछि ।

‘उड़ान’क रूपक प्रेरक, मुदा व्यावहारिक रुचिक कओन उदाहरण रचनामे नहि ।

गजल ८८ : साँचक जाँच

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रमः

२०-२८ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-

विन्यास • यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -र • रदीफः जाँचि तखन मानू ।

पाठ-साक्ष्य : “आयल जँ समाचार—जाँचि तखन मानू” ; “मीत पठओलक तइयो

साँच होएब जरूरी नहि” ; “रोकू असत्य प्रचार—जाँचि तखन मानू” ।

‘साँचक जाँच’ समाचारक मूल आधार देखबाक बादे स्वीकृति देबाक आग्रह अछि । ‘असत्य प्रचार रोकू’ व्यक्तिगत पढ़बाक अभ्याससँ सार्वजनिक जिम्मेदारी दिस विस्तार अछि ।

५२९ आ ५३७क समाचार-समीक्षा एकहि नैतिक निचोड़ लैत अछि । एतय

असत्यक प्रसार रोकब नव सक्रिय पक्ष अछि, मुदा शिल्पमे आवर्तन तखनो

बहुत ।

गजल ८९ : नब मीत

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रमः

१८-२७ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-

विन्यास • यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -र • रदीफः धीरे चिन्हू ।

पाठ-साक्ष्य : “नब मीतक व्यवहार—धीरे चिन्हू” ; “मीत ओ जे कठिन घड़ीमे

उपहास नहि करए” ; “देखू सभ व्यवहार—धीरे चिन्हू” ।

नव मीतक व्यवहार धीरे चिन्हब मित्रताक धीरजक पाठ अछि । भरोसा तुरन्त

नहि बने, विवेकसँ बने—ई किशोर सामूहिक जीवनक युक्तिसंगत दृष्टि अछि ।

‘धीरे चिन्हू’क रदीफ सम्बन्धक कालिक वृद्धि बतबैत अछि । ४९७क मीत-चयन तुलना मे इहाँ जल्दी निर्णय नहि देबाक बल बेसी ।

गजल १० : भूल स्वीकार

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रमः १६-२८ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास • यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -र • रदीफः साँच कहू ।

पाठ-साक्ष्य : “भूल भेल—स्वीकार, साँच कहू” ; “जे बिगड़ल से फेर बनि सकै धैर्य आ श्रमसँ” ; “करू खुलि स्वीकार—साँच कहू” ।

भूल स्वीकार करबाक साहस अहंकार घटबैत आ मनक भार हलुक करैत अछि । ‘साँच कहू’ रदीफ सत्यबाजीक प्रत्यक्ष आह्वान अछि ।

५०५क भूलसँ सीखबाक पाठ एतय आत्म-स्वीकृति रूपेँ फेर आबैत अछि । किन्तु ककरो लग क्षमा मँगवाक दृश्य आ गलतीक असर अनकहल रहैत अछि ।

गजल ११ : एखन करू

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रमः १६-२७ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास • यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -म • रदीफः एखन करू ।

पाठ-साक्ष्य : “जे छोट अछि काम—एखन करू” ; “एक काज पूरा कऽ तखन दोसर दिस पग धरू” ; “सँभारू अपन काम—एखन करू” ।

‘एखन करू’ छोट काजकेँ टारबाक मनोवृत्तिक प्रतिवाद अछि । परिणामक डर छोड़ी काज शुरू करब एतुक समय-दर्शन अछि ।

५४४क आरम्भ-विमर्शसँ घनिष्ठ निकटता अछि, मुदा एतय छोट आकारक काज पर बल अछि । गजलक पदावली जेहेन योजनासूची, काव्यचित्र कम ।

गजल १२ : प्रश्न पुछू

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूज़ी। मात्रा-क्रमः

१५-२४ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-

विन्यास • यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -ह • रदीफः प्रश्न पुछू।

पाठ-साक्ष्य : “बुझबाक जँ अछि चाह—प्रश्न पुछू” ; “गुरु, पोथी, मीत—सभसँ

सीखबाक बाट खुलल” ; “साँचक राखू चाह—प्रश्न पुछू”।

‘प्रश्न पुछू’मे ज्ञानक अथाह जगतक स्वीकार प्रश्नकै अनुशासन बनबैत अछि।

बुझबाक जिज्ञासा हीनता नहि, विस्तारक प्रवेशद्वार अछि।

५१८, ५२१, ५२८क अनवरत प्रश्न-परम्परा एतय फेर उपस्थित अछि। नव

अनुभव वा तर्क-विवादक विस्तारक अभाव पुनरुक्ति बढबैत अछि।

गजल १३ : काज बाँटू

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूज़ी। मात्रा-क्रमः

१६-२५ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-

विन्यास • यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -र • रदीफः संग करू।

पाठ-साक्ष्य : “एक्के माथ नहि भार—संग करू” ; “श्रेय अकेले नहि, सभक

श्रमक हिस्सा मानू” ; “हलुक होएत भार—संग करू”।

‘काज बाँटू’क मूल विचार एक माथपर सभ भार नहि रखबाक सामूहिक विवेक

अछि। श्रम आ सम्मानक सम्बन्ध साझा जिम्मेदारीमे स्पष्ट होइत अछि।

४९०/५३५क समय बाँटबाक धारासँ ई भिन्न अछि कारण विषय समय नहि, श्रम-

दायित्वक वितरण अछि। शेरसभमे संग काजक एकटा दृश्य रहिते गहिराइ बढैत।

गजल १४ : अपन गति

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रम:

१८-२९ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -न • रदीफ: अपन गति राखू ।

पाठ-साक्ष्य : “बाटपर राखू ध्यान—अपन गति राखू” ; “विश्रामो यात्रा केर अंश, आलस नहि बुझू” ; “राखू साफ ध्यान—अपन गति राखू” ।

अपन गति राखब बाहरी तुलना सँ मुक्ति आ श्रमक निज मानक स्वीकृति अछि । बाटपर ध्यान दैत रहब आत्मनियन्त्रणक व्यावहारिक रूप अछि ।

४८७ आ ४९३ सहित एहि नामक अनेक गजल पहिनेसँ अछि । 'अपन गति'क पुनरावर्तनमें भाव-आविष्कार कम, एके प्रेरक अवधारणाक रूपभेद बेसी ।

गजल १५ : नब हुनर

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रम:

१८-२७ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -र • रदीफ: सीखैत रहू ।

पाठ-साक्ष्य : “खोलू नबका दुआर—सीखैत रहू” ; “दोसरक गति देखिकऽ अपन पगकँ छोट नहि मानू” ; “धीरज संग सुधार—सीखैत रहू” ।

‘नब हुनर’ सीखबक प्रक्रिया धीरजसँ सुधार करबाक प्रतिज्ञा अछि । नब दुआरक रूपक सीखबाक सामर्थ्यक विस्तार सूचित करैत अछि ।

५२३ ‘कौशल’क संग विषयगत निकटता अछैत इहाँ समयान्तरक क्रमिक वृद्धि अधिक प्रमुख अछि । ठोस कौशल/वस्तुक नाम नहि होएब शिल्पगत सीमा ।

गजल १६ : बात जाँचू

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरुज़ी । मात्रा-क्रमः

१८-३० मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-

विन्यास • यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -र • रदीफः पहिने जाँचू ।

पाठ-साक्ष्य : “आएल जँ समाचार—पहिने जाँचू” ; “मीत कहलक मात्रे सँ प्रमाण पूरा नहि भऽ जाए” ; “राखू ई विचार—पहिने जाँचू” ।

‘बात जाँचू’मे समाचार, ठोस आधार आ झूठ प्रचार रोकबाक स्पष्ट क्रम अछि ।

एखनकैँ पाठकक सूचना-साक्षरताक मूल्य उल्लेखनीय अछि ।

५२९, ५३७, ५४६क शब्दक पुनरावर्तन अत्यन्त प्रखर अछि । नव दृश्य किंवा भिन्न नीतिगत दुविधाक अभाव एहि स्वतंत्र गजलक काव्यात्मक आवश्यकता प्रश्नबद्ध करैत अछि ।

गजल १७ : लिखि कऽ बुझू

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरुज़ी । मात्रा-क्रमः

१६-३० मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-

विन्यास • यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -व • रदीफः लिखि कऽ बुझू ।

पाठ-साक्ष्य : “मनमे उठल भाव—लिखि कऽ बुझू” ; “दिनक छोट उपलब्धि सेहो मोनकैँ बल दैत अछि” ; “फेर पढ़ू मनक भाव—लिखि कऽ बुझू” ।

‘लिखि कऽ बुझू’ मनक भावकैँ पन्नापर राखि फेर पढ़बाक आत्ममंथनक काव्य-प्रक्रिया अछि । लिखब केवला अभिव्यक्ति नहि, स्वयं अपन विचारक दूरीसँ परीक्षण अछि ।

अन्य किशोर उपदेशक गजलसँ एतुक विशिष्टता ई अछि जे लेखनक स्वयं-वाचनक ठोस अभ्यास देल अछि । मुदा किस भावकैँ फेर पढ़िते बदलि गेल से नदेखाएल ।

गजल १८ : एक काज

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रम:

१८-२९ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-

विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -न • रदीफ: एक काज करू ।

पाठ-साक्ष्य : “पहिने राखू ध्यान—एक काज करू” ; “पूरा भेल तऽ अपन श्रमकें छोड़ कहि नहि टारू” ; “मोन रहत एकतान—एक काज करू” ।

‘एक काज’ एक बेरमे एकटा विषयपर ध्यान देबाक आग्रह अछि । अनेक काजक थकानकें ध्यानक विखण्डनसँ जोड़ल गेल अछि ।

५११क ‘ध्यानक डोर’सँ घनिष्ट सम्बन्ध अछि, मुदा एतय डिजिटल पर्दा नहि, सामान्य एकाग्रता केन्द्र अछि । रदीफ ‘एक काज करू’ सूचीमूलक रूप लेलैत अछि ।

गजल १९ : रिसक बेर

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रम:

१५-२७ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-

विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -स • रदीफ: कने थमू ।

पाठ-साक्ष्य : “गहिरी लिअ साँस—कने थमू” ; “मतभेद मीतक नेह मिटबैत नहि, जँ मन खुलल” ; “फेर करू प्रयास—कने थमू” ।

रिसक बेर गहिर साँस लऽ थमव भावोन्मेष सँ पहिने मानसिक विराम बनबैत अछि । उत्तर देबाक पहिने समझबाक प्रशिक्षण सम्बन्धक तनाव घटबैत अछि ।

‘कने थमू’ रदीफ वास्तविक श्वसन-क्षणक गति अनुकृत करैत अछि; एहि कारण अन्य उपदेशात्मक गजलसँ एकर लय अधिक सजीव अछि । मुदा कोन रिसक प्रसङ्ग अछि से अनकहल ।

गजल १०० : अपन माप

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः

१७-२९ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-

विन्यास • यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -न • रदीफः अपन माप रखू ।

पाठ-साक्ष्य : “अपन श्रमक मान—अपन माप रखू” ; “तुलना कम, अभ्यास बेसी—हुनर अपने गहिराए” ; “फेर चिन्हू पहिचान—अपन माप रखू” ।

‘अपन माप’ श्रमक मान आ आत्मपहिचानकेँ बाह्य प्रतिस्पर्धासँ अलग करैत अछि । अपन प्रगतिकेँ स्वयं परखबाक आग्रह शिक्षक आ अंकक सत्ता सीमित करैत अछि ।

४८५/५०३क आत्ममूल्यांकनक मूल अवधारणा पुनः आबैत अछि । रदीफक रूपमे मापकक प्रत्यक्ष वस्तु नहि, रूपकात्मक अवधारणा प्रधान अछि ।

गजल १०१ : मीत चुनू

मूल पाठक रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रमः

१७-२९ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-

विन्यास • यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -र • रदीफः मीत चुनू ।

पाठ-साक्ष्य : “पहिने बुझू विचार—मीत चुनू” ; “भूल कहए तऽ रिस नहि, साँच कहए तऽ संग नहि छोड़य” ; “मोन खोलय दुआर—मीत चुनू” ।

‘मीत चुनू’मे सोच, अधिकार आ खुलल मोन मित्रताक कसौटी बनैत अछि ।

‘राखय सभक अधिकार’क शेर निजी सम्बन्धसँ साझा गरिमाक सम्बन्ध जोड़ैत अछि ।

४९७ आ ५४७क मीत-चयनपरम्परा फेर उपस्थित अछि । अधिकारक शब्द एहि रचनाकेँ अधिक नागरिक-सामाजिक दिशा दैत अछि, मुदा उदाहरणक ठोस प्रसंग सीमित ।

गजल १०२ : कने-कने सीखू

मूल पाठक रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रम: २०-२८ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -र • रदीफ: कने-कने सीखू ।

पाठ-साक्ष्य : “राखू स्पष्ट विचार—कने-कने सीखू” ; “जे नहि बूझल, पुछव ज्ञानक दुआर खोलैत अछि” ; “लेत अपन आकार—कने-कने सीखू” ।

‘कने-कने सीखू’ छोट चरणक संचयकें शिक्षा मानैत अछि । एक-एक करि पार होइत कठिनाइ कौशलक आकार लेबाक दृश्यात्मक सादगी अछि ।

५५३क हुनर-निखारक संग समरूप धैर्य अछि । ‘कने-कने’क दोहराव अपन ध्वनि सँ क्रमिक प्रयासक चाल रचैत अछि, मुदा शिक्षणक वास्तविक सामग्री नहि खुलैत ।

गजल १०३ : अपन स्वर

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रम: १७-२९ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -न • रदीफ: अपन स्वर राखू

मूल पाठ-साक्ष्य : “अपन बातक मान—अपन स्वर राखू” ; “राखू एहि पर ध्यान—अपन स्वर राखू” ; “जीवन बनत गान—अपन स्वर राखू” । मूल गजलमे १० मिसरा अछि ।

एहि गजलमे “अपन स्वर” व्यक्तिक स्वायत्तता अछि, मुदा स्वायत्तता आनक मत नहि सुनबाक छूट नहि । “सभक मत सुनब नीक”क बाद “मोनक प्रश्नो सुनू” रखला सँ आत्मनिर्णय संवादमे बनैत अछि, एकान्तमे नहि ।

अन्तिम शेरक संगीत-उपमा काव्यक भीतरक दृश्यात्मक क्षण अछि: अलग स्वर मेल रचि सकैत अछि । मुदा पहिनुक तीन शेर सलाहक अमूर्त शब्दमे बेशी निर्भर अछि; स्वरक कोई वास्तविक विवाद-वृत्तान्त नहि आबैत ।

रूपगत सावधानी : छपल “मात्रा-क्रम” घोषित उच्चारणाधारित सीमा अछि,
प्रमाणित पारम्परिक अरूज़ी बहर नहि। वास्तविक पाँतिक लघु-गुरु भारक पृथक
श्रवण-परीक्षणसँ मात्र छन्द-सिद्धिक अन्तिम निर्णय सम्भव अछि।

गजल १०४ : भूलसँ सीखू

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूज़ी। मात्रा-
क्रम: १७-२८ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-
विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -र • रदीफ: भूलसँ सीखू

मूल पाठ-साक्ष्य : “करू अपन स्वीकार—भूलसँ सीखू” ; “आनू नब सुधार—
भूलसँ सीखू” ; “साँच बनत आधार—भूलसँ सीखू”। मूल गजलमे १० मिसरा
अछि।

“भूल नुकवैत रहब”क शर्त एहि गजलकें चूक-सुधारक नीति मात्र नहि,
आत्मप्रमाणिकताक प्रश्न बनबैत अछि। दोष स्वीकार, फेर पुछब आ दोसरक
चूकपर नहि हँसब—तीन स्तर एक-दोसरासँ जुड़ल अछि।

रदीफ “भूलसँ सीखू” लगातार सीखबाक दिशा स्पष्ट करैत अछि, मुदा सभ शेर
सकारात्मक सूत्रक रूपमे अछि। जँ एकटा विशिष्ट असफल प्रयोग वा संवाद
रहैत तँ आग्रहक भावनात्मक घनत्व बढ़ित।

रूपगत सावधानी : छपल “मात्रा-क्रम” घोषित उच्चारणाधारित सीमा अछि,
प्रमाणित पारम्परिक अरूज़ी बहर नहि। वास्तविक पाँतिक लघु-गुरु भारक पृथक
श्रवण-परीक्षणसँ मात्र छन्द-सिद्धिक अन्तिम निर्णय सम्भव अछि।

गजल १०५ : बेर बाँटू

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूज़ी। मात्रा-
क्रम: १७-२६ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-
विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -म • रदीफ: बेर बाँटू

मूल पाठ-साक्ष्य : “पहिने चुनू काम—बेर बाँटू” ; “एक-एक कऽ नाम—बेर बाँटू” ; “दिअ उचित आराम—बेर बाँटू” । मूल गजलमे १० मिसरा अछि ।

“पढ़ब, खेलब, घरक काज”क त्रयी किशोर दिनचर्याक सामाजिक वास्तविकता लैत अछि । विश्राम आ निन्नकैँ श्रमक विरोधी नहि, आवश्यक भाग मानब एहि गजलक तर्क अछि ।

“एक-एक कऽ नाम” वला क्रम-विधान काजक बाँटनीक छोटी क्रिया देखबैत अछि । दिनचर्याक ई व्यावहारिकताकैँ गजल ५७१ फेर उठबैत अछि; ताहि तुलना मे एहि पाठक काफिया “काम/विराम/नाम/परिणाम/ठाम/आराम” अपेक्षाकृत ठोस अछि ।

रूपगत सावधानी : छपल “मात्रा-क्रम” घोषित उच्चारणाधारित सीमा अछि, प्रमाणित पारम्परिक अरूजी बहर नहि । वास्तविक पाँतिक लघु-गुरु भारक पृथक श्रवण-परीक्षणसँ मात्र छन्द-सिद्धिक अन्तिम निर्णय सम्भव अछि ।

गजल १०६ : साँच लिखू

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी । मात्रा-क्रम: १६-२६ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -न • रदीफ: साँच लिखू

मूल पाठ-साक्ष्य : “जतए भेटए ज्ञान—साँच लिखू” ; “राखू एहि पर ध्यान—साँच लिखू” ; “बनत निज पहिचान—साँच लिखू” । मूल गजलमे १० मिसरा अछि ।

“जे नहि बूझल से नहि गढ़ू” एहि कृतिक सर्वाधिक स्पष्ट प्रमाणनीति अछि । सुनल सूचना, अनुमान आ साक्ष्यक बीच दूरी राखब लेखनक नैतिक आधार बनैत अछि ।

कविता शब्दकैँ अपन आत्मपहिचानक दर्पण मानैत अछि; एहि उपमानमे जिम्मेदारी लेखकक भीतर घुसैत अछि। परन्तु लेखक आ स्रोतर टकरावक कोनो उदाहरण नहि, अतः प्रमाणमीमांसा सूत्रात्मक स्तरपर रुकैत अछि।

रूपगत सावधानी : छपल “मात्रा-क्रम” घोषित उच्चारणाधारित सीमा अछि, प्रमाणित पारम्परिक अरूज़ी बहर नहि। वास्तविक पाँतिक लघु-गुरु भारक पृथक श्रवण-परीक्षणसँ मात्र छन्द-सिद्धिक अन्तिम निर्णय सम्भव अछि।

गजल १०७ : सुनि कऽ बाजू

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूज़ी। मात्रा-क्रमः १७-२९ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास • यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -र • रदीफः सुनि कऽ बाजू

मूल पाठ-साक्ष्य : “राखू स्पष्ट विचार—सुनि कऽ बाजू” ; “सुनू ओकर हँकार—सुनि कऽ बाजू” ; “खुलत नेहक दुआर—सुनि कऽ बाजू”। मूल गजलमे १० मिसरा अछि।

मीतक दुख सुनैत समय बीचमे अपन बात नहि आनबाक निर्देश एक ठोस संवाद-परिस्थिति रचैत अछि। एहि शेरसँ सुनबाक क्रिया सामाजिक सहानुभूतिक रूप लैत अछि।

“व्यक्ति नहि, विषय पर चर्चा” विवादक नैतिक पद्धति होयत, मुदा कविता असहमतिक कठोरता खोलैत नहि। ‘सुनि कऽ बाजू’ रदीफक साँस-जकाँ आवर्तन विषय अनुरूप अछि।

रूपगत सावधानी : छपल “मात्रा-क्रम” घोषित उच्चारणाधारित सीमा अछि, प्रमाणित पारम्परिक अरूज़ी बहर नहि। वास्तविक पाँतिक लघु-गुरु भारक पृथक श्रवण-परीक्षणसँ मात्र छन्द-सिद्धिक अन्तिम निर्णय सम्भव अछि।

गजल १०८ : कौड़ी बचाउ

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूज़ी। मात्रा-क्रम: १८-३१ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -र • रदीफ: कौड़ी बचाउ

मूल पाठ-साक्ष्य : “पहिने करू विचार—कौड़ी बचाउ” ; “कम राखू उधार—कौड़ी बचाउ” ; “श्रमक ई उपहार—कौड़ी बचाउ”। मूल गजलमे १० मिसरा अछि।

बाजारमे “जे चाही” आ “जे मन ललचाबए”क विभेद खर्चक नीति केँ उपभोक्ता-मन:स्थितिक आलोचना बनबैत अछि। कमाइक पाछाँक श्रम मोनमे रखबाक अन्तिम आग्रह आर्थिक कर्तव्यक सामाजिक आधार होइत अछि।

ई गजल खर्चक निर्णयकेँ मीतक देखादेखीसँ मुक्त करबाक प्रयत्न अछि। मुदा कौड़ी, बाजार आ उधारक ठोस सम्भावनासँ बनल नाटकीय कथा नहियै; अधिकांश शेर निर्देशनात्मक रहि जाइत अछि।

रूपगत सावधानी : छपल “मात्रा-क्रम” घोषित उच्चारणाधारित सीमा अछि, प्रमाणित पारम्परिक अरूज़ी बहर नहि। वास्तविक पाँतिक लघु-गुरु भारक पृथक श्रवण-परीक्षणसँ मात्र छन्द-सिद्धिक अन्तिम निर्णय सम्भव अछि।

गजल १०९ : गाछ रोपू

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूज़ी। मात्रा-क्रम: १६-३० मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -र • रदीफ: गाछ रोपू

मूल पाठ-साक्ष्य : “अँगना आनू बहार—गाछ रोपू” ; “हरियर करू संसार—गाछ रोपू” ; “धरती पहनत हार—गाछ रोपू”। मूल गजलमे १० मिसरा अछि।

गाछ रोपबाकेँ छाँह, चिड़ैक घर आ बिहानक गीतसँ जोड़ला पर पारिस्थितिकी जीवित सम्बन्ध बनैत अछि। “नन्हि बिरबा” सँ “पैघ छाँह” धरि समयक विस्तारण अर्थपूर्ण अछि।

“धरती हरियर वस्त्र पहिरत” पारम्परिक मानवीकरण अछि; ‘धरती पहनत हार’मे सेहो सजावट प्रमुख अछि। रोपल बिरबाक पानि, रक्षा वा स्थानीय जलाभाव नहि आबैत, फलतः पर्यावरणीय आशा सौन्दर्यपर अधिक टिकैत अछि।

रूपगत सावधानी : छपल “मात्रा-क्रम” घोषित उच्चारणाधारित सीमा अछि, प्रमाणित पारम्परिक अरूजी बहर नहि। वास्तविक पाँतिक लघु-गुरु भारक पृथक श्रवण-परीक्षणसँ मात्र छन्द-सिद्धिक अन्तिम निर्णय सम्भव अछि।

गजल ११० : प्रश्न लिखू

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रमः १४-२९ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास • यतिः अर्थ-तलय अनुसार। काफियाः -र • रदीफः प्रश्न लिखू

मूल पाठ-साक्ष्य : “जागल जँ विचार—प्रश्न लिखू” ; “खोलू बुझबाक दुआर—प्रश्न लिखू” ; “पढ़ू खुलल संसार—प्रश्न लिखू”। मूल गजलमे १० मिसरा अछि।

एक उत्तर फेर दोसर प्रश्नक बाट खोलैत अछि—ई निरन्तर संशोधनशील ज्ञानक मूल संकल्पना अछि। गुरु, पोथी आ प्रकृतिक अनेक स्रोतक उल्लेख जिज्ञासाकँ विद्यालयक भीतर सीमित नहि राखैत।

रदीफ “प्रश्न लिखू” जिज्ञासाकँ अभिलेख बनबैत अछि; लिखित प्रश्न फेर जाँचबाक सम्भावना देत। मुदा कविता स्वयं कोनो असमाधेय प्रश्न उपस्थित नहि करैत; अतः स्वर शिक्षणात्मक।

रूपगत सावधानी : छपल “मात्रा-क्रम” घोषित उच्चारणाधारित सीमा अछि, प्रमाणित पारम्परिक अरूजी बहर नहि। वास्तविक पाँतिक लघु-गुरु भारक पृथक श्रवण-परीक्षणसँ मात्र छन्द-सिद्धिक अन्तिम निर्णय सम्भव अछि।

गजल १११ : मीतक मान

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूज़ी। मात्रा-क्रम: १५-३३ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -न • रदीफ: मान राखू

मूल पाठ-साक्ष्य : “मीतक अपन मान—मान राखू” ; “शब्दपर दिअ ध्यान—मान राखू” ; “भिन्न स्वरक गान—मान राखू”। मूल गजलमे १० मिसरा अछि।

हँसीक सीमा दोसरक दुख पर तय होइत अछि। विश्वासमे कहल गोपन बातक रक्षा एकर नैतिक केन्द्र अछि, जाहिसँ मीतता केवल संगत नहि, जिम्मेदारी बनैत अछि।

अन्तमे भिन्न स्वरक गान बिम्ब मतभेदक स्वीकृति अछि। एहि गजलक कथ्य ५५९१ क मीत-चयनसँ जुड़ैत अछि, मुदा एतय जोर “चुनब” पर नहि, सम्बन्ध निभेबाक भाषा पर अछि।

रूपगत सावधानी : छपल “मात्रा-क्रम” घोषित उच्चारणाधारित सीमा अछि, प्रमाणित पारम्परिक अरूज़ी बहर नहि। वास्तविक पाँतिक लघु-गुरु भारक पृथक श्रवण-परीक्षणसँ मात्र छन्द-सिद्धिक अन्तिम निर्णय सम्भव अछि।

गजल ११२ : सपन सँ काज

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूज़ी। मात्रा-क्रम: १६-३१ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -न • रदीफ: काज धरू

मूल पाठ-साक्ष्य : “सपन पर दिअ ध्यान—काज धरू” ; “श्रम बनत पहिचान—काज धरू” ; “मोन लए उड़ान—काज धरू”। मूल गजलमे १० मिसरा अछि।

सपन केँ “छोट-छोट डेगमे धरती पर उतरैत” देखेबाक क्रिया आकांक्षाकेँ दृश्य देत। लक्ष्यक पाछाँ लगातार हाथक काज रहब आन प्रेरक गजलसभसँ भिन्न रूपकात्मक बल रखैत अछि।

पहिल असफलता पछाति फेर सीखबक सलाह ५६२क संग जुडैत अछि। रदीफ “काज धरू” प्रयत्नक आवृत्ति दैत अछि, मुदा वास्तविक सपन कोन अछि से अनिर्दिष्ट।

रूपगत सावधानी : छपल “मात्रा-क्रम” घोषित उच्चारणाधारित सीमा अछि, प्रमाणित पारम्परिक अरूजी बहर नहि। वास्तविक पाँतिक लघु-गुरु भारक पृथक श्रवण-परीक्षणसँ मात्र छन्द-सिद्धिक अन्तिम निर्णय सम्भव अछि।

गजल ११३ : बेर बाँटू

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रम: १७-३३ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -न • रदीफ: बेर बाँटू

मूल पाठ-साक्ष्य : “काजपर दिअ ध्यान—बेर बाँटू” ; “दिनक बनत पहिचान—बेर बाँटू” ; “सपन लग उडान—बेर बाँटू”। मूल गजलमे १० मिसरा अछि।

५६३ जकाँ एहि ठामो पढाइ, खेल, विश्राम आ छोट काजक समय बाँटनी अछि। मुदा ५७१ “दिनक पहिचान” आ “सपन लग उडान” जोडैत समयक सुव्यवस्था केँ पहिचानक प्रश्न बनबैत अछि।

शीर्षक आ रदीफ ५६३क संग समान, तथापि काफियाक परिवार

“ध्यान/विधान/पहिचान/सम्मान/ज्ञान/उडान” अछि। ई मापल जा सकयवला पाठान्तर अछि, पूर्ण नव कथ्य नहि।

रूपगत सावधानी : छपल “मात्रा-क्रम” घोषित उच्चारणाधारित सीमा अछि, प्रमाणित पारम्परिक अरूजी बहर नहि। वास्तविक पाँतिक लघु-गुरु भारक पृथक श्रवण-परीक्षणसँ मात्र छन्द-सिद्धिक अन्तिम निर्णय सम्भव अछि।

गजल ११४ : पहिने सुनू

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रमः १७-३४ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास • यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -र • रदीफः पहिने सुनू

मूल पाठ-साक्ष्य : “ककरो अलग विचार—पहिने सुनू” ; “पूरा हो पुकार—पहिने सुनू” ; “खुलत नव संसार—पहिने सुनू” । मूल गजलमे १० मिसरा अछि ।

बात बीचहि काटला सँ अर्थ अधूरा रहबाक सम्भावना संवादक विशिष्ट अनुभव अछि । सुननिहारक विनम्रता प्रश्न पूछबाक अधिकारसँ टकराइत नहि; मतभेदमे प्रश्नक स्वर महत्त्वपूर्ण अछि ।

५६५ ‘सुनि कऽ बाजू’क तुलनामे एहि पाठमे “पहिने सुनू”क कालक्रम अधिक बलवान अछि । मुदा दुनू गजल लगभग एके नैतिक निचोड़ पर पहुँचैत अछि; दृश्य-नाटकीय विविधता कम ।

रूपगत सावधानी : छपल “मात्रा-क्रम” घोषित उच्चारणाधारित सीमा अछि, प्रमाणित पारम्परिक अरूज़ी बहर नहि । वास्तविक पौतिक लघु-गुरु भारक पृथक श्रवण-परीक्षणसँ मात्र छन्द-सिद्धिक अन्तिम निर्णय सम्भव अछि ।

गजल ११५ : हुनर निखारू

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रमः १२-४२ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास • यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -न • रदीफः निखारू

मूल पाठ-साक्ष्य : “जे अछि ज्ञान—निखारू” ; “श्रमक सम्मान—निखारू” ; “जीवनक गान—निखारू” । मूल गजलमे १० मिसरा अछि ।

हाथ, मोन आ बुद्धिक संयुक्त श्रम एहि गजलमे हुनरकें केवल सिद्धान्तसँ अलग करैत अछि । आनक नीक काजसँ सीखि अपनो पहिचान बचेनाइ परम्परा आ मौलिकताक तनाव देखबैत अछि ।

“निखारू”क छोट रदीफ अभ्यासक लगातार क्रिया दर्शबैत अछि। घोषित मात्रा-सीमा १२-४२क अन्तर उच्चारणाधारित एके बहर मानबाक दावाकें स्वतः सिद्ध नहि करैत; ई पाठ अलग छन्द-जाँच माँगैत अछि।

रूपगत सावधानी : छपल “मात्रा-क्रम” घोषित उच्चारणाधारित सीमा अछि, प्रमाणित पारम्परिक अरूजी बहर नहि। वास्तविक पाँतिक लघु-गुरु भारक पृथक श्रवण-परीक्षणसँ मात्र छन्द-सिद्धिक अन्तिम निर्णय सम्भव अछि।

गजल ११६ : सीमा राखू

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रमः १४-३३ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास • यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -न • रदीफः सीमा राखू

मूल पाठ-साक्ष्य : “अपन मान—सीमा राखू” ; “बचल रहए सम्मान—सीमा राखू” ; “ई बातक ध्यान—सीमा राखू”। मूल गजलमे १० मिसरा अछि।

“अहाँक ‘नहि’ कें सेहो सहज बुझत”क शेर व्यक्तिगत सहमतिक अत्यन्त स्पष्ट साहित्यिक घोषणा अछि। मीतता कें स्वायत्त निर्णयक कसौटी पर परखबाक आग्रह अछि।

असहज अनुभवमे विश्वस्त पैघ जनसँ कहबाक सलाह किशोर सुरक्षा सन्दर्भ दैत अछि। मुदा सामाजिक दबावक विशिष्ट पात्र नहि, तँ संघर्ष नाटकीय रूपें नहि उभरैत।

रूपगत सावधानी : छपल “मात्रा-क्रम” घोषित उच्चारणाधारित सीमा अछि, प्रमाणित पारम्परिक अरूजी बहर नहि। वास्तविक पाँतिक लघु-गुरु भारक पृथक श्रवण-परीक्षणसँ मात्र छन्द-सिद्धिक अन्तिम निर्णय सम्भव अछि।

गजल ११७ : पढ़ि बुझू

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रमः १५-३७ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास • यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -र • रदीफः पढ़ि बुझू

मूल पाठ-साक्ष्य : “शब्दक भीतर विचार—पढ़ि बुझू” ; “तथ्य बनत आधार—पढ़ि बुझू” ; “बोधक हो विस्तार—पढ़ि बुझू” । मूल गजलमे १० मिसरा अछि ।

“शीर्षक देखि निष्कर्ष तुरन्त नहि निकालू” पाठकक पूर्वनिर्णय पर सीधा प्रहार अछि । लेखकक कथन आ प्रमाण अलग देखबाक आग्रह आलोचनाक अनुशासनक रूप लैत अछि ।

एकहि विषयपर दोसर मत खोजबाक आग्रह मतभेदकें ज्ञानसाधन मानैत अछि । पाँच शेर एकटा जाँच-पद्धतिक अनुक्रम बनैत अछि, तथापि साहित्यिक बिम्बक बदला तर्क-सूत्र प्रधान अछि ।

रूपगत सावधानी : छपल “मात्रा-क्रम” घोषित उच्चारणाधारित सीमा अछि, प्रमाणित पारम्परिक अरूज़ी बहर नहि । वास्तविक पाँतिक लघु-गुरु भारक पृथक श्रवण-परीक्षणसँ मात्र छन्द-सिद्धिक अन्तिम निर्णय सम्भव अछि ।

गजल ११८ : बाट चुनू

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रमः १४-४५ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास • यतिः अर्थ-लय अनुसार । काफियाः -न • रदीफः बाट चुनू

मूल पाठ-साक्ष्य : “अपन पहिचान—बाट चुनू” ; “राखि आत्मसम्मान—बाट चुनू” ; “जीवनक गान—बाट चुनू” । मूल गजलमे १० मिसरा अछि ।

“सभ मीत एक दिशा जाए”क सामूहिक दबावक दृश्य व्यक्तिगत चयनकें सामाजिक संदर्भ दैत अछि । दिशा बदलि सकबाक छूट जीवनक पहिल निर्णयकें अपरिवर्तनीय नियति मानैत नहि ।

“अपन स्वर, हुनर, काज”क त्रयी पहचानक गतिशील रूप खोलैत अछि। ५६१क स्वर आ ५७०क काज इएह ठाम मिलैत अछि; एकर समेकन प्रभावी, नवीन दृश्य सीमित।

रूपगत सावधानी : छपल “मात्रा-क्रम” घोषित उच्चारणाधारित सीमा अछि, प्रमाणित पारम्परिक अरूजी बहर नहि। वास्तविक पाँतिक लघु-गुरु भारक पृथक श्रवण-परीक्षणसँ मात्र छन्द-सिद्धिक अन्तिम निर्णय सम्भव अछि।

गजल ११९ : निज बात

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रमः १४-३७ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास • यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -न • रदीफः सहेजि राखू

मूल पाठ-साक्ष्य : “मीतक मान—सहेजि राखू” ; “बचल रहए सम्मान—सहेजि राखू” ; “सम्बन्धक ज्ञान—सहेजि राखू”। मूल गजलमे १० मिसरा अछि।

अनुमति बिना सन्देश, चित्र वा निजी लिखाइ नहि बाँटबाक शेर समकालीन अंकीय माध्यमक नैतिकता सटीक रूपेँ उठबैत अछि। गोपनता केवल मौन नहि, दोसरक निर्णयाधिकार अछि।

विश्वास बनबामे बेर आ टूटबामे क्षणक विरोध काव्यात्मक संक्षिप्तता लैत अछि। ५८१ मे ई विषय अधिक जटिल बनेत, कारण ओतय सुरक्षा संकटमे विश्वस्त वयस्ककेँ कहबाक अपवाद अछि।

रूपगत सावधानी : छपल “मात्रा-क्रम” घोषित उच्चारणाधारित सीमा अछि, प्रमाणित पारम्परिक अरूजी बहर नहि। वास्तविक पाँतिक लघु-गुरु भारक पृथक श्रवण-परीक्षणसँ मात्र छन्द-सिद्धिक अन्तिम निर्णय सम्भव अछि।

गजल १२० : प्रश्नक साहस

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरुज़ी। मात्रा-क्रमः १५-३५ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास • यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -र • रदीफः प्रश्न करू

मूल पाठ-साक्ष्य : “मनमे उठल विचार—प्रश्न करू” ; “खोजू ठोस आधार—प्रश्न करू” ; “राखू निज अधिकार—प्रश्न करू”। मूल गजलमे १० मिसरा अछि।

प्रश्न केँ विरोध नहि, विचारक गति मानब ज्ञान आ अधिकारक मेल अछि। “गुरु, पोथी आ प्रयोग” तीन अलग प्रमाण-पथक व्यावहारिक गणना अछि।

५६८क “प्रश्न लिखू”सँ भिन्न एतय प्रत्यक्ष प्रश्न पूछबाक साहस केन्द्रीय अछि। मुदा जिज्ञासा उत्पन्न करयवला ठोस विरोधाभासक अभावसँ कविता विचार-घोषणा बनि रहैत अछि।

रूपगत सावधानी : छपल “मात्रा-क्रम” घोषित उच्चारणाधारित सीमा अछि, प्रमाणित पारम्परिक अरुज़ी बहर नहि। वास्तविक पाँतिक लघु-गुरु भारक पृथक श्रवण-परीक्षणसँ मात्र छन्द-सिद्धिक अन्तिम निर्णय सम्भव अछि।

गजल १२१ : दिनक क्रम

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरुज़ी। मात्रा-क्रमः १५-४० मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास • यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -र • रदीफः क्रम बनाउ

मूल पाठ-साक्ष्य : “काजक आधार—क्रम बनाउ” ; “खुलत दिनक दुआर—क्रम बनाउ” ; “सीखक हो विस्तार—क्रम बनाउ”। मूल गजलमे १० मिसरा अछि।

दिनचर्याक योजना केँ “कठोर देवाल नहि” कहब एहि समूहक एक महत्त्वपूर्ण सुधार अछि। समय-वितरण केवल नियम नहि, परिस्थिति अनुसार संशोधन योग्य प्रक्रिया अछि।

५६३ आ ५७१सँ स्पष्ट आवर्तन अछि। अन्तिम शेरमे रहल काजक अगले दिन समीक्षा करबाक बोध एकर थोड़े अलग उपयोगिता बनबैत अछि।

रूपगत सावधानी : छपल “मात्रा-क्रम” घोषित उच्चारणाधारित सीमा अछि, प्रमाणित पारम्परिक अरूज़ी बहर नहि। वास्तविक पाँतिक लघु-गुरु भारक पृथक श्रवण-परीक्षणसँ मात्र छन्द-सिद्धिक अन्तिम निर्णय सम्भव अछि।

गजल १२२ : दबावमे निर्णय

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूज़ी। मात्रा-क्रम: १४-४३ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-तल्य अनुसार। काफिया: -न • रदीफ: अपन मन सुनू

मूल पाठ-साक्ष्य : “अपन मान—अपन मन सुनू” ; “बचत निज पहिचान—अपन मन सुनू” ; “निर्णयमे राखू ध्यान—अपन मन सुनू”। मूल गजलमे १० मिसरा अछि।

निर्णय शरीर, समय आ मनक सीमासँ जुड़ल अछि—ई आग्रह समूह-दबावक विरुद्ध निजी अधिकारक ठोस कसौटी अछि। “ना कहब असभ्यता नहि”मे बोलचालक नैतिक साहस अछि।

सत्य मित्र असहमति सुनत, ई निष्कर्ष ५७४क सहमतिविषयक काव्यक संग घनिष्ठ अछि। फेरो एहि गजलमे निर्णयक तात्कालिक दबावक सङ्केत अधिक स्पष्ट अछि।

रूपगत सावधानी : छपल “मात्रा-क्रम” घोषित उच्चारणाधारित सीमा अछि, प्रमाणित पारम्परिक अरूज़ी बहर नहि। वास्तविक पाँतिक लघु-गुरु भारक पृथक श्रवण-परीक्षणसँ मात्र छन्द-सिद्धिक अन्तिम निर्णय सम्भव अछि।

गजल ५६१-५८० : अन्तरपाठीय अवलोकन

एहि बीस गजलमे आत्मस्वर, सुनबाक शिष्टाचार, गोपनता, सीमा, समय-व्यवस्था आ प्रश्नक अधिकार बारम्बार अबैत अछि। समान रदीफवला ५६३/५७१ तथा समीपवर्ती ५६५/५७२क तुलना सँ स्पष्ट होइत अछि जे

विषयगत सदिच्छा मात्र स्वतंत्र रचनात्मक उपलब्धिक प्रमाण नहि; वास्तविक भिन्न दृश्य, भाषिक जोखिम आ निष्कर्षक फेर-बदल सेहो जाँचल जाएबाक चाही।

गजल १२३ : मीतक गोपन बात

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूज़ी। मात्रा-क्रम: १५-५० मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -न • रदीफ: गोपन राखू

मूल पाठ-साक्ष्य : “मीतक मान—गोपन राखू” ; “बचल रहए सम्मान—गोपन राखू” ; “समझक ई ज्ञान—गोपन राखू”। मूल गजलमे १० मिसरा अछि।

विश्वासमे देल निजी बातक संग सुरक्षा-संकटक अपवाद जोड़बाक कारण गोपनता यान्त्रिक नियम नहि बनैत। गजल अधिकार आ रक्षा दुनूक न्यायसंगत सीमा परखैत अछि।

“चित्र, सन्देश वा निजी लिखाइ” अंकीय युगक वास्तविक वस्तु अछि। ५७७क तुलनामे एहि पाठक अंतिम शेर अधिक जटिल आ सामाजिक रूपेँ उत्तरदायी अछि।

रूपगत सावधानी : छपल “मात्रा-क्रम” घोषित उच्चारणाधारित सीमा अछि, प्रमाणित पारम्परिक अरूज़ी बहर नहि। वास्तविक पाँतिक लघु-गुरु भारक पृथक श्रवण-परीक्षणसँ मात्र छन्द-सिद्धिक अन्तिम निर्णय सम्भव अछि।

गजल १२४ : अपूर्णतासँ सीख

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूज़ी। मात्रा-क्रम: १८-४६ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -र • रदीफ: फेर सँ सीखू

मूल पाठ-साक्ष्य : “एक चूक नहि हार—फेर सँ सीखू” ; “भेटत नब आधार—फेर सँ सीखू” ; “सीखू नीक व्यवहार—फेर सँ सीखू”। मूल गजलमे १० मिसरा अछि।

अपूर्ण प्रयत्नक कारण लिखि लेब, नव विधि आजमेनाइ आ प्रगतिमे स्वयं सँ तुलना—ई गजल सीखबाक क्रमशः संशोधन-प्रक्रिया स्पष्ट करैत अछि।

५६२क चूक-स्वीकारसँ विषय मिलैत अछि, मुदा ५८२ असफलताक कारण-लेखा आ अगिला प्रयोगक माध्यमसँ अधिक प्रक्रिया-केंद्रित अछि। “फेर सँ सीखू”क रदीफ पुनः प्रयोगक लय दैत अछि।

रूपगत सावधानी : छपल “मात्रा-क्रम” घोषित उच्चारणाधारित सीमा अछि, प्रमाणित पारम्परिक अरूजी बहर नहि। वास्तविक पाँतिक लघु-गुरु भारक पृथक श्रवण-परीक्षणसँ मात्र छन्द-सिद्धिक अन्तिम निर्णय सम्भव अछि।

गजल १२५ : अपन सीमा

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रमः १४-५४ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास • यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -न • रदीफः सीमा राखू

मूल पाठ-साक्ष्य : “अपन मान—सीमा राखू” ; “राखू आत्मसम्मान—सीमा राखू” ; “बचल रहए सम्मान—सीमा राखू”। मूल गजलमे १० मिसरा अछि।

व्यक्तिक मन आ देहक असहजता केँ स्पष्ट कहबाक अधिकार मानल गेल अछि। परस्पर सहमति बिना नेहक आधार नहि—ई शीर्षकक भावनात्मक केन्द्र।

५७४ आ ५८०क तुलना बतबैत अछि जे सीमा-विषय फेर उभरैत अछि; एतय “नेह”क भीतर दबावक आलोचना प्रमुख, जखनकि ५८० समूह-दबावक निर्णय पर केन्द्रित छल।

रूपगत सावधानी : छपल “मात्रा-क्रम” घोषित उच्चारणाधारित सीमा अछि, प्रमाणित पारम्परिक अरूजी बहर नहि। वास्तविक पाँतिक लघु-गुरु भारक पृथक श्रवण-परीक्षणसँ मात्र छन्द-सिद्धिक अन्तिम निर्णय सम्भव अछि।

गजल १२६ : प्रमाण देखू

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रम: १६-४४ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -र • रदीफ: जाँचि लिअ

मूल पाठ-साक्ष्य : “जे सुनलहुँ ओकर आधार—जाँचि लिअ” ; “के करैत अछि प्रचार—जाँचि लिअ” ; “साँचक दृढ़ आधार—जाँचि लिअ” । मूल गजलमे १० मिसरा अछि ।

एक चित्र, छोट दृश्यांश वा अग्रेषित सन्देश सम्पूर्ण साँच नहि—गजल दृश्यसाक्ष्यक सीमापर सटीक प्रश्न उठबैत अछि । पसिन्न मतक विरोधमे सेहो प्रमाण माँगबाक आग्रह आत्मपक्षपातक समालोचना अछि ।

५६४क “साँच लिखू” आ ५७५क “पढ़ि बुझू”क बाद एतय पाठक सँ सार्वजनिक सूचना-जाँचक काज अपेक्षित अछि । तिथि, स्रोत आ सन्दर्भक उल्लेख सूत्रबद्ध अछि, मुदा प्रसंग ठोस ।

रूपगत सावधानी : छपल “मात्रा-क्रम” घोषित उच्चारणाधारित सीमा अछि, प्रमाणित पारम्परिक अरूज़ी बहर नहि । वास्तविक पाँतिक लघु-गुरु भारक पृथक श्रवण-परीक्षणसँ मात्र छन्द-सिद्धिक अन्तिम निर्णय सम्भव अछि ।

गजल १२७ : धीरे बढू

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूज़ी । मात्रा-क्रम: १५-४६ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना । कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार । काफिया: -स • रदीफ: धीरे बढू

मूल पाठ-साक्ष्य : “करू छोट प्रयास—धीरे बढू” ; “एहिसँ होएत विकास—धीरे बढू” ; “बाटमे राखू विश्वास—धीरे बढू” । मूल गजलमे १० मिसरा अछि ।

विश्राम केँ हारक बदला पुनः प्रयासक अवकाश माननाइ ई कविता सँवेदनशील बनबैत अछि। दोसरक गतिसँ तुलना नकारि काल्हिक अपन स्थिति केँ मापक बनाओल गेल अछि।

“धीरे बढ़ू”क रदीफ चालकेँ मन्द करवाक श्रवणानुभव देत; मुदा बहुसंख्यक शेर प्रेरक सूची बनैत अछि। अघाएल व्यक्तिक वास्तविक कथा अनुपस्थित।

रूपगत सावधानी : छपल “मात्रा-क्रम” घोषित उच्चारणाधारित सीमा अछि, प्रमाणित पारम्परिक अरूजी बहर नहि। वास्तविक पाँतिक लघु-गुरु भारक पृथक श्रवण-परीक्षणसँ मात्र छन्द-सिद्धिक अन्तिम निर्णय सम्भव अछि।

गजल १२८ : थाकल मोन

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूजी। मात्रा-क्रमः १३-२६ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः मिश्र कल-विन्यास • यतिः अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -म • रदीफः दिअ

मूल पाठ-साक्ष्य : “थाकल मोनकेँ विराम दिअ” ; “समय बाँटि फेर काम दिअ” ; “स्वास्थ्यकेँ पहिल मुकाम दिअ”। मूल गजलमे १० मिसरा अछि।

एहि गजलमे लगातार बैसल रहनाइ केँ पढ़ाई नहि मानल गेल अछि। निन्न घटा कऽ समय जीतबाक निस्सारता आ पानि पीबि अकास तकबाक छोट क्रिया अनुभवसँ जुड़ल अछि।

अन्त “स्वास्थ्यकेँ पहिल मुकाम” देलासँ विश्राम निजी आलस्यक बदला आवश्यक श्रमाधार बनैत अछि। तथापि “तखन देखू परिणाम दिअ”मे कथन/वाक्य-गठन असहज अछि; मूल पाठक सुधार-समीक्षामे ई उल्लेखनीय।

रूपगत सावधानी : छपल “मात्रा-क्रम” घोषित उच्चारणाधारित सीमा अछि, प्रमाणित पारम्परिक अरूजी बहर नहि। वास्तविक पाँतिक लघु-गुरु भारक पृथक श्रवण-परीक्षणसँ मात्र छन्द-सिद्धिक अन्तिम निर्णय सम्भव अछि।

गजल १२९ : संग काज

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूज़ी। मात्रा-क्रम: १२-२८ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -थ • रदीफ: राखू

मूल पाठ-साक्ष्य : “दलमे सभक साथ राखू” ; “स्पष्ट अपन बात राखू” ; “नेहक सहज साथ राखू”। मूल गजलमे १० मिसरा अछि।

दलमे जे नहि बुझैत अछि ओकरो प्रश्नक ठाम देव समूहकें समावेशी बनबैत अछि। श्रेय बाँटबाक आदेश केवल मैत्री नहि, सामूहिक श्रमक न्याय अछि।

“एक जन सभ निर्णय करए तँ दल छोट भऽ जाइत” नाटकीय रूपकक जकाँ अछि। ई गजल ५६५क विवाद-विषयक संस्कार कें सार्वजनिक सहयोगक क्षेत्रमे विस्तार दैत अछि।

रूपगत सावधानी : छपल “मात्रा-क्रम” घोषित उच्चारणाधारित सीमा अछि, प्रमाणित पारम्परिक अरूज़ी बहर नहि। वास्तविक पौतिक लघु-गुरु भारक पृथक श्रवण-परीक्षणसँ मात्र छन्द-सिद्धिक अन्तिम निर्णय सम्भव अछि।

गजल १३० : सहायता माँगू

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूज़ी। मात्रा-क्रम: २५-३० मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: मिश्र कल-विन्यास • यति: अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -र • रदीफ: समयपर

मूल पाठ-साक्ष्य : “बडु बढि जाए भार—सहायता माँगू समयपर” ; “खोलू विश्वासक दुआर—सहायता माँगू समयपर” ; “एहने बनै व्यवहार—सहायता माँगू समयपर”। मूल गजलमे १० मिसरा अछि।

सहायता माँगब कें सामर्थ्यक कमी नहि माननाइ एहि रचनाक सकारात्मक विचार अछि। समस्या छोट रहिते साझा कएलाक बाद संकट टारबाक व्यावहारिक सम्भावना बताओल गेल अछि।

गुरु, मीत आ घरक जनक सूची उचित सहायक स्रोत चिन्हैत अछि; मुदा सहायता देब-लेबक परस्परता अन्तिम शेरमे बेसी रूप लैत अछि। “समयपर”क लम्बा रदीफ शेरक गति पर दबाव दैत अछि।

रूपगत सावधानी : छपल “मात्रा-क्रम” घोषित उच्चारणाधारित सीमा अछि, प्रमाणित पारम्परिक अरूज़ी बहर नहि। वास्तविक पाँतिक लघु-गुरु भारक पृथक श्रवण-परीक्षणसँ मात्र छन्द-सिद्धिक अन्तिम निर्णय सम्भव अछि।

गजल १३१ : अपन सीमा राखू

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहर: मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूज़ी। मात्रा-क्रम: २०-२२ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रम: द्विखण्डी निकट-समलय • यति: मध्य अर्थ-लय अनुसार। काफिया: -र • रदीफ: राखू

मूल पाठ-साक्ष्य : “पहिने अपन मनमे साफ विचार राखू” ; “बाजबामे सदा मृदु व्यवहार राखू” ; “नेहमे संवादक दुआर खुलल राखू”। मूल गजलमे १० मिसरा अछि।

“नहि कहनाइ बैर नहि” पाँति व्यक्तिगत सीमाक रचनासभक सार अछि, मुदा एतय तुलनात्मक रूपसँ संक्षिप्त वाक्य अछि। अधिकारक संग मृदु व्यवहार जोड़ब प्रतिरोध आ सम्बन्धक सन्तुलन रखैत अछि।

पूर्व ५७४/५८३मे मात्रा-अन्तर बहुत पैघ छल; ५८९मे “२०-२२ मात्रा प्रति मिसरा” आ “द्विखण्डी निकट-समलय” घोषणा संरचनात्मक सुधारक प्रयास देखबैत अछि। तथापि वास्तविक अरूज़ी समानता स्वतंत्र उच्चारण-जाँच बिना प्रमाणित नहि।

रूपगत सावधानी : छपल “मात्रा-क्रम” घोषित उच्चारणाधारित सीमा अछि, प्रमाणित पारम्परिक अरूज़ी बहर नहि। वास्तविक पाँतिक लघु-गुरु भारक पृथक श्रवण-परीक्षणसँ मात्र छन्द-सिद्धिक अन्तिम निर्णय सम्भव अछि।

गजल १३२ : काजक क्रम

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूज़ी। मात्रा-क्रमः २०-२२ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः द्विखण्डी निकट-समलय • यतिः मध्य अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -र • रदीफः करू

मूल पाठ-साक्ष्य : “पहिने अपन समयक सँभार नीक करू” ; “सूचीक नहि बड्डु विस्तार कखनो करू” ; “अगिला बेर समयक सँभार नीक करू”। मूल गजलमे १० मिसरा अछि।

काजकें प्राथमिकता अनुसार बाँटि पूरा भेल काजसँ सीख लिखबाक आग्रह दिनचर्याक संशोधनशील विधि बनबैत अछि। “सूचीक नहि बड्डु विस्तार”क वाक्य योजनाक सीमापर ध्यान दैत अछि।

५६३, ५७१ आ ५७९क पुनरावर्तन स्पष्ट अछि, मुदा एतय २०-२२ मात्राक निकटता घोषित करबाक कारण काव्य-रूपक सँ औपचारिक अनुशासन दिस परिवर्तन अछि। ‘करू’क व्यापक रदीफमे शेर-भिन्नता सीमित रहैत अछि।

रूपगत सावधानी : छपल “मात्रा-क्रम” घोषित उच्चारणाधारित सीमा अछि, प्रमाणित पारम्परिक अरूज़ी बहर नहि। वास्तविक पाँतिक लघु-गुरु भारक पृथक श्रवण-परीक्षणसँ मात्र छन्द-सिद्धिक अन्तिम निर्णय सम्भव अछि।

गजल १३३ : साँच जाँचू

मूल पाठक घोषित रूपविधान : बहरः मात्रिक छन्द • पारम्परिक अरूज़ी। मात्रा-क्रमः २०-२२ मात्रा प्रति मिसरा • उच्चारणाधारित गणना। कल-क्रमः द्विखण्डी निकट-समलय • यतिः मध्य अर्थ-लय अनुसार। काफियाः -र • रदीफः जाँचू

मूल पाठ-साक्ष्य : “आएल प्रत्येक समाचार आइ जाँचू” ; “दाबी पाछाँक साँच आधार जाँचू” ; “बुद्धिक अपन संतुलित विचार सदा जाँचू”। मूल गजलमे १० मिसरा अछि।

अन्तिम गजल अपन पहिल विचारकें जाँचबाक आग्रह सँ शुरू होइत अछि।
“सभ दोहराबए, तइयो बात साँच नहि” सामूहिक पुनरावृत्तिक विरुद्ध प्रामाणिक
ज्ञानक प्रतिपक्ष अछि।

कविता संदेहकें निराधार निषेध नहि बनबैत; स्रोत, चित्र आ कथनक आपसी
जाँचक माध्यमसँ संतुलित विवेकक माँग करैत अछि। ई ‘साँच लिखू’ (५६४)
आ ‘प्रमाण देखू’ (५८४)क क्रमक सार्थक समाप्ति अछि।

रूपगत सावधानी : छपल “मात्रा-क्रम” घोषित उच्चारणाधारित सीमा अछि,
प्रमाणित पारम्परिक अरूजी बहर नहि। वास्तविक पाँतिक लघु-गुरु भारक पृथक
श्रवण-परीक्षणसँ मात्र छन्द-सिद्धिक अन्तिम निर्णय सम्भव अछि।

कविता-गीत 001 — ट्रेनक गाड़ी

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 13 काव्य-पाँति ।

‘छुक छुक छुक’क ध्वन्यनुकरण गीतकें श्रवणात्मक गति दैत अछि; ‘भरल सवारी’ आ ‘पोखरि गाछी’ रेल-यात्राकें नगरक बाह्य दृश्य नहि, गामक भीतर सँ देखबैत अछि। ‘आएल स्टेशन छुटल गपमे’ पाँतिमे बातचीत आ यात्रा-समयक अन्तर एक क्षणमे व्यक्त भेल अछि।

कविताक पहिल भागमे ‘दौगल जाइ छी’क आवृत्ति चक्काक लय जकाँ काज करैत अछि। अन्तिम ‘सुतल गाछ बृच्छ भेल परात’क दृश्य पाठकें राति सँ भोर धरि लऽ जाइत अछि, मुदा ‘ट्रेन गाड़ी’क पुनः प्रयोग कतहु अनावश्यक व्याख्यान सन सुनाइत अछि। सामूहिक पाठमे ध्वनि-ताल एकर मुख्य साहित्यिक उपलब्धि अछि।

कविता-गीत 002 — के छथि

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 12 काव्य-पाँति ।

‘हथेलीमे परिश्रमक रेखा’ भाग्यरेखाक परम्परागत विश्वासकेँ श्रमक रूपकमे बदलैत अछि। ललाटपर ‘घामक मोती’ शारीरिक परिश्रमक गरिमा उपस्थित करैत अछि; एहिमे श्रमिक व्यक्ति शोषणक प्रतीक नहि, अपन श्रमक सक्रिय कर्ता बनैत छथि।

‘सुस्त बैसल हाथक रेखा / अपनहि भाग्य नहि लिखत’ पाँतिमे भाग्यवाद-विरोध प्रत्यक्ष अछि। अन्तिम ‘नव प्रभात’ प्रचलित प्रेरणात्मक बिम्ब अछि, जाहिसँ विचार स्पष्ट होइत अछि मुदा आश्चर्य घटैत अछि। कविता श्रमक सम्मान सफलतासँ जोड़ैत अछि; श्रमक अवसर-सम्बन्धी सामाजिक असमानता पर प्रश्न अपेक्षाकृत कम अछि।

कविता-गीत 003 — राजा श्री अनुरन्वज सिंह

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 16 काव्य-पाँति ।

‘राजा श्री अनुरन्वज सिंह’ मूलतः उच्चारणक खेल अछि। ‘एक सुरमे बाजि देखाऊ’ आ ‘जीह घुमाऊ, साँस सम्हारू’ श्रोता-सहभागिताकें काव्यक भीतर अनैत अछि। नामक कठिन ध्वनि-अनुक्रम साहित्यिक कथानकसँ बेसी प्रदर्शनक क्रिया बनैत अछि।

एकल पाठ, समूह-दोहराव आ ताली—तीनू अभ्यास एकर सम्भावित रंगमंचीय रूप अछि। ‘भूलि गेलहुँ? फेर सँ बाजू’क वाक्य चूककें अपमान नहि बनाबैत, हास्यक सामूहिक अवसर बनबैत अछि। मुदा राजा नामक ऐतिहासिक अस्तित्व कविता सिद्ध नहि करैत; एहि रचनाकें व्यक्तिवृत्त नहि, जिह्वाभ्यासक खेलगीत मानब अधिक सटीक अछि।

कविता-गीत 004 — सूतल

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 12 काव्य-पाँति ।

‘सूतल धरती / सूतल आकाश’ सँ आरम्भ भेल गान मनुष्य, पशु-पक्षी आ प्रकृतिक एकरूप निन्नक वातावरण रचैत अछि। ‘सूतल बौआ’, ‘सूतल बुच्ची’, ‘सूतल बाबा’, ‘सूतल बाबी’क क्रम बालकक परिचित घरकें विस्तार दैत अछि।

आरम्भक छोट-छोट पाँति लोरीक मधुर गतिक अनुकूल अछि। ‘सूतू-सूतू बौआ’ मे प्रेमपूर्ण सम्बोधन अछि, मुदा ‘उठबाक अछि / भोरे-सकाल’ अचानक समय-अनुशासनक सूचना बनि जाइत अछि। निन्नक स्वच्छन्द अनुभूति आ भोरक आवश्यकता—दू ध्वनि एकर अन्तमे भेटैत अछि।

कविता-गीत 005 — अखण्ड भारत

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 18 काव्य-पाँति ।

रचनाक मूल ताना 'अखण्ड भारत'क कल्पना अछि, मुदा एकर राष्ट्र-बिम्ब केवल विजय-सूचक नहि: औषधि, कृषि, वृक्ष-जन्तु, स्त्रीक नगर-संचालन आ शत्रुत्वक नाश सभ एक संग उपस्थित अछि । 'नगर चालन करथि स्त्रीगण' पाँति राजनीतिक भागीदारीक कल्पनाकें विशेष अर्थ दैत अछि ।

'पराभव होए सभ शत्रु सभक' आ 'मित्रक उदय होअए भरि जगत'क सह-अस्तित्वमे संघर्षात्मक आ समन्वयी स्वरक तनाव अछि । संस्कृतनिष्ठ पदावली बाल-गीतक सहज लयकें कतहु बाधित करैत अछि । इतिहासक सत्य-दावा नहि, सामूहिक आकांक्षाक काव्यरूप मानि एकर मूल्यांकन उचित होयत ।

कविता-गीत 006 — मोनक जड़िमे

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 20 काव्य-पाँति ।

‘मोनक जड़िमे’ स्मृतिक वस्तु नहि, कार्य-संकल्पक अन्तःस्थ आधार अछि ।

‘सतत कार्यक क्रम’क दोहराव श्रमक दीर्घता व्यक्त करैत अछि; ‘प्यासल अरण्यपथ’ आ ‘मनसिक अन्हार’ मार्गक शारीरिक आ मानसिक कठिनाइकेँ एक संग रखैत अछि ।

‘लोक कल्याणक मन वचन कर्महि’ बोधक विस्तार निजी आकांक्षा सँ सार्वजनिक उत्तरदायित्व दिस परिवर्तन करैत अछि । मुदा ‘पंक्तिबद्ध पुनः किञ्च’ सन संकुल पद-विन्यास पाठकक स्वाभाविक पहुँच घटबैत अछि । पुनरावृत्तिमे मन्त्रात्मक शक्ति अछि, पर एकर अर्थ-क्रम अधिक फरिछ कएल जा सकैत छल ।

कविता-गीत 007 — पुनः स्मृति

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 12 काव्य-पाँति ।

‘बितल बर्ख बितल युग / बितल सहस्राब्दि’ समयक विस्तारकें तीव्र लघुपाँतिसभमे समेटैत अछि । स्मृति एतय केवल नेहक आश्रय नहि; ‘होयत स्मृतिक शाप’ प्रश्न इतिहाससँ पाठ नहि लेबाक संकट व्यक्त करैत अछि ।

‘हारि हमर विजय ओकर’ पाँतिक पुनरावृत्ति पीढ़ी-दर-पीढ़ी एकतरफा शक्ति-संबन्धक अनुभूति दैत अछि । ‘सभक योग यावत नहि / होएत गए सम्मिलन’ कठिन वाक्यगठनक कारण विचार पूरा स्पष्ट नहि भऽ पवैत अछि । कविता इतिहास-बोधक प्रश्न खोलैत अछि; समाधान थोपैत नहि, जे एकर महत्त्वपूर्ण गुण अछि ।

कविता-गीत 008 — कलम गाछी

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 12 काव्य-पाँति ।

‘कलम गाछी’मे डारि-पात, घोरन कीड़ा, लाल चुट्टी आ बसातक सूक्ष्म उपस्थिति अछि। फूलक गन्ध आ इसकूल गेल बालक—दुनू मिलि प्रकृति आ औपचारिक शिक्षाक समानान्तर संसार बनबैत अछि।

‘माटि, पात, कीड़ा आ पवनक / अपन-अपन अछि नेम’ पर्यवेक्षणकें पारिस्थितिक सह-अस्तित्वक विचार दिस लऽ जाइत अछि। अन्तक ‘प्रकृति संग राखू नेह’ निष्कर्ष बोधगम्य अछि, मुदा अनुभूत दृश्य खुद सेहो अर्थ प्रकट करैत छल; स्पष्ट उपदेश ओकर बहुअर्थकता कने घटबैत अछि।

कविता-गीत 009 — हाथीक मुँहमे लागल पाइप

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 23 काव्य-पाँति ।

बानरक होलीक खेल 'हाथीक मुँहमे लागल पाइप' शीर्षकसँ हास्य-अपेक्षा जगबैत अछि । पाइप, हाफी, छींक आ रंगक बादर एक क्रमबद्ध दृश्य बनबैत अछि; 'आऽऽछी' मौखिक अभिनयक प्रभावी ध्वनि अछि ।

प्रारम्भक शरारत हार-जीतक प्रसंग अछि; अन्तमे बानरक 'मित्र भऽ गेल' कथन प्रतियोगिताकें सामूहिक नेहमे बदलैत अछि । मूल हास्यक जीवित क्षण अधिक प्रभावी अछि; 'होली सिखबैत' पाँतिक स्पष्ट नीति अपेक्षाकृत परिचित अछि । विद्यालयक समूह-पाठमे ई गीत विशेष सहजता सँ अभिनययोग्य बनि सकैत अछि ।

कविता-गीत 010 — बानर राजा

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 23 काव्य-पाँति ।

‘बानर राजा’क निर्वाचनक आरम्भ सत्ता-बदलावक प्रतिश्रुति दैत अछि, मुदा सिंहक हिंसा कायम रहैत अछि । बानरक ‘गाछक डारि पकड़ि’ हंगामा आ ठोस निर्णयक अभाव सत्ता-प्रदर्शन बनाम शासन-उत्तरदायित्वक व्यंग्य रचैत अछि ।

हरिणक सन्तानक मृत्यु गीतक नैतिक केन्द्र अछि । ‘एहि हरकंपसँ की होयत?’ प्रश्न खोखला प्रतिवादकें उधाड़ैत अछि; अन्तक ‘हमरो मजबूरी’ शासकीय असमर्थताक पुनरुक्त भाषण अछि । कथा बालकथाक सतहपर चलैत अछि, मुदा राजनीति-विमर्शक प्रखर रूप ग्रहण करैत अछि ।

कविता-गीत 011 — चिड़ियाखाना

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 24 काव्य-पाँति ।

जीव-जन्तुक आवाज आ गति—कौआक 'काऊँ-काऊँ', मुरगाक 'कुकड़-कू',
बानरक चढ़ब—कविताक आरम्भक दृश्यात्मक, ध्वन्यात्मक आधार अछि। अंडा-
मुरगाक उलट-पुलट बालकक प्रश्नक खेल बनैत अछि।

मध्यसँ कविता पिंजड़ा-पद्धतिक बदला वनकेँ 'असली संसार' कहैत अछि।
'जीव सभक सेहो / अपन जीवन, अपन अधिकार' पर पशु-अधिकारक विमर्श
आरम्भ होइत अछि। चिड़ियाखानाक शीर्षक आ वनक स्वाधीनता-चिन्ता बीच
तनाव एकर सबल पक्ष अछि, तथापि पर्यावरणीय निष्कर्षक समापन अपेक्षाकृत
सीधा पाठ बनि जाइत अछि।

कविता-गीत 012 — जमबोनी

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 16 काव्य-पाँति ।

‘जमबोनी’क स्थान-बोध गाछक ऊँचाइ, पातक भीतर खसल इजोत, सुपारी तोड़व आ वनक गन्धसँ बनैत अछि । ई काल्पनिक उपदेशक दृश्य नहि; गाछी-वनक संवेदी अनुभव रचनामे जगैत अछि ।

‘माटिक विश्वास पएरमे बाँधि / मोनक पाँखिसँ आगाँ ताकू’ उडान आ भूमि-सम्बद्धताक संतुलनक सुन्दर रूपक अछि । ‘दूर चलू, अपनहि सँ भेटि’ समापन आत्मान्वेषणक लय अनैत अछि । मुदा ‘जोम’ आ ‘दोमब’ सन रूपसभक भाषिक अर्थ-संदर्भ सम्पादकीय टिप्पणीमे फरिछ कएल जाए तँ पाठककें लाभ होयत ।

कविता-गीत 013 — बौआ ठेहुनिया मारि

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 25 काव्य-पाँति ।

‘बौआ ठेहुनिया मारि’मे लकड़ीक तिनपहिया, पहिल डग आ माय-बाबूक देखबाक ढंग घरोआ विकासक ठोस क्षण रचैत अछि। बालकक ठाढ़ होयब घटना केवले देहगत नहि, नव आत्मनिर्भरता अर्जित करबाक अनुभव बनैत अछि।

‘एक डग, दू डग, तीन डग’क आरोह गद्यात्मक पाठकेँ काव्य-ताल दैत अछि। मुदा पहिल अनुभूतिसँ ‘किशोरक चाल’ आ ‘जिनगीक ई पहिल ताल’ धरि खींचल सामान्यीकरण कोमल दृश्यक चमत्कार घटबैत अछि। ई गीत परिवारक सामूहिक स्मृतिक कारण बेसी मार्मिक अछि।

कविता-गीत 014 — ट्रिंग-ट्रिंग-ट्रिंग

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 37 काव्य-पाँति ।

‘ट्रिंग-ट्रिंग-ट्रिंग’क बारम्बार आवृत्ति साइकिलक घंटीकें गीतक ताल-आधार बनबैत अछि। कैरियरपर संगी बैसबाक इच्छा बच्चाक सामूहिक यातायात-बोधकें व्यक्त करैत अछि; साइकिल एतय केवल वस्तु नहि, गामक गप्प आ सहयात्राक साधन अछि।

‘गति तेज हो, बुद्धि जागल’क कथनमे स्वतंत्रता आ सावधानी दुनू अछि। घंटीक प्रदर्शनसँ आरम्भ भेल गीत सडक-नियम, टीम-जिम्मेदारी आ किशोरक स्वाधीनता धरि फैलैत अछि। अन्तिम भागक नीति-सूत्र लम्बा अछि; ‘ट्रिंग’क स्वयं ध्वनि आ ‘कैरियर’क दृश्य प्रारम्भक बेसी याद रहैत अछि।

कविता-गीत 015 — भोरक बसात

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 20 काव्य-पाँति ।

‘भोरक बसात’मे चिड़ैक स्वर, ओसक मोती, पूरबक लालिमा आ निन्नक ओहार एकहि समयक बहुपरतीय चित्र बनबैत अछि। ‘नव दिनक दुआर फेर खुलल’ सामान्य बिम्ब होयतो पर पहिनुक प्रकृति-वर्णन ओकरा संवेदनात्मक आधार दैत अछि।

कविता विद्यालयक पोथी-झोरा जोड़िते प्रातःगीत सँ शैक्षिक जागरणक गीत बनैत अछि। ‘काल्हिक भूलसँ सीखि’क पाँति किशोर जीवनक सुधारक सम्भावना राखैत अछि; मुदा आलस-विरोधी उपदेशसँ भोरक खुलल दृश्य थोड़े संकुचित होइत अछि।

कविता-गीत 016 — छाहक करतब

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 20 काव्य-पाँति ।

‘छाहक करतब’क मुख्य शक्ति अनुभवसँ विचार दिस गति अछि। दुपहरक छोट छाह आ साँझक लमहर छाह वैज्ञानिक निरीक्षणक सरल आधार अछि; बालक समय, प्रकाश आ आकारक सम्बन्ध अपन आँखिसँ देखैत अछि।

‘माप बदलला सँ / मोनक मान कहाँ बदलै?’ कविता भौतिक छाया केँ नैतिक आत्ममूल्यक रूपक बनबैत अछि। ई परिवर्तन अर्थपूर्ण अछि, मुदा ‘प्रकाश जेम्हर बाट बनाबै, छाह ओम्हर चुप्पे सरकै’क सम्बन्ध दिशा-निर्धारणक वैज्ञानिक विवेचन नहि; कविता केवल अनुभव देखबैत अछि। व्यावहारिक प्रश्नक संग काव्य-कल्पना एकरा अलग पहचान दैत अछि।

कविता-गीत 017 — सपन

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 30 काव्य-पाँति ।

‘सपन’ घरेलू बिहानक संवादसँ आरम्भ होइत अछि—विद्यालयक तैयारी, देरिसँ उठब, माय-बेटाक हल्का तकरार । एहिमे बाल्यक स्वाभाविक असंगति अछि, जे शिक्षणपरक आख्यानसँ बेसी जीवित लगैत अछि ।

पछिला भागमे सपन ‘लक्ष्यक पहिल उजास’ बनैत अछि; व्यक्तिगत निन्नक स्वप्नकें भविष्य-निर्माणक रूपकमे रूपान्तरित कएल गेल अछि । मुदा पहिल घरेलू प्रसंग आ अन्तक प्रेरणात्मक निष्कर्षक बीच संक्रमण कने तीव्र अछि । जँ आरम्भक संवादपर बेसी भरोसा कएल जाइत तँ आत्मीयता बढ़ैत ।

कविता-गीत 018 — कोइरीक कूकू

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 32 काव्य-पाँति ।

‘कोइरीक कूकू’ रातिक स्वरक श्रवण-कविता अछि । ‘नानी तसला ला—भात पका!’ सन लोक-अनुश्रुति पक्षीक ध्वनिक मानव-भाषात्मक ग्रहण देखबैत अछि । ‘क्वैटीक्विक’ ध्वनि-लिप्यन्तरण मंचपर बोलि सुनल जाए तँ विशेष प्रभावकारी अछि ।

गीत रातिक जीवनकेँ निम्नाइत शून्यता नहि मानैत; ‘ध्वनिसँ खुलै वनक पोथी’ काव्यक केन्द्रीय पाँति अछि । भगजोगनी, पोखरिक पानि आ अनदेखल जीवक सम्मिलित बोध प्राकृतिक विविधताक मूल्य स्थापित करैत अछि । अन्तक शिक्षामूलक निष्कर्ष अपेक्षाकृत अधिक स्पष्ट अछि, मुदा मूल ध्वनि-संसार अत्यन्त विशिष्ट ।

कविता-गीत 019 — शितलपाटी

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 24 काव्य-पाँति ।

‘शितलपाटी’मे चटाई पर बैसि पढ़बाक घरेलू दृश्य शिक्षा-संसाधनक स्थानीय रूप प्रस्तुत करैत अछि। दीपकक इजोत, पन्ना फेरब आ आँखिक थाकन एकहि अध्ययन-अभ्यासक शारीरिक आ बौद्धिक पक्ष अछि।

‘कखनो कथा, कखनो विज्ञान’ पोथीकेँ परीक्षाक सीमासँ मुक्त करैत अछि। उजास, दूरी आ बैसबाक ढंगक आग्रह पाठकेँ स्वास्थ्य-सावधानीक निर्देशन बनबैत अछि। प्रारम्भक ‘बाप रौ बाप’ सन कथोपकथन हास्य आ बोलचालक जीवन्तता दैत अछि; अन्तिम उपदेशक तुलनामे ई दृश्य बेसी मौलिक।

कविता-गीत 020 — मकड़ीक जाल

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 34 काव्य-पाँति ।

‘मकड़ीक जाल’क आरम्भ वास्तविक जीव-क्रियाक अवलोकनसँ होइत अछि; जाल कतहु आश्रय, कतहु फाँस । ‘दिल्ली नगरियामे’क अचानक उल्लेख एहि प्राकृतिक दृश्यकेँ प्रवासी किशोरक असुरक्षासँ जोड़ैत अछि ।

‘ककरो लेल घरक रचना, / ककरो लेल कठिन फाँस’ अन्तरविरोध एकर मूल काव्य-दर्शन अछि । शहरी पढ़ाइ, काज, समय आ दबावक बीच जालक उपमा अर्थसम्पन्न अछि । अन्तमे साहस-सम्बन्धी निर्देश आवैत अछि, मुदा जालकेँ ‘फँसब’ आ ‘जुड़ब’क दूहरा संकेत मानब अधिक प्रखर आलोचनात्मक सम्भावना अछि ।

कविता-गीत 021 — वायुगोलक

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 24 काव्य-पाँति ।

‘वायुगोलक’मे वायुगोलक (बैलून) खेल, रंग आ उड़ानक सामूहिक उत्सव अछि। हरियर, पीअर, लाल आ नीलक श्रृंखला बाल-दृष्टिक दृश्यात्मक संपन्नता बनबैत अछि; डोरि पकड़ल हाथसँ मनक अकास दिस उघराब एकर मूल रूपक।

‘हाइड्रोजन’क उल्लेख बाल-विज्ञानक जिज्ञासा जगबैत अछि, मुदा पदार्थक सुरक्षा-जोखिम कविता स्पष्ट नहि करैत अछि; पाठशाला-पाठमे गैसक वास्तविक व्यवहार अलग सँ जाँचब आवश्यक अछि। ‘पए रह्य धरतीक ठाम’ सपन आ अनुशासनक परिचित समन्वय बनबैत अछि।

कविता-गीत 022 — हाथीक सूप सन कान

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 33 काव्य-पाँति ।

‘हाथीक सूप सन कान’ जीव-वर्णनक गीत अछि । सूँड, दाँत, कान, मोट पाएर आ धम्मक-धम ध्वनि मिलि हाथीक ठोस देहगत उपस्थिति रचैत अछि; ‘सूप’क स्थानीय वस्तु-उपमा दृश्यकें मिथिलाक घर-जगतसँ जोड़ैत अछि ।

‘पैघ देहमे कोमल चालि’ शक्ति आ कोमलताक संगति खोलैत अछि । पाठ पशु-वर्णनसँ वन-अधिकारक विचार धरि पहुँचैत अछि । अन्तक पर्यावरणीय सन्देश स्पष्ट अछि, मुदा मूल काव्य-रस ‘धम्मक-धम्मक’क लय आ कान-बसातक क्रियामे बेसी अछि ।

कविता-गीत 023 — छुट्टी

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 32 काव्य-पाँति ।

‘छुट्टी’मे नाना-नानी, मामा-मामी, पोखरि, पगडंडी, मेघ आ धानक लहर
छुट्टीकेँ उपभोगक खाली समय नहि, रिश्तेदारी आ ग्रामीण ज्ञानक पुनर्सम्पर्क
बनबैत अछि। गाम जाएबाक आशा व्यक्तिगत नेहक भूगोल रचैत अछि।

‘छुट्टी केवल खेल नहि / ई प्रकृतिक खुलल पाठ’ शिक्षा आ अनुभवक सीमा
मेटबैत अछि। मुदा समापनमे स्कूल-अध्ययनक वापसीक निर्देश अनिवार्य नीति
बनैत अछि। रचनाक मौलिक भाग रिश्तेदारीक अलग-अलग संवेदन आ वर्षाक
विविध ध्वनि अछि।

कविता-गीत 024 — बौआ गेल सुनि

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 44 काव्य-पाँति ।

‘बौआ गेल सुनि’ गिनतीक अनौपचारिक बालगीतसँ आरम्भ होइत अछि । एक-दू-तीन सँ अठारह-बीस धरि अंकसभकेँ ध्वनि, डर आ हास्यक क्रममे रखल गेल अछि; अंक अर्थक कठोर संकेत नहि, खेलक सामग्री अछि ।

पछिला भागमे गिनती धैर्य, साहस आ अनन्त भविष्यक रूपक बनि जाइत अछि । ‘गिनती केवल अंक नहि’ गीतक स्वघोषित बोध अछि, मुदा लघु बाल-ताल सँ दीर्घ उपदेशमे विस्तार रचनाक एकरूपता तोड़ैत अछि । पहिल अंश मौखिक बाल-काव्यक विशिष्ट स्मृति लऽ कऽ अबैत अछि ।

कविता-गीत 025 — मिथिला

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 39 काव्य-पाँति ।

‘मिथिला’ निजी सांस्कृतिक लगावकेँ प्रतिरोध आ आत्म-संशोधनक दू दिशामे पढ़ैत अछि। आरम्भक संघर्षमूलक स्वरक बाद ‘अभिमान नहि, आत्मसम्मान’क विचार स्थानीय पहिचानकेँ आनक सम्मानसँ जोड़ैत अछि।

नदी, खेत, पोखरि, भाषा, पोथी, कला आ विज्ञान—ई सामूहिक बिम्ब मिथिलाकेँ केवल अतीतक गौरव नहि, जीवित वर्तमान आ भविष्यक दायित्व बनबैत अछि। मुदा आरम्भक ‘मथल जतए शत्रुकेँ’ सन दावासभ ऐतिहासिक साक्ष्य रूपेँ नहि, काव्य-आह्वान रूपेँ पढ़ल जाय। अन्तक सांस्कृतिक शिक्षामूलकता स्पष्ट, किन्तु गामक संवेदी पाँति बेसी प्रभावी।

कविता-गीत 026 — बादुर सोंस

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 40 काव्य-पाँति ।

‘बादुर सोंस’ देखबाक बदला सुनबाक ज्ञान-प्रक्रियाकें केन्द्रमे अनैत अछि ।

बादुरक प्रतिध्वनि आ सोंस-डॉल्फिनक ध्वनि-दिशानिर्णयक तुलना बाल-विज्ञानक दृष्टिसँ रोचक अछि; ‘स्वर पठबै, स्वर घुरि अबै’क आवृत्ति तथ्यकें श्रव्य रूप दैत अछि ।

‘जे नहि देखाइ, से नहि हेरायल’क भाव ज्ञानेन्द्रियसभक सीमाक प्रति प्रश्न जगबैत अछि । मुदा ‘राडार युक्त’ वैज्ञानिक अर्थमे रूपक मात्र अछि; वास्तविक ध्वनि-प्रतिध्वनि (इकोलोकेशन) आ रेडियोतरंग-आधारित राडार एक नहि । कविता एही कारण वैज्ञानिक जिज्ञासाक आरम्भ अछि, प्रयोगशालाक प्रमाण नहि ।

कविता-गीत 027 — की? किए? कोना? के?

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 25 काव्य-पाँति ।

‘की? किए? कोना? के?’ प्रश्नवाचक अनुक्रम जीवनक पारिस्थितिक चक्रकें बालकक जिज्ञासाक माध्यम बनबैत अछि। मेघ, माटि, घास, गाय, दूध, हर, खेत, धान आ भात—वस्तुसभक श्रृंखला गामक कृषि-संसारक परस्पर निर्भरता दिखबैत अछि।

‘गाएसँ दूध / बौआ पीबू’क निकटतामे उत्पादन आ पोषणक सम्बन्ध सरल बनैत अछि, मुदा ‘चाली’ सन शब्दक अर्थ प्रसंगानुसार स्पष्ट करबाक आवश्यकता अछि। अन्तिम प्रश्न शीर्षककें फेर खोलैत अछि; रचना उत्तर देबैत-देबैत प्रश्नक प्रक्रिया जीवित रखैत अछि।

कविता-गीत 028 — फेर आएल जाड़

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 28 काव्य-पाँति ।

‘फेर आएल जाड़’क आरम्भमे भोरक बसात ‘सुइया जकाँ’ गाल छूबैत अछि — ऋतु-स्पर्शक ई सटीक बिम्ब अछि । तकर बाद कविता ऊँच कल्पना आ धरतीपर पाए रखबाक संतुलनक रूपक बनैत अछि ।

‘टूटल मन, टूटल सेतु’क तुलना सम्बन्ध जोड़बाक कठिनाई देखबैत अछि । शीतक अनुभवसँ माता-पिता-गुरुक ऋण आ देशक प्रश्न धरि बढ़ल नैतिक विस्तार प्रखर अछि, मुदा विषयगत छलाङ कने तेज अछि । ऋतु स्वयं जे अनुभव देत, तकरा छोड़ि उपदेश बेसी होइत अछि ।

कविता-गीत 029 — अंध विश्वास

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 14 काव्य-पाँति ।

‘अंध विश्वास’ पर्यटक-गाइडक दावाक प्रतिपरीक्षण पर आधारित लघु व्यंग्य अछि । मन्दार पर्वतपर सर्पक चिन्हकें समुद्र-मन्थनक प्रमाण कहबाक प्रसंगमे संगी गोलाकार चढ़बाक बाटक व्यावहारिक कारण रखैत अछि ।

‘पहाड़ ऊपर चढ़य लेल / गोलाकार रस्ता बनबाऊ’ कथन प्रत्यक्ष विकल्पी व्याख्या प्रस्तावित करैत अछि, अन्तिम निर्णय घोषित नहि करैत । एहि कारण कथा मिथक-निषेध मात्र नहि, प्रमाणक प्रतिस्पर्धी कारण जाँचबाक अभ्यास बनैत अछि । स्थल-विषयक दावा मात्र कविता पढ़ि इतिहाससिद्ध नहि मानल जा सकैत अछि ।

कविता-गीत 030 — अभ्यास

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 31 काव्य-पाँति ।

‘अभ्यास’क पहिल प्रसङ्ग मृदंगक हाथ-गति आ लय टूटबाक प्रश्न पर अछि । गुरु भोर-साँझक अभ्यास बतबैत छथि; विद्यार्थी अपन पहिनेसँ कएल अभ्यासक व्यर्थता पर प्रतिप्रश्न करैत अछि ।

दोसर प्रसङ्ग पाथरमे घोड़ा पहिनेसँ कल्पनासँ देखबाक कला प्रस्तुत करैत अछि—‘जतए पाथर बेसी अछि / तोड़ि अहाँ हटाऊ’ । शिल्पक क्रिया आ संगीतक अभ्यासक तुलना रचनाकें समृद्ध बनबैत अछि; ई मात्र परिश्रमक उपदेश नहि, लक्ष्य-रूपक स्पष्ट कल्पनाक पक्षधर अछि ।

कविता-गीत 031 — आँखिक चश्मा

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 20 काव्य-पाँति ।

‘आँखिक चश्मा’मे चिकित्सक, दादा आ गलत दृष्टि-परीक्षणक बीच हास्य गढ़ल गेल अछि । सडल आमकेँ ‘बैलून’ बुझबाक भ्रम आ दूरबीनक शीशाक अनमेल प्रयोग कथनक असंगतिकेँ हास्यमय बनबैत अछि ।

रचनाक ऊर्जा संवादक अकस्मात उलटफेरमे अछि—‘हमहीं बताऊ भेल की हमरा?’ चिकित्सा-सेवाक व्यावहारिक प्रमाणक प्रश्न उठा दैत अछि । मुदा रोग अथवा चश्मा-निर्णयक विशिष्ट वैज्ञानिक सलाह एहि हास्यसँ निकालब अनुचित होयत । ई सेवा-पद्धतिक व्यंग्य अछि, चिकित्सकीय मार्गदर्शिका नहि ।

कविता-गीत 032 — तीने टा अछि ऋतु

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 24 काव्य-पाँति ।

‘तीने टा अछि ऋतु’मे विद्यालय नहि आएबाक तीन मौसमगत बहना श्रृंखलाबद्ध होइत अछि। शिक्षकक ‘तँ ऋतु बदललासँ ध्येय किएक जाएब?’ प्रतिप्रश्न हास्यकें अनुशासनक शिक्षामे बदलैत अछि।

छाता, भोरक यात्रा आ गरम कपड़ा—वर्षा, गरमी, जाइक व्यवहारिक प्रत्युत्तर अछि। मुदा मौसमजनित वास्तविक जोखिम आ रोगकें मात्र आलस मानब सर्वथा पर्याप्त नहि; कविता स्वयं जल-जमाव आ शीतलहरक कठिनाई स्वीकार करैत अछि। तँ रचनाक अध्ययनमे पढ़बाक आग्रह आ सुरक्षित पहुँचक सामाजिक आवश्यकता दुनू राखब जरूरी अछि।

कविता-गीत 033 — दरिद्र

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 14 काव्य-पाँति ।

‘दरिद्र’ पैघ भूमि-सम्पत्तिसँ आर्थिक पतन धरि पहुँचबाक कथा एकटा धोती आ माँछक विकल्पमे संकुचित करैत अछि। जखन ककरो लेल कपड़ा उपयोगी वस्तु अछि, पात्र तत्काल स्वादकें प्राथमिकता दैत छथि।

‘धोती तँ जखने पाइ होएत’ कथन उपभोगक वर्तमान-केन्द्रितता दिखबैत अछि। अन्तिम ‘सभ दिनुका चरित्र’ मूल्याङ्कन व्यक्तिगत आर्थिक आचरणकें नैतिक कारण बना दैत अछि; मुदा दरिद्रताक सामाजिक-आर्थिक कारण अन्यत्र रहि सकैत अछि। लघु कथा व्यवहारगत विसंगतिक व्यंग्य अछि, गरिबीक सार्वभौम सिद्धान्त नहि।

कविता-गीत 034 — रौह नहि नैन

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 28 काव्य-पाँति ।

‘रौह नहि नैन’ नाम बदललासँ बाजारक मोल बदलबाक स्थितिकँ उघाड़ैत अछि । ग्रामीण नाम ‘नैन’ आ शहरी ग्राहकक अपेक्षित नामक टकराव भाषा, व्यापार आ सांस्कृतिक पहिचानक लघु नाट्य बनैत अछि ।

‘एके जीव, एके आँखि, / नाम बदलिते भाव बदलै’ शब्द आ वस्तुक सम्बन्धपर सटीक विचार अछि । पर कथा आरम्भमे जे जीव-श्रेणीसभक तुलना करैत अछि, तकर प्रादेशिक अर्थ वैज्ञानिक वर्गीकरण जकाँ नहि मानल जाय । रचना शब्दक बाजार-शक्ति आ मूल्य-निर्माणक सांस्कृतिक पक्षक आलोचना अछि ।

कविता-गीत 035 — जूताक आविष्कार

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 14 काव्य-पाँति ।

‘जूताक आविष्कार’क कथा पैघ शासकीय आदेश आ छोट व्यवहारिक समाधानक अन्तर उघाइत अछि। राजा काँटासँ बचबाक लेल पृथ्वीकेँ चर्मसँ ढकबाक आदेश दैत छथि; चर्मकार पएर पर जूता पहिरबाक विकल्प दैत अछि।

एकर कथा-वक्र सरल मुदा प्रभावी अछि: समस्या संसारकेँ बदलबाक नहि, अपने आ संसारक सम्बन्धक सही साधन चुनबाक अछि। चर्मकारक बुद्धिक कारण राजसत्तासँ दूर रहनिहार कारीगर ज्ञानक केन्द्र बनैत अछि। एकरा इतिहासक वास्तविक आविष्कार-आख्यान नहि, उपयोगिताबोधक दृष्टान्त मानब चाही।

कविता-गीत 036 — बूढ़ वर

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 26 काव्य-पाँति ।

‘बूढ़ वर’क प्रारम्भ वृद्ध वरक बालिका-विवाहक चाह पर तीक्ष्ण हास्य अछि ।
‘१५-१५ वरखक दूटा’ बदला ‘३० केर भेटत एकटा’क गणना विवाहक मानवीय
सम्बन्धकें खरीद-बिक्रीक अंकगणित बनबैत अछि ।

दोसरा भागमे शिक्षा, सहमति आ बराबर सम्मानक विचार अपन स्पष्ट
सामाजिक हस्तक्षेप करैत अछि । मुदा हास्य-प्रसङ्ग आ समकालीन अधिकार-
भाषा बीच शैलीगत अन्तर बडा अछि । रचनाक सबल पक्ष बाल-विवाहक
मनोवृत्तिक नग्न गणना देखबेनाइ अछि; अन्तक समाधान पाठकें खुलि
सामाजिक न्याय दिस लऽ जाइत अछि ।

कविता-गीत 037 — रिपेयर

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 24 काव्य-पाँति ।

‘रिपेयर’ विद्यालयक ताला-मरम्मतिक बिल पर उठल प्रश्नसँ सार्वजनिक धनक नैतिकता सामने अनैत अछि। ‘नव ताला’ सस्तो भऽ सकबाक तर्कक उत्तरमे कारीगरक ‘कमीशन’क संकेत लेनदेनक गुप्त व्यवस्था खोलैत अछि।

टक्का, ताला आ बिलक ठोस वस्तुसभ गीतकेँ सहज लघु व्यंग्य बनबैत अछि। मुदा उचित मरम्मत बनाम नब खरीदक निर्णय मात्र मोलसँ नहि, गुण, टिकाऊपन आ कारीगरक दामसँ सेहो जुड़ैत अछि। पछिला अंशमे एहि अनेक विकल्पक विवेक देल गेल अछि।

कविता-गीत 038 — नोकर

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 14 काव्य-पाँति ।

‘नोकर’ फोनपर भेल गृह-संवादक एक क्षणकें व्यंग्यमे बदलैत अछि। ‘एहि फोनक हम बिल भरैत छी’ कहनिहार व्यक्ति अपन सेवाभावक सीमा जतबैत छथि; अन्तमे अपनाकें ‘कनिया केर टा छी हम नौकर’ कहलासँ घरेलू सत्ता-संबन्ध पर अप्रत्याशित हास्य उठैत अछि।

ई लघु रचना प्रश्नवाचक बाधाक प्रतीक्षापर चलैत अछि: ‘आकि...’ पूरा होएबाक पहिने प्रत्युत्तर आबि जाइत अछि। हास्य परिवारक भीतरक भूमिकाक असमानता सेहो उघाइत अछि; ‘नोकर’ शब्दकें घरक श्रमक वास्तविक सम्मानक दृष्टिसँ पढ़नाइ उपयोगी अछि।

कविता-गीत 039 — क्लासमे अबाज

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 24 काव्य-पाँति ।

‘क्लासमे अबाज’ आवाजक स्रोत पत्ता लगएबाक शिक्षकक क्रमशः विभाजन-पद्धति पर आधारित अछि । बेंचकेँ आधा-आधा करैत प्रश्न छोट करब तर्कक प्रयोग जकाँ अछि, मुदा अन्ततः दुई व्यक्तिक बीच निष्कर्ष ठहरि जाइत अछि ।

‘अनुमानक बाट सँ खोज चलल / मुदा प्रमाण रहए कतऽ’ मूल शिक्षण-संकट अछि । निन्दा अथवा आरोप लगएबाक पहिने प्रत्यक्ष आधार चाही—एहिसँ कविता न्यायमीमांसाक लघु पाठ बनैत अछि । आरम्भक दृश्य हास्यप्रधान अछि; अन्तक शिक्षा ओहि हास्यक तर्कगत अर्थ खोलैत अछि ।

कविता-गीत 040 — एस.एम.एस.

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 24 काव्य-पाँति ।

‘एस.एम.एस.’ मोबाइल-मतदानक सहमत/असहमत द्वन्द्व आ ओकर आर्थिक प्रोत्साहन पर व्यंग्य अछि। ‘दुनू रूपमे दिअ अहाँ अपन विचार कय एस.एम.एस.’ कहनाइ विचारक स्वतन्त्रताक दावा अछि, मुदा तैयार दुनू खाँचा जटिल प्रश्नक अन्य सम्भावना हटबैत अछि।

‘ककर लाभ, कतेक टाका जाउ?’ रचनाक प्रखर व्यावहारिक प्रश्न अछि। आरम्भक ‘न्यु टेक्नोलोजी’क प्रचारक आत्मविश्वासक पाछाँ व्यापारिक हितक विश्लेषण अछि। डिजिटल नागरिकताक विषय पाठमे उपस्थित अछि; तथापि प्रत्येक संदेश-आधारित भागीदारी धोखेबाजी अछि, एहन सामान्य निष्कर्ष नहि निकालब चाही।

कविता-गीत 041 — टी.टी.

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 23 काव्य-पाँति ।

‘टी.टी.’मे टिकट-जाँचसँ भागैत भीड़ आ एक चप्पल बचा कऽ आननिहार युवकक कथा उलट नैतिक बुद्धि रचैत अछि। लोक ओकरा बुरबक कहैत छथि, मुदा बादमे अन्य सभक दुनू चप्पल हराइत अछि आ ओकर एक चप्पल बचल रहैत अछि।

हास्यक स्रोत ‘एक चट्टी’क निरर्थकता अचानक तुलनात्मक लाभमे बदलनाइ अछि। नाम परिवर्तन सामाजिक मान्यता कतेक जल्दी फेरबदल होइत अछि, से देखबैत अछि। मुदा इहो व्यवहारिक कथा टिकटबिना यात्राक प्रशंसा नहि; हास्य मुख्यतः संकटमे उपलब्ध वस्तुक सापेक्ष मूल्यक अछि।

कविता-गीत 042 — खगता

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 16 काव्य-पाँति ।

‘खगता’ अपेक्षा आ मौनक सूक्ष्म घरेलू कविता अछि । अतिथि बेर-बेर उठैत-बैसैत छथि जे मौसी स्वयं आर्थिक सहायता पूछथिन; मुदा मौसी हुनक अपेक्षा नहि बुझैत छथि, वा बुझि कऽ नहि पूछैत छथि ।

‘आइ नहि पूछल जखन / बैसल फेर ओ तखन’क आवृत्ति झिझकक नाटकीय समय बनबैत अछि । आर्थिक अभावक प्रत्यक्ष उच्चारण सँ बचबाक आदत दूनू पक्षक संवाद बाधित करैत अछि । अतिथि-व्यवहारक सामाजिक संकेत एतय कविताक विषय अछि, साधारण हास्य मात्र नहि ।

कविता-गीत 043 — क-ख सँ दर्शन

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 15 काव्य-पाँति ।

‘क-ख सँ दर्शन’ शिक्षकक अपने महिमा-वर्णन आ जलखै-चाहक माँगक अन्तर्विरोध पर तीक्ष्ण व्यंग्य अछि। ‘द्रोणक नव अवतार’ कहनिहार व्यक्ति अपन अध्यापनकें आत्मस्वार्थक शर्त बनबैत छथि।

‘औठाँक नहि कोनो लालसा’क कथनक संग बारम्बार भोजनक आग्रह प्रकट स्वार्थ आ घोषित निस्पृहता बीच तफावत रचैत अछि। गुरु-शिष्य परम्पराक नामक प्रयोग, लघु संवाद आ अतिशयोक्ति एहि व्यंग्यक शिल्पगत उपकरण अछि। एकरा वास्तविक समस्त शिक्षक-समुदायक प्रतिरूप मानब अनुचित होयत।

कविता-गीत 044 — चोरकें सिखाबह

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 13 काव्य-पाँति ।

‘चोरकें सिखाबह’ खाटक नेवाड़ आ राति चोर आबयबाक कल्पनामे छोट घरेलू हास्य रचैत अछि। काका अपन बचाव लेल खाटक बनावट बदलैत छथि; भतीजाक तकनीकी सुझाव हुनक गुप्त बचाव-योजनाकें चोरक मार्गदर्शिका जकाँ बनबैत अछि।

अन्तक ‘वाह बेटा कहि दिहह चोरकें’ प्रत्युत्तर काकाक भाषणकें उलटि दैत अछि। कहानीक शक्ति सूचना ककरा कहल जा रहल अछि, एहि सन्दर्भपर निर्भर अछि। सुरक्षा आ चालाकीक सामान्य पाठक तुलनामे ई क्षणिक कथोपकथन बेसी मौलिक साहित्यिक उपलब्धि अछि।

कविता-गीत 045 — नरक निवारण चतुर्दशी

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 17 काव्य-पाँति ।

‘नरक निवारण चतुर्दशी’ ऋतु-पर्व, पूजा-सामग्री, सिंगरहार, महुआ, अशोकक पात आ गृहकाजक स्मृति-कणसँ बनल काव्य-कोलाज अछि। ‘भुखले भरि दिन’सँ आरम्भ भेल अनुभव धार्मिक व्रतक देहगत पक्षकें सामाजिक श्रमसँ जोड़ैत अछि।

रचनामे समय-क्रम बारम्बार पर्व बदलैत चलैत अछि, जे लोक-स्मृतिक असंखित गति हो सकैत अछि; मुदा पाठक लेल घटना-सम्बन्ध कने अस्पष्ट रहैत अछि। ‘सुगोकें ई खोआय रामायण’ सन स्थानीय सन्दर्भक पाठ-टिप्पणी महत्त्वपूर्ण होयत। ऐतिहासिक अनुष्ठानक प्रमाणक बदला जीवित स्मृतिरूपें एकरा पढ़ब उचित अछि।

कविता-गीत 046 — नौकरी

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 12 काव्य-पाँति ।

‘नौकरी’ वेतन, तनखा, तन आ जीविकाक शब्दखेलसँ व्यंग्य आरम्भ करैत अछि । गाम घुरबाक विकल्पपर ‘कमलाक बालू’ खाएबाक प्रश्न बेरोजगारीक आर्थिक असम्भवता देखबैत अछि ।

नौकरी एतय केवल संस्थाक पद नहि, समय आ जीवनपर ओकर कब्जाक अनुभव अछि—‘भरि दिनका ठेही’क थाकन आ ‘भोर उठला’पर समस्या शेष रहब । संक्षिप्त कथनमे वेतनक आश्रय आ श्रमक पराधीनताक अन्तर व्यक्त भेल अछि ।

कविता-गीत 047 — मरकरी डिलाइट

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 20 काव्य-पाँति ।

‘मरकरी डिलाइट’ गामक परिचित उदना आ प्रवासक पछातिक नव धार्मिक-प्रतिष्ठाक बीच विरोध रचैत अछि । बाँस कटबाक पुरान संगति आ ‘त्रिपुण्ड-चानन’क वर्तमान छवि सामाजिक भूमिकाक नव निर्माण देखबैत अछि ।

‘गामक नव उदयनाचार्य’क व्यंग्य प्रतिष्ठाक दावा आ वास्तविक विद्वत्ताक अन्तरपर चोट अछि । मुदा ‘मरकरी-डिलाइट’ शीर्षकक वस्तुगत सन्दर्भ मूल पाँतिसभमे सम्पूर्ण रूपसँ फरिछ नहि होइत; एहि सीमा स्वीकार करब आवश्यक अछि । गामक स्मृति आ नव सार्वजनिक पहचानक टकराव एकर प्रखर क्षेत्र अछि ।

कविता-गीत 048 — दीयाबाती

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 22 काव्य-पाँति ।

‘दीयाबाती’ नन्हि दीपककँ अकासक तरेगनक समांतर रखैत अछि । ‘अकाससँ उतारि / रखलहुँ अप्पन दुआरि’ चित्तरूपकमे दूरस्थ उजास घरक भीतर आबि जाइत अछि ।

‘एक दीप दोसर दीपसँ / नेहक इजोत बाँटैत जाए’ सामूहिक ज्ञान-प्रसारक विचार खोलैत अछि । मुदा अन्तक स्पष्ट ‘इजोत बनू’ मूल छविक बहुअर्थकता कने कम करैत अछि । ध्वनि आ रूपक दुनूक सरलताक कारण ई सार्वजनिक पाठक लेल प्रभावी प्रकाश-गीत अछि ।

कविता-गीत 049 — फ्रैक्चर

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 28 काव्य-पाँति ।

‘फ्रैक्चर’मे काका अस्पतालमे भर्ती छथि, मुदा आगन्तुकक पहिल प्रतिक्रिया जमीन-जत्था आ पारिवारिक हिसाब पर अबैत अछि। ‘पैर टूटल’ बनाम ‘फ्रैक्चर’क भिन्न नाम एक दुखद अवसरकेँ शब्दगत हास्यमे बदलैत अछि।

रचनाक नैतिक धार एतय अछि जे बीमारीक हाल पूछबाक बदला आरोप आ उपदेशक भाषा अबैत अछि। ‘फ्रैक्चरे भेलन्हि / पैर टूटलन्हि नहि’क व्यंग्य चिकित्सकीय परिभाषा नहि, अवस्थाक गंभीरतासँ बचबाक भाषिक चाल अछि। करुणा आ हास्यक मिश्र ध्वनि एकरा स्मरणीय बनबैत अछि।

कविता-गीत 050 — बापकेँ नोशि नहि भेटलन्हि

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 12 काव्य-पाँति ।

‘बापकेँ नोशि नहि भेटलन्हि’मे अभावग्रस्त पिताक घटना आ आधुनिक दवाइक उपभोगक तुलना तीखा पीढ़ीगत अन्तर उघाइत अछि। ‘विक्स वेपोरब’क नाम ठोस बाजार-वस्तु बनि स्मृतिक भीतर घुसैत अछि।

मूल पाँतिसभमे बोलचालक लचक आ कथनक आकस्मिक छलाङ अछि, जाहिसँ सामाजिक व्यंग्य उठैत अछि। मुदा ‘नोशि’क सटीक प्रादेशिक अर्थ आ कथाक व्यक्ति-संबन्ध स्पष्ट नोट बिना कुछ अनिश्चित रहैत अछि। एहि सीमा स्वीकारि पाठक दवाइ बनाम अभावक विरोधकेँ प्राथमिक साक्ष्य मानब उचित अछि।

कविता-गीत 051 — दहेज

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 32 काव्य-पाँति ।

‘दहेज’क रेल-यात्राक संवादमे घटक आ बेटी-पिता विवाह-व्यवस्थाक आर्थिक अन्यायकें सजीव करैत छथि । वरपक्षक मोटरसायकिल, चेन आ सत्कारक माँग व्यक्तिगत सम्बन्धकें बोझिल बाजार बनबैत अछि ।

‘हँ मे हँ टा मिलेलियन्ह’ कथन पिताक असहाय सहमतिक व्यंग्य अछि । ‘लक्ष्मीपात्र’ सन शब्द आर्थिक माँगकें धार्मिक-सांस्कृतिक आवरण देबैत अछि । समापनमे तीन बेटी आ कर्जक उल्लेख प्रसंगक सामाजिक परिणति घन करैत अछि; एहि कारण कविता हास्यक पाछाँ ठाढ़ अनिष्टकें उजागर करैत अछि ।

कविता-गीत 052 — बेचैन नहि निचैन रहू

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 28 काव्य-पाँति ।

‘बेचैन नहि निचैन रहू’ मनीऑर्डरक प्रतीक्षा, चिट्ठी आ डाकघरक बीच प्रवासी परिवारक सम्बन्ध देखबैत अछि। पैसा नहि पहुँचल, मुदा चिट्ठी पहुँचल—ई दू सन्देश-प्रणालीक दूरी आर्थिक जीवनक मार्मिक प्रसंग अछि।

‘संदेश नीक, मुदा काजो चाही’क अन्तिम पाँति आश्वासन आ वास्तविक निर्वाहक अन्तर फरिछु करैत अछि। पोस्टबाबूक व्यवहार संस्था आ ग्राहकक बीच असमान सामर्थ्य देखबैत अछि। गीतक पुरान डाक-प्रणाली आजुक अंकीय हस्तान्तरणसँ तुलना योग्य सांस्कृतिक अभिलेख अछि।

कविता-गीत 053 — थल-थल

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 29 काव्य-पाँति ।

‘थल-थल’ पुरान कादो-भिजल रस्ताक स्थानपर खरंजा बनबाक घटना पर केन्द्रित अछि । बालक लेल धँसल पएर आ पानिक छप-छप केवल कठिनाई नहि, खेलक दृश्य सेहो छल ।

नव बाटक सुविधा स्वीकार करैत कविता पूछैत अछि—विकासक संग खेलक ठाम किएक मिटाय? ई प्रश्न सड़क-निर्माणक विरोध नहि, बाल-अनुभवकें योजनामे स्थान देबाक आग्रह अछि । पुरनका रस्ताक भावुक स्मृति आ नव संपर्कक व्यावहारिक लाभ बीच संतुलन एकर विशिष्ट उपलब्धि अछि ।

कविता-गीत 054 — क्रिकेट-फील्डिंग

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 25 काव्य-पाँति ।

‘क्रिकेट-फील्डिंग’क हास्य खेलाड़ी बालकक ‘बॉलिंग आ कि बैटिंग?’ प्रश्नसँ आरम्भ होइत अछि । बुजुर्गक ‘पहिने करह गऽ फील्डिंग हथौआ’ प्रत्युत्तर खेलक आकर्षक भागक बदला परिश्रमपूर्ण आधार चुनव सिखबैत अछि ।

‘दोसरक पारीक मान करू’क भाव खेलमे पारस्परिक सहयोग अनैत अछि । टीमक सफलता आ व्यक्तिगत चमकक अन्तर पाठक समक्ष ठोस मैदान-दृश्यसँ रखल गेल अछि । खेलक भाषा अंग्रेजी-मैथिली मिश्रित अछि, जे समकालीन किशोर बोलचालक एक यथार्थ रूप बनैत अछि ।

कविता-गीत 055 — मैट्रिक प्लक

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 25 काव्य-पाँति ।

‘मैट्रिक प्लक’ एकटा शैक्षिक पदवीक गलत उच्चारणसँ व्यंग्य बनबैत अछि । पात्र पदवीक नाम सुनि सामाजिक प्रतिष्ठाक अनुमान करैत छथि, मुदा ‘फेल’क संकेत पर व्यंग्यक दिशा खुलैत अछि ।

‘फेल भेलासँ जीवन फेल नहि’क उत्तरार्द्ध प्रारम्भक उपहासकें संशोधित करैत अछि; एहि द्विस्वरमे रचना अपनहि हास्यक संभावित क्रूरता पर प्रश्न करैत अछि । डिग्री-भाषाक बाजारू प्रभाव आ वास्तविक शिक्षा-दक्षताक भेद एकर अर्थकें विस्तार दैत अछि ।

कविता-गीत 056 — काँकड़

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 24 काव्य-पाँति ।

‘काँकड़’क ड्रममे फँसल कांकड़ासभ एक-दोसराक पएर घींचि बाहर निकलबाक अवसर नष्ट करैत अछि । लोक-साधारण दृष्टान्त माध्यमे ईर्ष्या, प्रतिद्वन्द्विता आ सामूहिक असफलताक कल्पना निर्मित होइत अछि ।

‘एक चट्टै तँ दोसर पकड़ै’ रूपक स्पष्ट अछि, मुदा जन्तुक वास्तविक व्यवहारक वैज्ञानिक सामान्यीकरण नहि । कथाक शक्ति मनुक्खक सामाजिक क्रियाक वस्तुगत दृश्यसँ जोड़बमे अछि । अन्तक ‘हाथ पकड़ि ऊपर उठाउ’ दृश्यक उलट सकारात्मक सामूहिकता प्रस्तुत करैत अछि ।

कविता-गीत 057 — कैप्टन

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 24 काव्य-पाँति ।

‘कैप्टन’क पप्पूभाइ आगाँ खेलबाक दावा करैत छथि, मुदा टोलीक हार देखिते पाछाँ सँ निर्देश देबाक कोशिश करैत छथि । ई उलटफेर नेतृत्वक दावा आ उत्तरदायित्वक व्यावहारिक बोझक भेद खोलैत अछि ।

‘कखनो पाछाँ रहि टीम बचायब’ अन्तक मूल्य-बोध अछि, जे कैप्टनकें पद-वाचक हुकुमी व्यक्तिसँ सहयोगी बनबैत अछि । मात्र क्रिकेट/वॉलीबॉल खेलक विवरण नहि, शक्ति-वितरणक व्यवहार पर ई लघु व्यंग्य अछि ।

कविता-गीत 058 — दूध

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 27 काव्य-पाँति ।

‘दूध’मे बहिन दाइक गप्पक बीच चूल्हपर दूध औँटैत रहल अछि । आगन्तुक सीधा सूचना देबाक बदला साँपक काल्पनिक लम्बाइ सँ हुनकर ध्यान दूध दिशि फेरबैत अछि—रचनाक हास्य-युक्ति ई अप्रत्यक्ष संकेत अछि ।

‘दूध जतय अछि औँटाइत’क वाक्य गुप्त सचेतक बनैत अछि । पछिला भाग काजक जिम्मेदारी बनाम मीठ बातचीतक संघर्ष बतबैत अछि । गीतक आरम्भक संवादक अल्हड़ापन नैतिक उपदेशसँ बेसी प्रभावकारी अछि; एहि अन्तरकै बचा कऽ पढ़ब चाही ।

कविता-गीत 059 — अटेंडेंस

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 26 काव्य-पाँति ।

‘अटेंडेंस’क क्रॉस आ हस्ताक्षरक स्थान-संबन्ध साधारण कार्यालय-प्रसंगकें प्रमाणमीमांसाक प्रश्न बना दैत अछि । ‘हस्ताक्षर पहिने, क्रॉस लगाओल अहाँ कखन?’—एहि प्रश्नसँ दृश्य क्रमक निर्धारण बिना जिम्मेदारी तय करबाक खतरा उघाड़ होइत अछि ।

रचनामे छात्र/कर्मचारीक चालाकीक हँसीक संग कागजी रिकॉर्डक साक्ष्य-सीमा देखाइत अछि । अन्तक समयपालनक शिक्षा प्रसंगक एक सम्भव निष्कर्ष अछि, मुदा मूल द्वन्द्व ‘पहिने’ आ ‘पाछाँ’क प्रमाणक अछि ।

कविता-गीत 060 — शो-फटक्का

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 21 काव्य-पाँति ।

‘शो-फटक्का’ भाषणक चमक आ वास्तविक काजक अभावक व्यंग्य अछि ।
‘गपक फुलझडी’ रूपक बाहरी प्रदर्शनक क्षणभङ्गुरता दिखवैत अछि; ‘अधूरा
काजक ढेरी’ ओहि चमकक पाछाँक सच्चाई अछि ।

‘हाथ लगाउ, ईंट उठाउ’ कल्पित मकानकेँ श्रमक मूर्त परिणामसँ जोड़ैत
अछि । कविता प्रत्यक्ष उपदेश दैत अछि, मुदा ‘फटक्का’ शब्द स्वयं ध्वनि आ
प्रकाशक क्षणिक रूपक बनि प्रभाव उत्पन्न करैत अछि ।

कविता-गीत 061 — भारमे माटि

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 27 काव्य-पाँति ।

‘भारमे माटि’मे दू दिस बराबर बोझ रखबाक काबिल ठाकुरक सलाह श्रम-
अनुभव पर आधारित अछि। प्रतिस्पर्धी व्यक्ति ओकरा ‘दोबर काज’ कहि
भरियाकें भड़कबैत अछि, फलतः लाभक बाट छूटि जाइत अछि।

संतुलनक वास्तविक शारीरिक ज्ञान सामाजिक सहकार्यक रूपक बनैत अछि।
कथा ईर्ष्याक कारण केवल आनक क्षति नहि, अपन कार्यक नाशो देखबैत अछि।
अन्तिम शिक्षण-गद्य स्पष्ट अछि; मुदा बोझक दू पल्लाक दृश्य स्वयं पर्याप्त
अर्थसमर्थ अछि।

कविता-गीत 062 — कंजूस

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 21 काव्य-पाँति ।

‘कंजूस’क मूल विनोद गन्ध बनाम भोजन आ पाइक झनक बनाम वास्तविक धनक अदला-बदली पर निर्भर अछि। पात्र प्रतिफलक स्थानपर संकेत भरि दैत छथि, जे अर्थहीन हिसाबकें न्यायक रूपमे प्रस्तुत करैत अछि।

‘गमक भेटल, तीमन नहि / झनक भेटल, पाइ नहि’ समानान्तर वाक्यरचना एकर प्रखर साहित्यिक केन्द्र अछि। उत्तरार्द्ध बचत आ कंजूसीक भेद खोलैत अछि; मुदा पहिल खिस्साक प्रतिप्रत्यय बेसी सूक्ष्म आ हास्यपूर्ण अछि।

कविता-गीत 063 — पाइ

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 25 काव्य-पाँति ।

‘पाइ’मे दहेज नलेबाक उपदेश देनिहार व्यक्ति अपन पहिने दहेज लेबाक इतिहाससँ घेराइत अछि। ‘जे दबा दैत छियैक हमरा सभ पाइकेँ’ कथन निजी लाभकेँ नैतिक सिद्धान्तक ऊपर राखबाक विडम्बना उघाइत अछि।

कविताक बल उपदेश आ अपन आचरण बीचक तफावत अछि। अन्तक दहेज-विरोधी स्पष्ट सामाजिक प्रतिज्ञा उचित अछि, मुदा व्यंग्यक शक्तिशाली काम प्रश्नोत्तरक मूले सम्पन्न भऽ जाइत अछि।

कविता-गीत 064 — असत्य

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 18 काव्य-पाँति ।

‘असत्य’मे ‘असत्य नहि कहियो छी बाजल’ सन नितान्त पूर्ण आत्मघोषणा पर प्रश्न उठैत अछि । सहायताक दावा करनिहार व्यक्ति दुःख सुनि काज करैत छथि, मुदा अपनहि पहुँचि दुःख पुछबाक व्यवहार नहि अपनबैत छथि ।

सत्य केवले नकारात्मक असत्य-अभाव नहि, सक्रिय उत्तरदायित्वक विषय बनैत अछि । ‘आलंकारिक प्रयोग’क बहाना वक्ताक आत्मरक्षणक भाषा अछि; पाठ व्यंग्यक संग नैतिक आत्म-परीक्षणक अवसर दैत अछि ।

कविता-गीत 065 — समुद्री

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 27 काव्य-पाँति ।

‘समुद्री’मे विद्वत्ताक आधार वंश, कपारक चिन्ह, संस्कृत-ज्ञान आ सामुद्रिक भविष्यवाणी बीच खिसकैत रहैत अछि । याज्ञवल्क्य, कपिल, कणाद, जैमिनि आ गौतमक नाम प्रतिष्ठाक दावा बनैत अछि; प्रश्न ई अछि जे वक्ता स्वयं की जनैत छथि ।

‘चिह्न कपारक ज्ञान नहि बनै’ निष्कर्ष मूल संवादक तर्कगत रूपरेखा प्रस्तुत करैत अछि । दर्शन-इतिहासक नामक उपस्थिति व्यक्तिक वास्तविक विद्वत्ता सिद्ध नहि करैत; कविता ज्ञानक सत्यापनक पक्षधर अछि, मुदा सामुद्रिक दावाक खण्डन लेल स्वतंत्र प्रमाण अपेक्षित रहत ।

कविता-गीत 066 — गाम

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 25 काव्य-पाँति ।

‘गाम’ तीस वर्ष नगरमे रहितो पड़ोसीसँ अपरिचित व्यक्तिक अकेलापन पर केन्द्रित अछि । गामक नेह-मिश्रित स्मृति आ नगरक भीड़ बीच बोधक विरोध आरम्भमे प्रबल अछि ।

महत्त्वपूर्ण मोड़ ‘गामो केवल स्मृति नहि, ओतहु श्रम, विवाद, अभाव; शहरो केवल पत्थर नहि, मित्र बनाबी तँ खुलै लगाव’ मे अछि । कविता स्मृतिप्रधान ग्रामीण रोमान्सक स्वतः आलोचना करैत अपन ठाम संबंध बनएबाक जिम्मेदारी सुझबैत अछि । ई द्विपक्षीय दृष्टि एकरा साधारण गाम-स्तुतिसँ अलग करैत अछि ।

कविता-गीत 067 — लोली

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 17 काव्य-पाँति ।

‘लोली’क विवाद स्थानीय शब्दक अर्थ आ बाहरी सजावटबोधक टकरावपर अछि। ‘लोली’क घरोआ स्नेह आ ‘फैशन-लिपिस्टिक’क आधुनिक छवि भाषा-परिवर्तनक हास्य रचैत अछि।

‘दादी हँसली’क स्मृति शब्दकें पीढ़ीगत अनुभवसँ जोड़ैत अछि। मुदा एकहि शब्दक सभ बोलचालमे एक अर्थ नहि रहैत; क्षेत्रानुसार शब्दार्थ बदलि सकैत अछि। रचना पुरान रूपक संरक्षणक आग्रह अछि, भाषा-विज्ञानक सर्वमान्य निर्णय नहि।

कविता-गीत 068 — तकलाहा दिन

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 19 काव्य-पाँति ।

‘तकलाहा दिन’ विवाहक शुभदिनक विचार पर युवक आ पण्डितक व्यंग्यात्मक संवाद अछि। युवक पश्चिमी प्रगतिक तर्क रखैत अछि; उत्तरमे पण्डित विवाह-सम्बन्धक स्थायित्वक प्रश्न उठा दैत छथि।

‘एक दिनक मुहूर्त सँ पैघ / बरख-बरखक नेह-संभार’ कथन समस्या तिथि सँ व्यवहार दिशि घुमबैत अछि। मुदा विदेशक विवाह जीवनपर सामान्य टिप्पणी प्रसङ्गमात्र अछि, प्रमाणित सामाजिक तुलना नहि। बौद्धिक मूल्य प्रश्नक केन्द्र बदलनाइ अछि।

कविता-गीत 069 — बिकौआ

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 18 काव्य-पाँति ।

‘बिकौआ’मे ‘बी.के.’ नामक संक्षेप नव धनिक प्रतिष्ठाक संकेत बनैत अछि ।
पुरान परिचित व्यक्ति एहि नव पहचानकेँ चुटकीमे व्यंग्य बनबैत छथि; अक्षरक
चमत्कार धनक आधारे निर्मित सामाजिक दूरी उद्घाटित करैत अछि ।

‘नाम छोट भेल, ठाठ पैघ’क विरोधाभास कविताक स्मरणीय सूत्र अछि ।
उपभोक्तावादी आत्म-प्रदर्शनक आलोचना स्पष्ट अछि; मुदा व्यक्ति-विशेषक
सम्पत्तिसँ मूल्यगत पतनक निर्णय प्रमाणित तथ्य जकाँ नहि करब चाही ।

कविता-गीत 070 — गद्दरिक भात

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 17 काव्य-पाँति ।

‘गद्दरिक भात’क क्षीण देह, महँग गहूम आ सीमित अन्न-विकल्प भोजन-संकटक चित्र बनबैत अछि। ‘गद्दरियोक किए नहि देल?’ प्रसंगमे पेटक आवश्यकता प्रतिष्ठित अन्नक वर्गीकरणकेँ प्रश्न करैत अछि।

‘धान, गहूम, गद्दरि’क अनुक्रम स्थानीय कृषि-विविधताक संकेत अछि। मगर गरीबीकेँ केवल संयमक शिक्षा नहि बनाउ: मूल पाँतिसभ खाद्यान्न-प्राप्तिक असमान सामर्थ्य देखबैत अछि। उत्तरार्द्ध किसानक श्रमक मानक बात कहैत अछि, जखनकि आरम्भ भूखक कड़ुआ यथार्थ अछि।

कविता-गीत 071 — एकटा आर कोपर

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 20 काव्य-पाँति ।

‘एकटा आर कोपर’ पुरखाक हाथी, जंजीर आ बड़प्पनक गप्प बनाम वर्तमानक टिमटिमाइत ‘वरन्डिबिया’क ठोस विरोध अछि। पैघ वंशगौरवक कथनक तुरन्त बाद ‘एकटा कोपर’ माँगब भूख/चाहक साधारण आवश्यकताकेँ हँसीमे बदलैत अछि।

राजकीय समृद्धिक प्रतीक हाथीसँ दैनिक प्यालाक दूरी इतिहासक दम्भ आ वर्तमानक यथार्थक असंगति प्रकट करैत अछि। गप्पक आरम्भिक ठाठ यथार्थक अभाव छुपबैत अछि; कविता प्रश्न करैत अछि जे वंशक यश आजुक श्रमक विकल्प कोना भऽ सकैत अछि।

कविता-गीत 072 — महीस पर वी.आइ.पी.

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 22 काव्य-पाँति ।

‘महीस पर वी.आइ.पी.’ मेला जाएबाक यात्रा मे साधारण साधनकेँ उच्च प्रतिष्ठाक रूपमे देखबाक आत्म-विडम्बना अछि। महीसपर बैसल चार व्यक्ति अपन गोत्रक प्रभावसँ लोक रास्ता देबाक कल्पना करैत छथि।

ऊँच बैसबाक भौतिक अवस्था सामाजिक श्रेष्ठताक उपमा बनैत अछि; मुदा ‘मेला सभक, बाटो सभक’ कथन एही दावाकेँ अस्वीकार करैत अछि। लोकसमता आ जाति-गोत्रक आलोचनाक कारण ई हास्यक सामाजिक धार तीक्ष्ण अछि।

कविता-गीत 073 — गप्प-सरक्का

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 17 काव्य-पाँति ।

‘गप्प-सरक्का’मे व्यस्तताक चर्चा स्वयं काजक विकल्प बनि जाइत अछि ।
‘घडीक काँटा आगाँ बढल’ मुदा ‘हाथ न लगल’—समयक गतिसँ मानवीय
निष्क्रियताक विरोध झलकैत अछि ।

कविता मे ‘एक डेग जे धरती पर पड़ै, सौ गप्पसँ आगाँ जाइ’ तुलनाक लय
अछि । ई प्रेरक गीत निश्चित अछि, मुदा मूल व्यंग्य भाषिक आत्म-प्रदर्शनक
समस्या खोलैत अछि: जे व्यक्ति अपन व्यस्तता बारम्बार घोषित करैत अछि,
ओकर वास्तविक कार्य अदृश्य रहैत अछि ।

कविता-गीत 074 — फलनाक बेटा

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 21 काव्य-पाँति ।

‘फलनाक बेटा’ वन-अधिकारीक बड़का भोज आ वन कटबाक आरोपक बीच तीव्र टकराव रचैत अछि। ‘कोन बोनकें साफ कएल’ पाँति उत्सवक स्रोतक प्रश्न बनि भोजक नैतिकता उलटि दैत अछि।

कविताक मुख्य उपलब्धि कमाइकें परिणामसँ नहि, साधनसँ जाँचबाक आग्रह अछि। मुदा कथनक आरोप जाँचब आवश्यक अछि; मूल कविता प्रमाण-पञ्जी उपलब्ध नहि करबैत। एहिसँ एकरा कल्पित सामाजिक व्यंग्यक रूपेँ पढ़ब अधिक न्यायसंगत।

कविता-गीत 075 — ट्रांसफर

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 14 काव्य-पाँति ।

‘ट्रांसफर’ कार्यालयक नियम आ निजी चाकरीक टकराव उद्घाटित करैत अछि। कर्मचारी अफसरक घरक काजमे अपन समय देबाक तर्कसँ स्थानान्तरणक नियम रुकएबाक प्रयत्न करैत अछि; नियमक सार्वजनीनता निजी प्रभावसँ टूटैत अछि।

‘नॉर्म्स’ शब्द बारम्बार अलग अर्थ ग्रहण करैत अछि—सेवा-व्यवस्था लेल औपचारिक नियम, आ निजी सहायता लेल अनुपस्थित नियम। अफसरक तुरन्त रुकावट सत्ताक द्वैध मानदण्डक व्यंग्य बनैत अछि; ई व्यक्तिगत अपवादक कथा सार्वजनिक संस्थाक प्रश्न उठा दैत अछि।

कविता-गीत 076 — मजूरी नहि माँगह

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 21 काव्य-पाँति ।

‘मजूरी नहि माँगह’ श्रमिकक उचित मेहनताना माँगबाक प्रतिफलमे हिंसाक धमकी देखबैत अछि। ‘मारि देबह हम छूरी’क समक्ष श्रमिक ‘दिअ मजूरी’ कहैत छथि—एहि साहसक भीतर जीविका आ देहक सुरक्षा दुनूक संकट अछि।

कविताक मूल कथोपकथन श्रमक मोलक सामाजिक शक्तिभेद बहुत कम पाँतिमे व्यक्त करैत अछि। अन्तक ‘सुरक्षित बाटे आगाँ बढ़ू’ संघर्षक व्यावहारिक विवेक जोड़ैत अछि, मुदा मूल दृश्यक हिंसा ईहो स्पष्ट करैत अछि जे श्रम-अधिकार केवले व्यक्तिगत साहससँ सुरक्षित नहि होइत।

कविता-गीत 077 — दोषी

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 11 काव्य-पाँति ।

‘दोषी’ एकटा आरोपित व्यक्तिक मौन आ सहकर्मीक नाम नहि बताबै सकबाक प्रश्नपर आधारित अछि। मारिक बीच उत्तर नदेबाक कारण अन्तमे खुलैत अछि—ओहि व्यक्ति दोषी नहि छल, अतः अपराधी संगीक नाम ओ कोना बताओत ।

लघु रचना जिज्ञासा उत्पन्न करैत अछि: मौन अपराधक स्वीकारोक्ति नहि । ‘नाम बतायत तखन कथीक’क अन्तिम प्रश्न प्रताड़नाक पद्धतिक बुनियाद पर प्रहार अछि। ई नाटकीय उलटफेर प्रमाणबिना आरोपक हिंसाकेँ कटघरामे ठाढ़ करैत अछि।

कविता-गीत 078 — लंदनक खिस्सा

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 13 काव्य-पाँति ।

‘लंदनक खिस्सा’ प्रवासी भारतीय समुदाय, साउथहॉल-लेस्टर, पासपोर्ट आ औपनिवेशिक इतिहासक स्मृतिक असमञ्जससँ बनैत अछि । रचनामे अनेक स्थल आ राजनीतिक-ऐतिहासिक नाम आबैत अछि, जाहि कारण एकर कथन विवादास्पद स्मृतिसामग्री बनि सकैत अछि ।

‘इतिहाससँ नहि लेब सबक’क चेतावनी स्वतः इतिहासक प्रमाण नहि प्रदान करैत अछि । विशेष व्यक्तिसभक सम्मानसूचक वा आलोचनात्मक उल्लेखक लेखक-पात्रक स्वर मानब जरूरी अछि, तथ्यगत अनुमोदन नहि । रचनाक परीक्षण इतिहास-चेतना आ प्रवासी अस्मिताक भाषिक तनावपर केन्द्रित रहत ।

कविता-गीत 079 — प्रथम जनवरी

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 21 काव्य-पाँति ।

‘प्रथम जनवरी’ नव वर्षक भोर, दूधक लाइन आ अचानक खसल दूधक प्रसङ्गसँ आरम्भ होइत अछि । ‘अपशकुन’क डरकें ‘माए पृथ्वीकें लागल अर्घ्य’ कहि उलट देबाक विनोद मानवीय अर्थ-निर्माणक चपलता देखबैत अछि ।

‘दूध खसल तँ दूधहि खसल’ पाँति प्रतीकात्मक अतिरञ्जनाक बदला वस्तुक वास्तविक अवस्थापर ध्यान फेरैत अछि । हास्य सामाजिक रूढ़ि पर चोट करैत अछि, मुदा विपत्ति सहनिहार व्यक्ति प्रति उपहास नहि । उपदेशक समापन आरम्भक बुद्धिपूर्ण प्रत्युत्तरकें फरिछ करैत अछि ।

कविता-गीत 080 — ऑफिसमे भरि राति बन्द

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 34 काव्य-पाँति ।

‘ऑफिसमे भरि राति बन्द’क पहिल घटनामे फाइलमे लीन कर्मचारीकेँ चौकीदार अनजाने बन्द कऽ दैत अछि । कथा एक साधारण कार्यालय-असावधानी पर हँसी उठबैत अछि; मुदा दोसर घटना विद्यालयमे बन्द रहि गेल बच्चाक मृत्यु धरि पहुँचि शोकपूर्ण स्वर ग्रहण करैत अछि ।

एहि दू प्रसङ्गक संयोजन रचनाक नैतिक केन्द्रकेँ तीक्ष्ण बनबैत अछि: ध्यानक भूल कखन जोखिम आ कखन अपूरणीय हिंसा बनि सकैत अछि । काव्यरूपमे शैलीगत संक्रमण बहुत आकस्मिक अछि; तथापि उत्तरार्द्धक करुण प्रसङ्ग पहिल हास्यकेँ प्रश्नक घेरामे ठाढ़ करैत अछि । वास्तविक ऐतिहासिक घटना मानबाक लेल स्वतंत्र अभिलेख चाही ।

कविता-गीत 081 — नानीक पत्र

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 22 काव्य-पाँति ।

‘नानीक पत्र’क आरम्भमे बीमारीक चिट्ठी आवैत अछि; परिवारक लोक समयपर नहि पहुँचि पवैत छथि आ दोसर पत्रमे मृत्युक समाचार अछि । पत्र-प्रणालीक विलम्ब परिवारक अन्तिम भेंटकेँ असम्भव बना दैत अछि ।

‘नहि अयतीह हमर लक्ष्मी’क पुकार व्यक्तिगत पछतावा आ सूचना-अभावक दर्द बनबैत अछि । कवितामे बारम्बार ‘असहाय’ भाव अछि, मुदा वर्णनक क्रम कतेको वक्ता-स्थिति बदलैत अछि; स्पष्ट संवाद-चिह्नसँ रचना आरो तीक्ष्ण भऽ सकैत छल । पत्रक भौतिक देरी ई कविता केँ आजुक त्वरित सन्देशक युगमे विशेष ऐतिहासिक मूल्य दैत अछि ।

कविता-गीत 082 — केवाड़ बन्द

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 13 काव्य-पाँति ।

‘केवाड़ी बन्द’मे छोट भायक केवाड़ी बन्द करबाक घटना पैतृक स्मृतिसँ जुड़ैत अछि। वर्तमानक देरिसँ घुरब आ बचपनमे पिताक अनुशासनक पुनरागमन एके वस्तु—केवाड़ी—द्वारा समयक दू घड़ी जोड़ैत अछि।

‘जे भेल से बिसरि शुरू / करू नव जीवन’ समापन क्षमाक आग्रह अछि; मुदा बीचक ‘बाल विज्ञानक द्वंद’क संकेत प्रसंगमे स्पष्ट नहि खुलैत। काव्यगत उपलब्धि वस्तु-स्मृति अछि, न कि सुसंरचित नीति-प्रवचन।

कविता-गीत 083 — जेठांश

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 12 काव्य-पाँति ।

‘जेठांश’ भूमि-बँटवाराक असमानता आ मृत्युपछातिक भोजक व्ययक टकराव पर अछि । जेठ जे दोसराकँ परती भूमि दैत छथि, समय अबिते ओहि व्यक्तिसँ प्रतिष्ठात्मक खर्चक माँग करैत छथि ।

‘पाइ नहि तकर ने बहना’ मृतक-संस्कारक सामूहिक दबावक भाषा अछि । रचनाक प्रश्न धार्मिक कर्मक सीधा निषेध नहि; बँटवारा, ऋण आ मर्यादाक असमान मानदण्ड देखबेनाइ अछि । लघु कथा लोक-रीतिक आर्थिक राजनीतिकता खोलैत अछि ।

कविता-गीत 084 — सादा आकि रंगीन

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 14 काव्य-पाँति ।

‘सादा आकि रंगीन’ चित्रपट/प्रौद्योगिकी-संबंधी परिचित विरोधकें लस्सी-दोकानक प्रश्न बनबैत अछि । रंगीन लस्सीमे भाँग मिलबाक सूचना शब्दक निर्दोष रंग-संकेतकें उपभोग-जोखिमक प्रश्न बनबैत अछि ।

‘सादा स्वादे नीक’ निष्कर्ष बालपाठक लेल सावधानी जोड़ैत अछि । मुदा हास्यक मूल स्रोत एकहि ‘रंगीन’ शब्दक अलग संदर्भ होइत अछि । दोकान, मन्दिर लगक स्थल आ स्थानीय पेय एकरा मिथिलाक शहरी जीवनक लघु स्मृति बना दैत अछि ।

कविता-गीत 085 — जोंकही पोखरिमे भरि राति

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 11 काव्य-पाँति ।

‘जोंकही पोखरिमे भरि राति’ जमिन्दारी कालक लगान-वसूलीक कठोरता सुनल स्मृतिसँ आरम्भ होइत अछि। जोंकवला पोखरिमे देरी कएल किसानकें टाढ़ करबाक उल्लेख भय आ सत्ताक देहगत अनुभव रचैत अछि।

जमिन्दारी समाप्त भेलाक बादो पुरान मानक असूल करबाक इच्छा बाँचल अछि; मुदा लोकक नब सामूहिक प्रतिक्रिया एहि सत्ता-गर्वकें रोकैत अछि। रचनाक बल समय-बदललापर व्यवहारक प्रतिरोधमे अछि। एहि लोकस्मृतिसँ विशिष्ट ऐतिहासिक घटना स्वतः सिद्ध नहि होइत, तँ साक्ष्य-भेद आवश्यक अछि।

कविता-गीत 086 — गैस सिलिण्डरक चोरि

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 29 काव्य-पाँति ।

‘गैस सिलिण्डरक चोरि’ पुलिसमे प्राथमिकी, अतिरिक्त सिलिण्डरक अप्रत्यक्ष माँग, बीमा आ अदालतक चक्करक बीच संस्थागत भ्रष्टाचारक तीखा व्यंग्य अछि। चोरि घटलापर न्याय-सेवा उपलब्ध होएबाक बदला पीड़ित व्यक्तिक परेशान बढ़ैत अछि।

‘कोल्हूक बरद’ रूपक पद्धतिक गोल-गोल घुमब आ परिणामक अभाव देखबैत अछि। पाठमे दोषारोपित आचरण पात्रसभक कथित अनुभव अछि; ककरो वास्तविक अधिकृत संस्था पर सत्यापित आरोप नहि। कथा स्वार्थ-प्रेरित प्रशासनिक व्यवहारक आलोचनाक रूपमे पठनीय अछि।

कविता-गीत 087 — फैक्स

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 12 काव्य-पाँति ।

‘फैक्स’ दस्तावेजक तत्काल स्थानान्तरणक शक्ति देखबैत अछि: कारखानामे पहुँचल अधिकारीक तलासी-पत्र पर हस्ताक्षर होएबाक पहिने सन्देश आबि कार्य रोकि दैत अछि । तकनीक सरकारी निर्णयक गतिसँ जुड़ैत अछि ।

‘कागज जखन काजसँ आगाँ / दौड़ि जाए’ पाँति माध्यम आ न्यायक अन्तर प्रश्नक रूपमे प्रस्तुत करैत अछि । तकनीकी वेग न त स्वतः वैधता अछि, न स्वतः दुरुपयोग; एकर कानूनी आधारक जाँचक आवश्यकता रचना उघाइत अछि । ऐतिहासिक फैक्स-युगक महत्त्व एहि लघु कथामे सुरक्षित अछि ।

कविता-गीत 088 — दीया-बाती

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 12 काव्य-पाँति ।

‘दीया-बाती’ कई अमावस्याक अन्हार, थाकल पएर आ नन्हि जोतिक आगमनक बीच भावात्मक सम्बन्ध बनबैत अछि। ‘ज्ञान-ज्योति’क प्रत्यक्ष उल्लेख अन्धकारक अनुभवकेँ बौद्धिक डर सँ मुक्तिक रूपक बनबैत अछि।

पहिने ‘दीयाबाती’ गीतसँ भिन्न, ई रचना करुण प्रतीक्षा आ प्रकाशक राहतपर केन्द्रित अछि। अन्तिम उपदेश परिचित अछि, मुदा लघु आकारक कारण बिम्बक गति अविच्छिन्न अछि। प्रकाशक वस्तुगत लघुता आ आशाक व्यापकता एकर सार्थक द्वन्द्व अछि।

कविता-गीत 089 — इटालियन सैलून

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 12 काव्य-पाँति ।

‘इटालियन सैलून’ नामक चमकदमकक पाछाँ ईटापर बैसि कतरनी चलबैत श्रमिकक साधारण रोजी अछि। समस्तीपुर-दिल्ली प्रवास, पुलिसक रोक आ नव ठाम खोजबाक परिस्थिति श्रमक अस्थिर स्थल-बोध बनबैत अछि।

‘इटालियन’ नाम आ ‘ईटा’क ध्वन्यात्मक निकटता हास्यक आधार अछि; विदेशक उच्च प्रतिष्ठा आ स्थानीय तात्कालिक उपायक अन्तर सामाजिक व्यंग्य रचैत अछि। कविता नामकरणक चमत्कारसँ श्रमक साहस देखबैत अछि, बिना बाहरी समृद्धि-कल्पनाक प्रमाण स्वीकार कएने।

कविता-गीत 090 — शव नहि उठत

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 12 काव्य-पाँति ।

‘शव नहि उठत’मे मृत देह अँगनामे पड़ल अछि, युवा सभ रोजी-रोटीक खोजमे दूर गेल छथि आ शेष लोक सामाजिक निषेधसँ हिचकैत छथि । मृत्यु-संस्कारक सामुदायिक दायित्व आ छूत-अछूतक गाँठिक टकराव अत्यन्त करुण अछि ।

‘समय बदलल, बाट बदलल’क पाँति भौतिक परिवर्तन आ सामाजिक चेतनाक अन्तर व्यक्त करैत अछि । कविता कथाक ब्योरा सीमित रखैत अछि; तँ पात्रक विशेष जाति वा घटना-इतिहास कल्पना सँ जोड़ब नहि । एकर प्रमुख मूल्य सामाजिक मौनक आलोचना अछि ।

कविता-गीत 091 — अतिचार

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 12 काव्य-पाँति ।

‘अतिचार’ विवाहक तिथि-निर्धारणमे पंडित-पतरा आ अनेक गणनाक टकराव देखबैत अछि । एक व्यक्ति तीन वर्षक बाधाक दावा करैत अछि, दोसर नव गणनाक आधार खोजैत अछि; फलतः विवाहक निर्णय अनिश्चिततामे अटकैत अछि ।

‘समय अभाव जँ बेसी बढ़त’ व्यावहारिक परिस्थितिक दबाव अनैत अछि । रचना परम्पराक नामक उपयोग पर विवेकक प्रश्न करैत अछि, मुदा प्रत्येक पञ्चाङ्गीय विचारकें अन्धविश्वास घोषित नहि करैत । मानवीय निर्णयक अधिकार धार्मिक गणनासँ ऊपर कोना राखल जाय, से मूल प्रश्न अछि ।

कविता-गीत 092 — रबड़ खाऊ

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 16 काव्य-पाँति ।

‘रबड़ खाऊ’मे विवाहसम्बन्धी सिद्धान्त पात्रक निजी लाभ देखिते बदलैत अछि। शीर्षकक विचित्र ध्वनि आ ‘रबड़’क लचीलापन सिद्धान्तक खिंचैत-बदलैत स्वरूपक व्यंग्य बनबैत अछि।

‘सुविधा देखि जे रूप बदलै / से बहन्ना’ कथन नैतिक स्थिरताक माँग अछि। कविता भाषिक उछाल आ संवादक शिथिल क्रमक कारण कतहु कठिन अछि; एहि सीमाक बावजूद कथनी-करनीक उलटफेर स्पष्ट समाज-व्यंग्य अछि।

कविता-गीत 093 — बाजा अहाँ बजाऊ

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 20 काव्य-पाँति ।

‘बाजा अहाँ बजाऊ’ सामूहिक कलानिर्माणमे श्रमक स्वामित्वक प्रश्न उठबैत अछि। चित्रकार, वादक, नर्तक आ पुस्तकक आवरण बनौनिहारक श्रम बीच पुरस्कार एक व्यक्ति अपन नामपर लेबाक दावा करैत अछि।

‘कृति हमर रहत / मेहनति करब अहाँ’क सूक्ष्म विरोध श्रम आ यशक वितरणक नैतिक समस्या खोलैत अछि। शाहजहाँक उल्लेख सांस्कृतिक प्रसङ्गरूपेँ अछि, स्रोत-सिद्ध ऐतिहासिक निर्णय नहि। रचना साहित्य-प्रकाशनक श्रेय-व्यवस्थापर सेहो लागू भऽ सकैत अछि।

कविता-गीत 094 — पिण्डश्याम

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 18 काव्य-पाँति ।

‘पिण्डश्याम’ दहेज-विरोधी प्रोफेसरक पुत्री आ पुत्रक विवाहमे अपनाएल
अलग मानदण्ड खोलैत अछि। ‘वधू रहय श्याम मुदा / मारुति भेटय श्वेत’
रङ्गभेद आ उपहार-लोभकँ एकहि तीक्ष्ण शेरमे जोड़ैत अछि।

प्रचारक भाषा निजी स्वार्थसँ पराजित होइत अछि, से व्यंग्यक चरम अछि।
अन्तक ‘पुत्री-पुत्रक एकहि नेम’ सामान्य नीतिपाठ अछि, मुदा मूल विरोधाभास
आफँ सामाजिक आलोचनाक पर्याप्त साक्ष्य बनैत अछि।

कविता-गीत 095 — पाँच पाइक लालछड़ी

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 19 काव्य-पाँति ।

‘पाँच पाइक लालछड़ी’ अत्यल्प मूल्यक वस्तु बेचि पुत्रकें उच्च शिक्षा देनिहार पिताक संघर्षसँ आरम्भ होइत अछि । आइ.आइ.टी.क शिक्षा, न्यायाधीशक बेटी सँ विवाह आ पछातिक नशा/दुर्घटनाक ब्योरा सामाजिक उन्नतिक करुण उलटफेर अछि ।

रचना सूक्ष्म गाम-जीवन सँ जटिल पारिवारिक त्रासदी धरि अचानक फैलैत अछि; संवाद आ दृश्य-विकासक स्थानपर घटना-संक्षेप प्रबल अछि । तथापि पिताक श्रम आ पुत्रक पतनक विपर्यास पात्रक नैतिक उत्तरदायित्वक प्रश्न तीक्ष्ण बनबैत अछि ।

कविता-गीत 096 — चोरुक्का विवाह

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 13 काव्य-पाँति ।

‘चोरुक्का विवाह’ गुप्त विवाहक कारण परिवारसभक बीच उठल हिंसा आ सामाजिक कलङ्कक वर्णन करैत अछि। ‘युवक-युवती दुनू भेल चोर विवाहक कैदी’क विरोधाभास प्रेमक स्वतन्त्र निर्णय आ ओकर दण्डात्मक सामाजिक ग्रहणक बीच अंतर देखबैत अछि।

रचना अन्तमे चुनावक झगडा आ भ्रातृ-हिंसाकेँ जोड़ैत अछि, मुदा दुनू घटना बीच कारण-सम्बन्ध सम्पूर्ण रूपेँ स्पष्ट नहि बनैत। जाति, वर्ग अथवा विशिष्ट विवाह-कानूनक अनुमान एहि पाठसँ नहि कएल जाय। एकर केन्द्रीय संकट सामाजिक स्वीकृतिक अभाव आ दमनकारी प्रतिक्रिया अछि।

कविता-गीत 097 — भ्रातृद्वितीया

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 24 काव्य-पाँति ।

‘भ्रातृद्वितीया’मे बहिनक थारी, अक्षत, दीप आ अरिपन प्रतीक्षाक मूर्त वस्तु बनैत अछि। ‘कय ठाँऊ बैसलि’क आवृत्ति घड़ीक बढ़ैत कालकेँ दर्शबैत अछि; भाई नहि अबैत छथि, साँझ आबि जाइत अछि।

अनुपस्थित भाईक प्रतीक्षा प्रेम आ पारिवारिक दुरावक मार्मिक चित्र अछि। उत्तरार्द्ध संवादसँ पुनर्मिलनक सम्भावना सुझबैत अछि, मुदा प्रारम्भक रिक्त दुआरक पीडा अधिक प्रभावी। घरक लोकव्रतक चित्र भावुकताकेँ सहज धरातल दैत अछि।

कविता-गीत 098 — नव-घरारी

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 23 काव्य-पाँति ।

‘नव-घरारी’ साँपक दंशक त्रासदी आ नव बसोबासक प्रश्नकें जोड़ैत अछि ।
पुरनका डीह छोट पड़ि रहल अछि, नव गृह-निर्माण झाड़-झंखार, मेड़ आ
पानिक ठाम घटबैत अछि—ई पर्यावरणीय परिवर्तनक सामाजिक कथा अछि ।

‘बसोबासक चाह उचित अछि / मुदा सुरक्षा सेहो विचार’क समापन विस्तार
आ संरक्षणक संतुलन सुझबैत अछि । मुदा एकटा विशिष्ट सर्पदंशकें जनसंख्या-
वृद्धिक प्रत्यक्ष परिणाम घोषित करब लेल अतिरिक्त प्रमाण चाही । कविता
ग्रामीण आवास-व्यवस्थाक सम्भावित जोखिमपर प्रश्न उठबैत अछि ।

कविता-गीत 099 — रिक्त

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 22 काव्य-पाँति ।

‘रिक्त’ अनेक अनुभवक अभावकेँ एकहि शब्दमे समेटैत अछि: छुटा वर्गक शैक्षिक रिक्तता, बाबा-बाबीक अनुपस्थिति, मौसी-मौसाक परिचयक अभाव । ई सूची समानान्तर रूपेँ बढ़ैत पाठकक भीतर सम्बन्धक अलग-अलग शून्यता बनबैत अछि ।

‘नव संबंध नव नगर / नव भाषा’क पाँति पीढ़ीगत ज्ञानक खण्डित परम्पराक प्रश्न खोलैत अछि । कविता कथात्मक स्पष्टीकरण कम दैत अछि, मुदा ‘रिक्त’क आवर्तन जीवनक भरि नहि सकल ठामकेँ अनुभव बनबैत अछि । एहि कारण रचना सामान्य भावुकतासँ आगे बढ़ैत अछि ।

कविता-गीत 100 — प्रवासी

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 21 काव्य-पाँति ।

‘प्रवासी’मे दिल्ली गेलाक दू दिनक बाद धान-गहूमक ऋतु-बोध बिसरबाक व्यंग्य अछि । बाल्यक महीस चरब आ कृषि-पाठक स्मृतिसँ प्रवासक वर्तमानक दूरी एक लघु विस्मृति द्वारा देखाओल गेल अछि ।

‘नगर सीखू, गाम सँ जुड़ू’ उत्तरार्द्धक स्पष्ट समाधान अछि; मुदा मूल व्यंग्यक तिखार ई प्रश्नमे अछि जे अपन जीविकाक भूगोल बदललासँ मनुख अपन पुरान श्रमक नाम कतेक जल्दी विसरैत अछि । शहरक सीखनाइ आ गामक स्मृति— दुनूक बीच संवाद एकर अध्ययनक केन्द्र रहत ।

कविता-गीत 101 — वेद

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 14 काव्य-पाँति ।

‘वेद’ परम्परागत ग्रन्थक महिमामण्डन आ ज्ञान-पहुँचक वास्तविक प्रश्न बीच टकराव अछि । वक्ता ‘वेद वाक्य परम सत्य’ कहैत छथि, मुदा आलोचक पूछैत छथि जे अनकाकेँ पढ़बाक अधिकारसँ रोकनिहार स्वयं कतेक पढ़ने छथि ।

‘एकरा बनेने छी अहाँ फकड़ा’क तीखा निष्कर्ष पवित्र शब्दक नैतिक राजनीतिक दुरुपयोगक व्यंग्य अछि । ई वैदिक साहित्यक सम्पूर्ण तत्त्वमीमांसाक समीक्षा नहि; ज्ञानाधिकार आ अधिकार-घोषणाक अन्तर्विरोध पर प्रश्न अछि । वास्तविक वेद-पाठक विशिष्ट सिद्धान्त ऐतय प्रमाणित अथवा खण्डित नहि होइत ।

कविता-गीत 102 — चोरि

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 22 काव्य-पाँति ।

‘चोरि’मे घरक चोरीक समाचार, पुलिसक आगमन, अतिरिक्त तालाक खरीद आ चाभी जब्त करबाक हास्यास्पद क्रम अछि। जखन चोर कुछ विशेष नहि पबैत, ओतए रक्षा करनिहार संस्थाक व्यक्ति स्वयं नब शङ्काक विषय बनि उठैत अछि।

रचनाक लम्बा घटनाक्रम आ बढैत वस्तु-सूची व्यंग्यक तीव्रता बढबैत अछि। मुदा कथात्मक आरोप साहित्यिक पात्रसभक गतिविधि अछि; कोनो वास्तविक अधिकारीपर प्रमाणित अपराधक दावा नहि। प्रशासनिक शक्ति आ निजी सुरक्षा बीचक अविश्वास मूल कथ्य अछि।

कविता-गीत 103 — होली

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 23 काव्य-पाँति ।

‘होली’ धूरि-कादो, अबीर, रंगक रसायन, मद्यपानक ऐतिहासिक नाम-तर्क आ मित्रताक क्षतिक प्रश्न एक संग अनैत अछि । उत्सव केवल रंगक आनन्द नहि; सामाजिक सम्बन्धक परीक्षा सेहो बनैत अछि ।

‘जबरदस्ती रंग न लगाउ’ सहमतिक आधुनिक नैतिकता प्रस्तुत करैत अछि । प्रारम्भक व्यंग्य आ अन्तक नैतिक विस्तार बीच भिन्न कथनशैली अछि, मुदा दूनू अनपेक्षित दबावक विरोध करैत अछि । ‘सोमरस’सँ वर्तमान नशाक न्यायोचितता स्वतः प्रमाणित नहि होइत, तँ एकरा तर्कदोषक व्यंग्य रूपमे पढ़ब उचित ।

कविता-गीत 104 — बुद्ध

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 48 काव्य-पाँति ।

‘बुद्ध’ अनेक यात्रा-अनुभवक कोलाज अछि—मुम्बईक भोजन, बोलीक भेद, छत्तीसगढ़क यात्रा, सड़क-व्यवहार, मैथिल-सम्बन्ध आ राजधानीक स्मृति । एहि बिखरल दृश्यसभकेँ अन्तक ‘जेबीमे पाइ नहि’क पाँति रोजी-रोटीक अनिश्चिततासँ जोड़ैत अछि ।

‘हृदय लग अछि जेबी’ रूपक सामाजिक अध्यात्म बनाम आर्थिक दरिद्रताक विडम्बना अछि । मुदा ‘बुद्ध सेहो कहि गेल’क उद्धरण स्रोत-प्रमाणबिना भगवान बुद्धक प्रमाणित वचन नहि मानल जा सकैत अछि । कविता बुद्ध-शास्त्रक टीका नहि, प्रवासी जीवनक विडम्बनापूर्ण यात्रापाठ अछि ।

कविता-गीत 105 — कोठिया पछबाइ टोल

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 20 काव्य-पाँति ।

‘कोठिया पछबाइ टोल’ वृद्धक अन्तिम इच्छा आ परिवारक ‘छोट-मोट’ काम पूरा करबाक प्रस्तावक बीच हास्य-करुण स्थिति अछि। वृद्धक चाह भौतिक वस्तु नहि, दूर टोलमे विवाहक निजी स्मृति/आकांक्षासँ जुड़ल अछि।

इच्छा व्यक्त करिते रोगक गम्भीरता कथामे बढि जाइत अछि आ मृत्यु अबैत अछि। रचनाक झटका भौतिक सुविधा सँ मानवीय आकांक्षा दिस ध्यान फेरैत अछि। मुदा मनोवैज्ञानिक कारणक सम्पूर्ण व्याख्या पाठ नहि दैत, तँ अंतर्भावित हास्य आ करुणाक सीमा स्वीकार करब चाही।

कविता-गीत 106 — बुच्ची-बाउ

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 33 काव्य-पाँति ।

‘बुच्ची-बाउ’ पुस्तक बेचैत श्रमिक, मैथिली भाषा, दिल्लीक प्रवासी मजदूर आ मनीऑर्डरक लाइनकेँ एक संग रखैत अछि। ‘नहि मँगैत छी दरमाहा’ श्रमिकक प्रति वर्गीय पूर्वाग्रहक उपहास बनैत अछि, कारण मूल दृश्यमे मजदूर कठिन मेहनति करैत घर पाइ पठबैत छथि।

‘एक पीढ़ीक अछि गप अहाँक पाछाँ राज करत अगिला पीढ़ी एहि दिल्लीपर’क भविष्यवाणी आजुक संघर्षक भीतर सामूहिक सामर्थ्यक कल्पना अछि; एकरा सामाजिक पूर्वानुमानक प्रमाण नहि। ‘पोथी’ आ ‘मजूरी’क साथ-साथ उपस्थिति भाषा-संस्कृति आ अर्थव्यवस्थाक सम्बन्धकेँ समृद्ध करैत अछि।

कविता-गीत 107 — आकक दूध

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 15 काव्य-पाँति ।

‘आकक दूध’मे चोरकेँ डराएबाक लेल विषाक्त वनस्पति-पदार्थक प्रयोग आ तेलक नब उपाय एक लघु कथा रचैत अछि । परिणाम उलटि चोरक आँखि बाँचि जाइत अछि, जाहिसँ बनल-बनाओल ‘स्टन्त विद्या’क अधिकार घटैत अछि ।

कविता स्वयं लोकक कारस्तानीक पक्ष नहि लैत; ओ अन्ध अनुकरणक आलोचना करैत अछि । आकक दूध वास्तविक रूपसँ हानिकारक भऽ सकैत अछि, तँ एहि प्रसंगकेँ व्यवहारिक उपचार वा सुरक्षा-युक्ति नहि मानल जाय । साहित्यिक मूल्य कथाक प्रतिकूल परिणाममे अछि ।

कविता-गीत 108 — केसर श्वेत हरित त्रिवार्णिक

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 27 काव्य-पाँति ।

‘केसर श्वेत हरित त्रिवार्णिक’ ध्वजक रंग, मध्यक नील चक्र आ भौगोलिक नदीसभसँ राष्ट्रक प्रतीकात्मक विस्तार रचैत अछि । ‘चौबीस कीलक’ वर्णन ध्वजक मूर्त रूपकेँ पाठमे उपस्थित करैत अछि ।

देशभक्ति केवल युद्धक तैयारी नहि—कृषि, निर्माण, प्रगति आ नदीक संरक्षणक स्वर सेहो अछि । मुदा ‘अरिमर्दन’क आवर्तन संघर्षात्मक स्वरकेँ प्रबल बनबैत अछि । विशेष राष्ट्रीय इतिहासक दावाक बदला कविताकेँ नागरिक आकांक्षाक रूपक बनाकऽ पढ़ब उचित होयत ।

कविता-गीत 109 — बेसी छुट्टी कम इसकूल

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 44 काव्य-पाँति ।

‘बेसी छुट्टी कम इसकूल’ लम्बा बालक-स्वर अछि, जाहिमे बारी-झाड़ी,
मेला, कनियाँ-पुतरा, चित्र, माटि आ संगी सभ अपन संसार बनबैत छथि ।
रदीफक पुनरावृत्ति विद्यालयक कठिनाइ सँ भागबाक हास्यमय नारा बनैत अछि ।

जखन मास्टर साहेबक बेंत निन्नोमे डर जगवैत अछि, तखन गीतक मुख्य स्वर
बदलि जाइत अछि: ई आलसी बालकक बहन्ना मात्र नहि, दण्डात्मक शिक्षाक
विरुद्ध प्रतिवाद अछि । एहि कारण रचनाकेँ बाल-सुरक्षा आ आनन्दमय शिक्षाक
प्रश्नसँ पढब अधिक न्यायसंगत अछि ।

कविता-गीत 110 — कोनो सजाए नै

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 32 काव्य-पाँति ।

‘कोनो सजाए नै’ बालकक शरारतक स्वप्न-घोषणा अछि: कादो, रङ्ग, पानि,
टूटा क्रम आ पड़ोसीक शिकायतक बीच बच्चा दण्डरहित संसार माँगैत अछि।
‘भेक जेना भदबरियामे’ ध्वनि-साम्य खेलक गीतात्मक शक्ति रखैत अछि।

मुदा ‘सजाए नै’क मागकेँ अनियन्त्रित क्षतिक अधिकार नहि बुझब चाही।
कविता अनुशासनक हिंसक रूपक विरोधक संभावना जगबैत अछि, जखनकि
सामूहिक सहअस्तित्वक नियम स्वयं पाठमे स्पष्ट नहि बनैत। ई अन्तर एकर
आलोचनात्मक चर्चा लेल महत्वपूर्ण अछि।

कविता-गीत 111 — बरखा भीजी

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 12 काव्य-पाँति ।

‘बरखा भीजी’क लघु पाँतिसभ ‘छप-छप’क ध्वनिसँ पानि छूबाक बालकक निडर इच्छा व्यक्त करैत अछि । छींक, नाक बहब आ कुहेसामे सुरुज उगबाक दृश्य आनन्दक भीतर मौसमक असुविधा सेहो अनैत अछि ।

‘गिदर-गिदरनीक बियाह’ लोक-प्रयोग वर्षा-ऋतुक कल्पना विस्तार करैत अछि । अन्तक ‘एकटा आर अछार’ बाल्यक आवेगकें रोके नहि, आरो बढ़बैत अछि । ई गीत शैक्षिक उपदेश बिना प्रकृति-अनुभवक स्वतन्त्रता सँ बल पबैत अछि ।

कविता-गीत 112 — बरखा गीत

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 32 काव्य-पाँति ।

‘बरखा गीत’ ध्वन्यनुकरण, आमक स्वाद, पनिसोखा, कीड़ी, धान-खेत आ बड़दक संयुक्त संसार बनबैत अछि। ग्रामीण वर्षाक अनुभव केवल जलक उत्सव नहि—कृषिक लय आ जीव-जन्तुक उपस्थिति दुनू अछि।

‘बाबी आँचरमे ओट दैत छथि / अपनहि भीजि हमरा बचबैत’ कविताक अन्तमे व्यक्तिगत नेहक मार्मिक चित्र अछि। एहि बिम्बक कारण रचनाक ग्रामीण परिदृश्य परिवारक घरोआ सम्बन्धसँ जुड़ैत अछि। ‘उनचासो बसात’ लोकपदक सांस्कृतिक संकेतक व्याख्या आवश्यक, मुदा अनुभवजन्य बल स्पष्ट अछि।

कविता-गीत 113 — भरि दिन खेली-धूपी

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 20 काव्य-पाँति ।

‘भरि दिन खेली-धूपी’मे कोइलीक पुकार, घिरनी, चित्रपतंग, माटिक घर,
गाछक पात आ पानिक धार एकहि दिनक लगातार खेल-अनुभव बनैत अछि ।
‘दुपहरिया ढलि गेल, मुदा खेल कतऽ थमय?’ बाल्यक समय-ज्ञानक सटीक प्रश्न
अछि ।

साँझक लम्बा होइत छाह आ दुआरि पर ठाढ़ माय कथा केँ घर-फेराक वृत्त
दैत अछि । शिक्षामूलक नीतिवाक्यक अनुपस्थितिक कारण रचना अपन
चित्रसभपर भरोसा करैत अछि; एकर स्वाभाविकता बाल-साहित्यक विशेष
उपलब्धि अछि ।

कविता-गीत 114 — लवनचूश चूसी भरि दिन

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 24 काव्य-पाँति ।

‘लवनचूश चूसी भरि दिन’ मिठासक आकर्षण, दाँतक आवाज, भाई-बहिनक हँसी आ माएक सावधानीक छोट गृह-नाटक अछि। ‘दाँत कहय—बस, आब!’ निर्जीव अंगकें वक्ता बनाकऽ हास्य उत्पन्न करैत अछि।

अत्यधिक मिठाइ बनाम दाँतक देखभालक शिक्षा गीतमे स्वाभाविक परिवार-संवादसँ जुड़ैत अछि। मुदा अन्तक ‘एहने होय विधान’ आ ‘सुधि’क उपदेश अपेक्षाकृत स्पष्ट अछि; प्रारम्भक संवेदनात्मक खेल बेसी मौलिक।

कविता-गीत 115 — जे मोन भावै से करब

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 44 काव्य-पाँति ।

‘जे मोन भावै से करब’ बालकक सर्जनात्मक स्वायत्तताक पुनरावर्ती घोषणा अछि। माटि, बालू, कागज, रौद आ छाहसँ नव संसार बनाओल जाइत अछि; टूटल घर फेर बनबैत रहब कल्पनाक असफलता-सहनशीलता देखबैत अछि।

‘आनक मन नहि तोड़ब’क समापन स्वतन्त्रताक सीमा आनक स्वतन्त्रता तक विस्तारित करैत अछि। एहि कारण रचना इच्छापूर्तिक मनमानी नहि, सामूहिक सर्जनाक नैतिक संरचना बनैत अछि। ‘कागज’ सन वर्तनीक निखार पुस्तक-संपादनक स्तरपर विचारणीय अछि; मूल उद्धरणकें बिना सूचनाक बदलल नहि जाय।

कविता-गीत 116 — सभ दिन जनमदिन मनाबी

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 24 काव्य-पाँति ।

‘सभ दिन जनमदिन मनाबी’ जन्मदिनकेँ निजी उपहारक विशेष दिनसँ निकालि सामूहिक आनन्दक रूपक बनबैत अछि। मखान-चूड़ा, गुड़-मिठाई, ताली आ संगीसभक उपस्थिति उत्सवकेँ स्थानीय आ संसाधन-सुलभ रखैत अछि।

‘तोहर दिन आ हमर दिन / सभ दिन सभक होय’क विचार मालिकाना उत्सवक बदला साझा नेहक आग्रह अछि। उदास व्यक्ति केँ पहिने हँसबेनाइ गीतमे सहानुभूतिक अभ्यास बनैत अछि। रचनाक बल बिना पैघ खर्चक आनन्द रचबाक कल्पनामे अछि।

कविता-गीत 117 — बानर

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 24 काव्य-पाँति ।

‘बानर’ भोरमे छप्पर पर आयल जीवक संग बालकक मौन दृष्टि-विनिमय सँ आरम्भ होइत अछि । पहिने डर आ असुविधा अछि; ‘गत बरख’ पीपर कटि गेलाक सूचना प्रसङ्गक नैतिक दिशा बदलि दैत अछि ।

छप्पर पर बानर आबेनाइ वनक्षेत्रक ह्राससँ जुड़ल सम्भावित सम्बन्ध बनैत अछि; पाठ निश्चित जैविक कारण प्रमाणित नहि करैत । ‘ओहो खोजय अपन ठाम’क कथन मनुष्येतर जीवनक आवास-अधिकारक सहानुभूति रचैत अछि ।

कविता-गीत 118 — दोकानसँ चिप्स मँगनीमे आनी

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 20 काव्य-पाँति ।

‘दोकानसँ चिप्स मँगनीमे आनी’ थैलीक खरखर ध्वनि, नूनक स्वाद आ संग-
बाँटबक गपसँ बालकक उपभोग-इच्छाकेँ मूर्त बनबैत अछि । मँगनी भेटल
चिप्सक भरपूर स्वाद पर माएक ‘जतेक पेट सम्हारि सकय’ सीमा लगबैत अछि ।

‘आधा हम, आधा संगी’क व्यवहार निजी उपभोग सँ साझेदारी दिस बढ़ैत
अछि । अन्तक केरा-अमरूदक तुलना साधारण पौष्टिक विकल्प सुझबैत अछि ।
गीतक मुख्य साहित्यिक उपलब्धि थैलीक ध्वनि आ बाँटबाक क्रियामे अछि,
केवल आहार-सन्देशमे नहि ।

कविता-गीत 119 — खूब खेलाउ कमप्यूटर खेल

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 20 काव्य-पाँति ।

‘खूब खेलाउ कमप्यूटर खेल’ अंकीय पटलकें तारा, नाव, पहेली आ दौडैत पात्रसभक कल्पनात्मक ठाम बनबैत अछि । कविता अंकीय खेलक सम्पूर्ण निषेध नहि करैत; एकर जिज्ञासा आ बुद्धि-अभ्यासक क्षमता स्वीकार करैत अछि ।

‘आँखि कहय—आब कनि थामू’ व्यक्तित्वकरणसँ देहक सीमा सामने अबैत अछि । मैदानक खेल आ कमप्यूटर-पटलक समय-विभाजन संतुलित दैनन्दिन जीवनक बोध अछि । रचना नव प्रौद्योगिकी आ शारीरिक अनुभवकें परस्पर विरोधी नहि बनबैत ।

कविता-गीत 120 — नीक चित्र बनाउ छाप्पू

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 20 काव्य-पाँति ।

‘नीक चित्र बनाउ छाप्पू’ रंगसभकेँ प्रकृतिक दृश्य-रचना बनबैत अछि: नील जल, हरियर गाछ, पीयर रौद, लाल फूल । वृत्त आ तिकोनक उल्लेख चित्रक औपचारिक आकार-संरचनाकेँ बाल-कल्पनासँ जोडैत अछि ।

‘मोनक भीतर जे लुकल छल / रंग बनि बाहर आय’ सर्जनाक आन्तरिक पक्षक प्रभावी कथन अछि । ‘ककरो चित्रसँ होइ नहि’ प्रतिद्वन्द्विताक बदला स्वतन्त्र शैलीक महत्त्व स्थापित करैत अछि । ई गीत कलाशिक्षाकेँ अनुकरण नहि, निज भावक अभिव्यक्ति मानैत अछि ।

कविता-गीत 121 — आउ खेलाउ कनियाँ पुतरा

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 20 काव्य-पाँति ।

‘आउ खेलाउ कनियाँ पुतरा’ खेलौना-विवाह अथवा घर-बनबाक पारम्परिक संसारकें श्रमक सामूहिक विभाजनमे बदलैत अछि । पातक धारी, फूलक भात, माटिक कोठरी आ खरक छप्पर स्थानिक घरेलू वस्तुसभक बाल-रूप बनैत अछि ।

‘ककरो काज नहि छोट-पैघ’क कथन खेलक भीतर श्रम-सम्मानक शिक्षा बनैत अछि । कनियाँ-पुतराक भूमिकामे गाछ लगाबब, पोथी पढ़ब, पानि भरब—सभ काम एकहि साझा घरक अंश अछि । बालगीतक दृश्य ठोस अछि, तैं नैतिक निष्कर्ष परिस्थिति सँ स्वाभाविक रूपें निकलैत अछि ।

कविता-गीत 122 — बरफ खाउ जाइमे

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 16 काव्य-पाँति ।

‘बरफ खाउ जाइमे’ जाइक भोरमे बरफ खएबाक विपरीत इच्छा पर आधारित लघु हास्य अछि। कुहेसा, ऊनक टोपी, मोट मोजा आ सिंहरैत देह—सभ मिलि स्वादक क्षणिक आकर्षणकें शारीरिक अनुभवसँ जोड़ैत अछि।

‘थोड़ेक स्वाद, फेर गरम दूध’क गप परिवारक मध्यम मार्ग प्रस्तुत करैत अछि। कविता बालकक चाहकें दण्डनीय नहि बनबैत; मात्रा आ परिस्थिति सम्हारबाक आग्रह करैत अछि। रचनाक हास्य जाइ आ बरफक अनपेक्षित संगति अछि।

कविता-गीत 123 — रातिमे अबेर धरि जागू भोर उठू देरीसँ

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 16 काव्य-पाँति ।

‘रातिमे अबेर धरि जागू भोर उठू देरीसँ’ शीर्षक एक तरहक बाल्य घोषणाजकाँ लगैत अछि, मुदा कविता जागल रातिक शारीरिक परिणति बतबैत अछि। आँखिक भारीपन आ दिनक अधूरापन तारे गनबाक रम्यता सँ टकराइत अछि।

‘निन्नक बाट गहि’क पाँति आरामकेँ स्वयं देहक माँग बनबैत अछि। उपदेशक समापन अपेक्षाकृत साधारण अछि; प्रारम्भक रात्रि-भोर संक्रमण अधिक सजीव। रचना देह-अनुभवक आधारपर समय-अनुशासनक प्रश्न उठबैत अछि।

कविता-गीत 124 — सुरुज जेकाँ बरहम घूमै छथि

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 20 काव्य-पाँति ।

‘सुरुज जेकाँ बरहम घूमै छथि’ बादलक बदलैत आकारमे घोड़ा, हाथी, पक्षी आ पागधारी व्यक्ति देखबाक कल्पनात्मक दृश्य अछि। ‘बाबी हँसि कहथि— मेघक भीतर / आँखि कथा रचए’ लोककथा आ बाल-दृष्टिक सम्बन्ध अत्यन्त सहज अछि।

‘जे देखय से रूप बनाबय’ कविताक काव्यशास्त्रीय सूत्र अछि: आकार बादलमे अछि कि दर्शकक कल्पनामे? रचना वैज्ञानिक बादल-व्याख्याक बदला मानवीय प्रतिरूप-निर्माणक खेल बनैत अछि; एहि खेलमे स्थानीय पाग आ पहिरन स्मृतिक सामग्री प्रदान करैत अछि।

कविता-गीत 125 — सरस्वती मेधा

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 20 काव्य-पाँति ।

‘सरस्वती मेधा’ देवी-आह्वानक परम्परागत बिम्ब—वीणा, पोथी, अक्षरमाला—सँ आरम्भ होइत अछि । मुदा ज्ञानक अर्थ रटन्तसँ अलग प्रश्न, जिज्ञासा, श्रम आ सामूहिक बाँटब बनैत अछि ।

‘मेधा केवल कंठस्थ नहि’ आराधनाक भीतर आलोचनात्मक ज्ञानबोधक महत्त्वपूर्ण मोड़ अछि । भक्ति आ तर्कक परस्पर विरुद्ध ध्रुव नहि, अध्ययनक सहायक मूल्य रूपमे प्रस्तुति एकर विशिष्टता अछि ।

कविता-गीत 126 — बाजू मैथिली

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 24 काव्य-पाँति ।

‘बाजू मैथिली’ मायक बोली, गामक स्मृति, लोकक गीत आ नव विज्ञानक प्रयोगकेँ एके भाषिक परियोजनामे रखैत अछि। ‘नव शब्द गढ़, पुरान सहेजू’ भाषाक संरक्षण आ नवीकरणक दोहरी आवश्यकता स्पष्ट करैत अछि।

‘आन भाषा सभक आदर करैत’ पाँति मातृभाषा-प्रेमकेँ सांस्कृतिक बहिष्कार बनबाक सँ रोकैत अछि। घर, विद्यालय, मंच आ जालक उल्लेख आधुनिक संचार-संसारमे मैथिलीक सम्भावित विस्तार प्रस्तुत करैत अछि। ई भाषा-संघर्षक सर्जनात्मक आ समावेशी घोषणापत्र अछि।

कविता-गीत 127 — हम्मर माए

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 12 काव्य-पाँति ।

‘हम्मर माए’मे दूध पियाबब, इसकूल पटाबब, बस-अड्डा धरि संग पहुँचेबब आ साइकिल सीखेबब—देखभालक विशेष घरेलू कार्यसूची अछि। मायक प्रेम यहाँ अमूर्त प्रशंसा नहि, दैनिक श्रम आ सावधानीक व्यवहारसँ प्रमाणित होइत अछि।

‘सावन-छाँह’क उपमा मायक निरन्तर चिन्ताकेँ प्राकृतिक आश्रय बनबैत अछि। अन्तक ‘जीवनक कोमल पाँखि’ स्मृतिसँ प्राप्त रूपक अछि; रचनाक सर्वाधिक मार्मिक पक्ष काजक विस्तारमे अछि।

कविता-गीत 128 — अमृत पुत्री

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 12 काव्य-पाँति ।

‘अमृत पुत्री’ स्त्री-वक्ताक प्रथम पुरुष आत्मप्रतिज्ञा अछि । ‘हम अमृत पुत्री’क आवर्तनक बिना सेहो रचनाक ‘अडिग संकल्पित’ भाषा कर्तृत्व आ सामाजिक सेवा केन्द्रमे रखैत अछि ।

कीर्ति, श्रम, दीन-दुखीक साथ आ लोकहितक प्रतिज्ञा स्त्रीकें परिवारक निष्क्रिय प्रतीकक बदला सार्वजनिक नैतिक कर्ता बनबैत अछि । रूपक परिचित अछि, मुदा वक्ताक लैङ्गिक आत्मघोषणा एकरा विशिष्ट स्थान दैत अछि ।

कविता-गीत 129 — हे नाह चल आगाँ

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 12 काव्य-पाँति ।

‘हे नाह चल आगाँ’ चन्द्रक किरण, आकाशगंगा, उकापतंग, समुद्र आ खेत-पोखरिक दृश्यसँ ब्रह्माण्डीय आ ग्रामीण भूगोल एक संग बनबैत अछि। ‘धरतीक गन्ध सनेस पठावै’ दूरक आकांक्षाकें स्थानीय स्मृतिसँ रोकैत नहि, जोड़ैत अछि।

‘दूर दिगन्तक दुआर’ प्रेरक साहित्यक परिचित रूपक अछि, मुदा गामक इन्द्रियबोध एकरा ठोस धरातल दैत अछि। ‘नाह’क सम्बोधनक सम्भावित अर्थ पाठक सन्दर्भानुसार फरिछ करबाक आवश्यकता अछि।

कविता-गीत 130 — ध्येय पथिक साधक

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 14 काव्य-पाँति ।

‘ध्येय पथिक साधक’ उद्देश्य, सत्य, विनय आ लोकहितक क्रमबद्ध प्रतिज्ञाक गीत अछि। चन्द्र, तारा, सुरुजक उजास मानसिक साधनाक रूपक बनैत अछि, जखनकि ‘कागज-जहाज’ किशोर कल्पनाकें सम्पूर्ण अमूर्त उपदेशसँ अलग रखैत अछि।

कुमार्ग-असत्य-दर्पक निषेध आ देशहितक कर्मक स्वीकार ई गीतक नैतिक संरचना अछि। मुदा बारम्बार प्रतिज्ञा नब दृश्य उत्पन्न नहि करैत; एकर बल सामूहिक घोषणात्मक पाठमे अछि, निजी सूक्ष्म अनुभवमे नहि।

कविता-गीत 131 — मेघ बरसि गेल

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 12 काव्य-पाँति ।

‘मेघ बरसि गेल’ कृषकक प्रसन्नता, बीआ बाउग, हर-जोत, कादो-भिजल पएर आ रोपनी-गीतक क्रममे वर्षाकेँ कृषि-प्रक्रियासँ जोड़ैत अछि। ‘धरतीक कोरा’क उपमा माटिक जीवित सम्बन्ध रचैत अछि।

‘बड़द चलल, श्रमक नोर झरल’ ऋतुक आनन्दक भीतर कठिन परिश्रमकेँ उपस्थित करैत अछि। एहि कारण गीत प्रकृतिक सौन्दर्यक मात्र चित्र नहि; उत्पादन, आशा आ सामूहिक लोकगानक कृषि-अनुभव बनैत अछि।

कविता-गीत 132 — स्वागतम

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 16 काव्य-पाँति ।

‘स्वागतम’ खुलल आँगन आ बिना भेदक स्वागतसँ आरम्भ होइत अछि ।
पाठ-पढ़ब, खेलब, काज करब आ पक्षीक स्वर—दैनिक सामूहिक जीवनक
संगठित दृश्य बनैत अछि ।

‘सभ स्वर मिलि कहए स्वागतम’ रचनाक प्रधान ध्वनि-बिम्ब अछि; प्रकृतिक
बहुस्वर मनुष्यक भिन्नता स्वीकारबाक रूपक बनैत अछि । ‘धीर बनू, वीर बनू’क
अन्तिम घोष आरम्भक सौम्य स्वागतकें साहसक सामूहिक प्रतिज्ञामे बदलैत
अछि ।

कविता-गीत 133 — बड़द करैए दाउन ने यौ

मूलपाठ : अकुलाइत सुर, खण्ड २; 15 काव्य-पाँति ।

‘बड़द करैए दाउन ने यौ’ जन्तु-पक्षीक हाँक, कामक निर्देश आ खरिहानक ध्वनि-संसारसँ बनल लोक-गीतात्मक रचना अछि। ‘हिर-हिर’, ‘ती-ती’, ‘चेहै-चेहै’, ‘कुत-कुत’क उच्चारण देह, काम आ लोक-स्वरकँ एक तालमे रखैत अछि।

एहि गीतक अर्थ एकरे ध्वनि-अभिनयमे अछि; एकरा सामान्य नीतिपाठमे बदलि देब मूल शिल्पकँ नष्ट करत। ‘बड़द करैए दाउन’क आवर्तन श्रमिक जीवनक खेत-रंगमंच रचैत अछि। संग्रहक अन्तमे ई ध्वनि पुनः लोकधरा दिस घुरबाक उल्लेखनीय समापन अछि।

समेकित साहित्यिक मूल्याङ्कन

दू खण्डक विधागत अन्तर

पहिल खण्डक गजलसभक केन्द्र किशोरक 'हम' आ ओकर निर्णय-प्रक्रिया अछि।

बाबी, चान मामा, कागजक नाव आ दादीक कथा सँ बनल कल्पनाक संसार क्रमशः मीतक सीमा, प्रश्नक साहस, पाठ-चयन, जालजगत, निन्न, पहिल कमाइ आ सार्वजनिक उत्तरदायित्व दिस बढ़ैत अछि। एकरा उमेरक यान्त्रिक क्रम नहि, बोधक विन्यासक रूपमे देखब अधिक उचित अछि।

दोसर खण्ड गीतक एकरूप संग्रह नहि, बल्कि कथात्मक पद्य, लोकगीतक ध्वन्यनुकरण, हास्य-प्रसङ्ग, संवाद, व्यंग्य आ सार्वजनिक विचारक समुच्चय अछि। 'ट्रेनक गाड़ी'क छुक-छुक लय, 'बौआ गेल सुनि'क गिनती, 'चिड़ियाखाना'क बहुस्वर आ 'बरखा गीत'क इन्द्रियानुभवक लय शिक्षामूलक रचनासभसँ भिन्न अछि।

बिम्ब, दृश्य आ ध्वन्यात्मक कारीगरी

कविताक प्रभाव ओहि बेर गहिराइत अछि जखन विचारक स्थानपर दृश्य अपन अर्थ खोलैत अछि। कागजक नाव, दादिक कथा, घिरनी, शीतलपाटी, मखान, मेघ, करघा, पानिक धार, विद्यालय आ आँगन—ई सभ शब्द केवल क्षेत्रीय पहिचान नहि, भावक वाहक बनैत अछि। 'छाहक करतब'मे प्रकाशक स्थिति बदलिते छाहक आकार बदलैत अछि; तकरा माध्यमसँ मोनक मानक प्रश्न उठैत अछि।

'कोइरीक कूकू'मे काऊँ, कूकू, क्वैटीक्विक सन ध्वनि रात्रिक लोक-श्रवण बनबैत अछि। 'बड़द करैए दाउन ने यौ'मे पशु-हँकार आ अपरिचित ध्वन्यात्मक शब्दक प्रधानता अर्थक सहज संप्रेषण घटा सकैत अछि, मुदा लोकध्वनिक प्रयोगक्षेत्र खोलैत अछि। नहि बुझल शब्दकें अनुमानसँ बदलि देनाइ आलोचनाक विश्वसनीयता घटा देत।

समकालीन अनुभव आ सामाजिक प्रश्न

‘एस.एम.एस.’क सहमत-असहमत विकल्प, ‘फैक्स’क प्रशासनिक विडम्बना, ‘मकड़ीक जाल’क प्रवास, ‘बेसी छुट्टी कम इसकूल’क भय-भित्तरक शैक्षिक संसार आ ‘दहेज’क विवाह-व्यापार अलग-अलग सामाजिक स्थिति खोलैत अछि। एहन पद्यक मूल्य एकल नीति-वाक्यसँ बेसी ओहि घटना-विन्यासमे अछि, जाहिमे पात्रक हित, बल, श्रम वा प्रतिष्ठा टकराइत अछि।

‘गाम’क स्मृति-नगर द्वन्द्व आ ‘बुच्ची-बाउ’क श्रमिक प्रवासक स्वर, स्थानीय साहित्यकें आधुनिक सार्वजनिक इतिहाससँ जोड़ैत अछि। लेखकक सामाजिक टिप्पणीकें स्वतन्त्र अभिलेखीय प्रमाणक विकल्प नहि मानल गेल अछि; कविता विचारक दस्तावेज भऽ सकैत अछि, मुदा इतिहासक अंतिम निर्णायक नहि।

हास्य, कथा-वक्र आ संक्षिप्त नाटकीयता

‘नोकर’, ‘फ्रैक्चर’, ‘चोरकें सिखाबह’, ‘जूताक आविष्कार’ आ ‘पाइ’मे संवादक उलटफेरसँ हास्य उपजैत अछि। एहि रचनासभमे पाठककें उत्तर पहिनेसँ नहि देल जाइत; प्रसङ्गक अन्तमे पात्रक भाषिक चाल वा श्रमक मूल्य अचानक बदलैत अछि। शिल्पक ई आकस्मिकता कतेको निर्देशात्मक समापनसँ बेसी स्थायी प्रभाव छोड़ैत अछि।

अनेक रचनामे कथा पूरा भेलाक बाद नीति-वाक्य स्पष्ट रूपसँ जोड़ल गेल अछि। ई किशोर पाठक लेल उपयोगी भऽ सकैत अछि, मुदा पाठकक स्वनिर्णयक क्षेत्र घटबैत अछि। आलोचनात्मक रूपसँ सबल पद्य ओ अछि जतय दृश्य स्वयं प्रश्न उठबैत अछि आ निष्कर्ष पाठकपर छोड़ि दैत अछि।

छन्द, रदीफ आ पाठान्तरक सीमा

पहिल खण्डक गजलमे घोषित बहर, मात्रा-क्रम, कल-क्रम, काफिया आ रदीफ पाठक औपचारिक परिचयक हिस्सा अछि। मुदा घोषणा मात्रसँ सम्पूर्ण उच्चारणाधारित बहर-सिद्धि नहि मानल जा सकैत अछि। पारम्परिक अरुज़, मैथिली उच्चारण-लय आ लिखित मात्रिक गणना अलग-अलग परीक्षण चाहैत अछि।

निकट रचनाक शब्द, शेर-विन्यास आ रदीफक अन्तर वास्तविक काव्य-परिवर्तन होइत अछि कि केवल पुनर्प्रस्तुति, एहि प्रश्नक उत्तर रचनावार पाठसँ देबाक अछि। साझा गजलसभकेँ 'दीवान-ए-विदेह' आ 'अकुलाइत सुर'मे दू स्वतंत्र मूल रचना मानि संख्या नहि बढ़ाओल गेल अछि।

ज्ञान, नैतिकता आ पाठकीय स्वतन्त्रता

'की? किए? कोना? के?'क प्रश्न-क्रम वैज्ञानिक जिज्ञासा जगबैत अछि; 'बादुर सोंस'मे ध्वनिक आधारपर दिशा पहचानबाक लोक-शिक्षा अछि; 'अंध विश्वास'मे मन्दार पर्वतक चिह्नक वैकल्पिक व्याख्या अछि। ई पद्य प्रश्न करबाक संस्कार दैत अछि, मुदा वैज्ञानिक उपकरण, प्रतिध्वनि वा पुराण-सन्दर्भक तकनीकी दावे ओकर अपन विधागत सीमा राखैत अछि।

बाल-किशोर स्वरक सबल रूप आदेश मानब मात्र नहि; शंका करब, मीतक दबाव नहि मानब, सहायता माँगब, असफलताक पाछाँ मार्ग बदलब आ आनक सम्मान बचाएब सेहो अछि। एहि संग्रहक शिक्षात्मक मूल्य तखने साहित्यिक बल पबैत अछि जखन नैतिक संदेश अनुभवक भीतर सँ निकलैत अछि।

निष्कर्ष

'अकुलाइत सुर'क दुनू खण्ड मैथिलीमे किशोरक स्वप्न, शिक्षण-संस्कृति, घर-गामक स्मृति, लोक-ध्वनि आ समकालीन जीवनक प्रश्नकेँ एक संग स्थान देबाक व्यापक प्रयास अछि। पहिल खण्डक अनुशासित गजल-प्रयास आ दोसर खण्डक विधा-विविधता परस्पर पूरक अछि, एकरूप नहि। संग्रहक प्रधान शक्ति स्थानीय अनुभवक बहुलता, संवादक त्वरित हास्य आ किशोरक आत्मनिर्णयक आग्रह अछि।

प्रमुख सीमामे रदीफ-आधारित पुनरावृत्ति, कतिपय शिक्षात्मक समापनक अतिव्याख्या, विषयगत अकस्मात संक्रमण आ छन्द्रीय दावाक स्वतन्त्र उच्चारण-परीक्षाक आवश्यकता उल्लेखनीय अछि। एहि सीमा स्वीकार कएलासँ

संग्रहक रचनात्मक उपलब्धि नहि घटैत; बल्कि ओकर सजीव पाठकीय
मूल्यांकनक आधार बेसी दृढ होइत अछि।

ग्रन्थाधार

गजेन्द्र ठाकुर। अकुलाइत सुर। खण्ड १ — किशोर गजल; खण्ड २ — कविता-
गीत। संयुक्त मूल मैथिली Word पाण्डुलिपि, २०२६।

गजेन्द्र ठाकुर। दीवान-ए-विदेह। खण्ड १, गजल ४५९-५९१। मूल मैथिली
Word पाण्डुलिपि, २०२६।

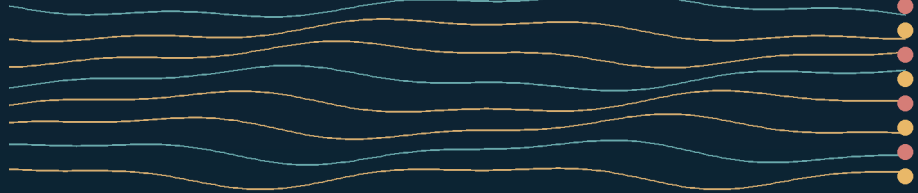
अकुलाइत सुर

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय — खण्ड २४

‘अकुलाइत सुर’क पहिल खण्डक १३३ किशोर गजल
बाल-कल्पना सँ प्रश्न, मीतता, परीक्षा, जालजगत
आ आत्मनिर्णय धरि एकटा काव्य-यात्रा रचैत अछि।

दोसर खण्डक १३३ कविता-गीतमे मिथिलाक लोकध्वनि,
हास्य, सामाजिक व्यंग्य, प्रवास, श्रम, पानि, प्रकृति
आ परिवारक बहुविध अनुभव सजीव अछि।

ई समालोचनामे २६६ रचनाक स्वतंत्र पाठ-परीक्षण,
शिल्पगत उपलब्धि, छन्द-विधान, पाठान्तर,
पुनरावृत्ति आ सीमाक समेकित मूल्याङ्कन अछि।



विदेहक मूल साहित्य आ डिजिटल संग्रह

विदेह



www.videha.co.in

गिटहब संग्रह



videha-ejournal.github.io